

SKPF-Wincompete Test Series 2026

पाठ्य सामग्री -राजस्थान का आधुनिक इतिहास

टेस्ट 02 - राजस्थान इतिहास (आधुनिक)

19वीं-20वीं सदी में सामाजिक जागृति के कारक

अध्याय 1: सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण के प्रेरक तत्व एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की भूमिका

1. आधुनिक राजस्थान में सामाजिक जागृति की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजस्थान का समाज अनेक कुरुतियों, रूढ़िवादिता और अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था। 1818 ई. की संधियों के पश्चात अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव और सामंती व्यवस्था के स्वरूप में आए बदलाव ने नवीन चेतना का मार्ग प्रशस्त किया।

सामाजिक जागृति के प्रमुख कारक:

- **पश्चिमी शिक्षा का प्रसार:** अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से राजस्थान के युवाओं का परिचय उदारवाद, लोकतंत्र और समानता के वैश्विक विचारों से हुआ। अजमेर (मेयो कॉलेज) इस शिक्षा का प्रमुख केंद्र बना।
- **समाचार पत्रों एवं साहित्य की भूमिका:** राजस्थान में मुद्रण कला के आगमन से विचारों का आदान-प्रदान सुलभ हुआ। सूर्यमल्ल मीसण की 'वीर सतसई' और 'वंश भास्कर' ने सोई हुई चेतना को जगाया।
- **ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ:** मिशनरियों द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों ने स्थानीय धर्मावलंबियों को अपने धर्म में सुधार हेतु प्रेरित किया (प्रतिक्रियात्मक सुधार)।
- **ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियाँ:** सती प्रथा, कन्या वध और दास प्रथा पर ब्रिटिश दबाव में लगाए गए प्रतिबंधों ने समाज में यह संदेश दिया कि सामाजिक बदलाव संभव है।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती: राजस्थान में पुनर्जागरण के अग्रदूत

महर्षि दयानन्द सरस्वती राजस्थान में सामाजिक और वैचारिक क्रांति के सबसे बड़े सूत्रधार माने जाते हैं। उन्होंने राजस्थान की रियासतों में 'स्वधर्म', 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' का मंत्र फूँका।

राजस्थान की प्रमुख यात्राएं:

1. **करौली (1865 ई.):** महर्षि दयानन्द सरस्वती का राजस्थान में प्रथम आगमन जून 1865 में करौली राज्य में हुआ। यहाँ उन्हें राजकीय अतिथि के रूप में सम्मान मिला।
2. **भरतपुर एवं जयपुर (1881 ई.):** उन्होंने यहाँ वैदिक धर्म का प्रचार किया और मूर्ति पूजा व आडंबरों का विरोध किया।
3. **उदयपुर (1882 ई.):** महाराणा सज्जन सिंह के निमंत्रण पर वे उदयपुर आए। यहाँ उन्होंने अपने कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण का अधिकांश भाग लिखा।
4. **जोधपुर (1883 ई.):** महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय के समय वे जोधपुर पहुँचे। यहाँ नन्हीं जान नामक गणिका के विरोध और षड्यंत्र के कारण उन्हें विष दिया गया।

3. आर्य समाज और परोपकारिणी सभा

दयानन्द सरस्वती के विचारों को संस्थागत रूप देने के लिए राजस्थान में कई संस्थाएं स्थापित हुईं।

- **आर्य समाज की स्थापना:** राजस्थान में आर्य समाज की पहली शाखा **1881 ई. में अजमेर** में स्थापित हुई। इसने शिक्षा, महिला अधिकार और दलितों के उत्थान (शुद्धि आंदोलन) के लिए कार्य किया।
- **परोपकारिणी सभा (1883 ई.):** महर्षि ने अपने परोपकारी कार्यों और वसीयत को क्रियान्वित करने हेतु उदयपुर में इसकी स्थापना की। महाराणा **सज्जन सिंह** इसके प्रथम अध्यक्ष बनाए गए। 1883 में ही अजमेर में इसका पंजीकरण हुआ।

4. सामाजिक सुधार बनाम राजनीतिक चेतना

राजस्थान में 19वीं सदी का पुनर्जागरण केवल धार्मिक सुधारों तक सीमित नहीं था। दयानन्द सरस्वती ने 'स्वदेशी' और 'स्वधर्म' की जो व्याख्या की, उसने परोक्ष रूप से ब्रिटिश शासन की श्रेष्ठता को चुनौती दी। जब उन्होंने कहा कि "बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बेहतर है", तो उन्होंने राजस्थान के सामंतों और जनता में 'स्वराज्य' की पहली बीज-शक्ति बोई। यही सामाजिक जागृति आगे चलकर प्रजामंडल और किसान आंदोलनों का आधार बनी।

5. महत्वपूर्ण (Important Notes)

- **नोट (सत्यार्थ प्रकाश):** सत्यार्थ प्रकाश की रचना मूलतः उदयपुर में पूर्ण हुई, लेकिन इसका प्रथम प्रकाशन **अजमेर** से हुआ था।
- **नोट (आगमन तिथि):** कुछ स्तर-3 की पुस्तकों में करौली आगमन 1866 बताया गया है, परंतु **स्तर-1 (डॉ. गोपीनाथ शर्मा)** के अनुसार आधिकारिक तिथि **जून 1865** ही मान्य है।
- **निर्वाण:** महर्षि दयानन्द सरस्वती का देहावसान **30 अक्टूबर 1883 (दीपावली के दिन)** अजमेर में हुआ।

6. प्रमुख सुधारक एवं उनकी संस्थाएं (सारणी)

सुधारक / कवि	संस्था / योगदान	मुख्य क्षेत्र
महर्षि दयानन्द सरस्वती	परोपकारिणी सभा, आर्य समाज	अजमेर, उदयपुर
सूर्यमल्ल मीसण	'वंश भास्कर', 'वीर सतसई'	बूंदी (चारण साहित्य)
गोविंद गिरी	संप सभा (1883)	सिरोही, डूंगरपुर (भील उत्थान)
स्वामी विवेकानंद	खेतड़ी प्रवास (अजीत सिंह के समय)	झुंझुनू (वेदांत प्रचार)

wincompete



wincompete

अध्याय 2: राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव और शैक्षणिक विकास

1. आर्य समाज: राजस्थान में वैचारिक क्रांति का आधार

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जब राजस्थान का समाज सामंती जकड़न और औपनिवेशिक दबाव के बीच संघर्ष कर रहा था, तब **आर्य समाज** ने एक शक्तिशाली वैचारिक विकल्प प्रस्तुत किया। ब्रह्म समाज (बंगाल) की तुलना में आर्य समाज राजस्थान में अधिक सफल रहा, क्योंकि इसका आधार 'वेदों की ओर लौटो' का नारा था, जो यहाँ की सांस्कृतिक जड़ों के अनुकूल था।

प्रसार के प्रमुख केंद्र:

- **अजमेर:** यह राजस्थान में आर्य समाज का **मुख्यालय** बना। 1881 में यहाँ पहली शाखा खुली। अजमेर की राजनीतिक स्थिति (केंद्र शासित प्रदेश) ने इसे स्वतंत्र वैचारिक गतिविधियों के लिए उपयुक्त बनाया।
- **जोधपुर:** महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय के काल में यह मारवाड़ में चेतना का केंद्र बना।
- **उदयपुर:** महाराणा सज्जन सिंह ने 'परोपकारिणी सभा' के माध्यम से इसे संरक्षण दिया।

2. शैक्षणिक पुनर्जागरण (Educational Renaissance)

आर्य समाज ने माना कि अज्ञानता ही गुलामी और सामाजिक बुराइयों की जड़ है। अतः उन्होंने राजस्थान में **वैदिक शिक्षा** और **आधुनिक शिक्षा** के समन्वय पर बल दिया।

A. शिक्षण संस्थाओं की स्थापना:

- **दयानन्द एंग्लो-वैदिक (DAV) शिक्षण:** अजमेर में **डी.ए.वी. स्कूल** की स्थापना की गई। इन संस्थाओं का उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना और चरित्र निर्माण करना था।
- **स्त्री शिक्षा (Women's Education):** आर्य समाज ने राजस्थान में महिला शिक्षा की नींव रखी। अजमेर में आर्य समाज द्वारा **प्रथम कन्या पाठशाला** खोली गई। उन्होंने इस विचार का खंडन किया कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है।
- **दलित शिक्षा (Dalit Education):** शुद्धि आंदोलन के साथ-साथ आर्य समाज ने पिछड़ी जातियों के लिए पाठशालाएं खोलीं, जो उस समय के सामंती समाज में एक क्रांतिकारी कदम था।

3. हरविलास शारदा और 'शारदा एक्ट' (1929)

आर्य समाज के सबसे महत्वपूर्ण बौद्धिक स्तंभों में से एक अजमेर के **हरविलास शारदा** थे। उनकी उपलब्धियां राजस्थान के सामाजिक इतिहास में मील का पत्थर हैं।

- **बाल विवाह निरोधक अधिनियम:** हरविलास शारदा के प्रयासों से **1929** में केंद्रीय असेंबली में 'बाल विवाह निरोधक अधिनियम' पारित हुआ, जिसे दुनिया भर में '**शारदा एक्ट**' के नाम से जाना जाता है।
- **महत्व:** इस कानून ने विवाह के लिए लड़कों की न्यूनतम आयु **18 वर्ष** और लड़कियों की **14 वर्ष** निर्धारित की। यह राजस्थान की सामाजिक बुराइयों पर पहला बड़ा कानूनी प्रहार था।
- **साहित्यिक योगदान:** उन्होंने 'हिंदू सुपीरियरिटी' (Hindu Superiority) नामक पुस्तक लिखी, जिसने भारतीयों में हीनभावना को समाप्त कर सांस्कृतिक आत्मविश्वास जगाया।

4. शुद्धि आंदोलन और सामाजिक एकता

आर्य समाज ने उन लोगों को पुनः हिंदू धर्म में लाने के लिए '**शुद्धि आंदोलन**' चलाया, जो किसी कारणवश धर्म परिवर्तन कर चुके थे।

- **प्रभाव:** राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों (विशेषकर मेवात और मारवाड़ के कुछ हिस्सों) में इसका व्यापक प्रभाव पड़ा।
- **जाति प्रथा का विरोध:** स्वामी दयानन्द ने 'जन्म' के बजाय 'कर्म' पर आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया, जिससे समाज के दबे-कुचले वर्गों में आत्मसम्मान की भावना जागी।

5. शैक्षणिक विकास और राजनीतिक चेतना का अंतर्संबंध

आर्य समाज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाएं केवल अक्षर ज्ञान के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे 'स्वराज्य' की पाठशालाएं थीं। इन स्कूलों से निकले विद्यार्थियों ने आगे चलकर **प्रजामंडल आंदोलनों** में नेतृत्व प्रदान किया। अजमेर का आर्य समाज उत्तर भारत के क्रांतिकारियों (जैसे रासबिहारी बोस और अर्जुन लाल सेठी) के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल और वैचारिक खाद-पानी बना। इस प्रकार, शैक्षणिक विकास ने सीधे तौर पर राजनीतिक स्वतंत्रता के मार्ग को प्रशस्त किया।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **नोट (परोपकारिणी सभा का स्थान):** यद्यपि परोपकारिणी सभा की स्थापना **उदयपुर (1883)** में हुई थी, लेकिन स्वामी जी की मृत्यु के बाद इसका मुख्यालय **अजमेर** स्थानांतरित कर दिया गया था।
- **तथ्य:** स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अजमेर में '**वैदिक यंत्रालय**' (Vedic Press) की स्थापना की थी ताकि वैदिक साहित्य और 'सत्यार्थ प्रकाश' का मुद्रण सुलभ हो सके।
- **महत्वपूर्ण व्यक्तित्व:** चाँदकरण शारदा ने 'दलितोद्धार' के क्षेत्र में अजमेर में अभूतपूर्व कार्य किया।

7. आर्य समाज का प्रभाव: एक नजर में (तालिका)

क्षेत्र	प्रमुख प्रभाव / उपलब्धि
शिक्षा	डी.ए.वी. स्कूलों और वैदिक पाठशालाओं की श्रृंखला।
महिला उत्थान	विधवा विवाह का समर्थन और बाल विवाह का विरोध (शारदा एक्ट)।
साहित्य	सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार और वैदिक यंत्रालय की स्थापना।
राजनीति	युवाओं में 'स्वदेशी' और 'स्वधर्म' के प्रति चेतना का संचार।

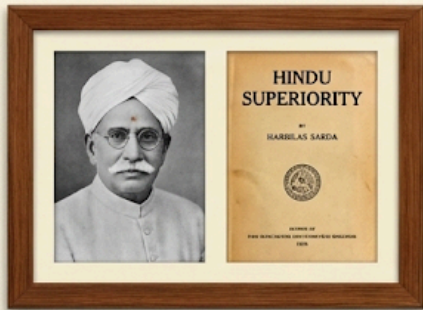
wincompete



D.A.V. SCHOOL & KANYA PATHSHALA, AJMER (Late 19th C.)
First centers of Vedic-Modern education and women's empowerment in Rajasthan.



THE CHILD MARRIAGE RESTRAINT ACT ("SHARDA ACT"), 1929
Architect: Harbilas Sarda of Ajmer.
Fixed minimum age: Boys 18, Girls 14.



HARBILAS SARDA (1867-1955)
Arya Samaj Leader & Author of 'Hindu Superiority', instilling cultural confidence.



VEDIC YANTRALAYA (VEDIC PRESS), AJMER
Established by Dayanand Saraswati to print 'Satyarth Prakash' and reformist literature.

wincompete

अध्याय 3: राजस्थान में पाश्चात्य शिक्षा का आगमन और मेयो कॉलेज की भूमिका

1. राजस्थान में पारंपरिक शिक्षा बनाम पाश्चात्य शिक्षा

19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक राजस्थान में शिक्षा का स्वरूप धार्मिक और पारंपरिक था। हिंदुओं के लिए **पाठशालाएं** और मुसलमानों के लिए **मकतब व मदरसे** संचालित थे।

- **परिवर्तन का आधार:** 1818 की संधियों के बाद अंग्रेजों को प्रशासनिक कार्यों के लिए अंग्रेजी जानने वाले बाबूओं और शिक्षित वर्ग की आवश्यकता हुई। साथ ही, पाश्चात्य शिक्षा को 'सभ्यता के प्रसार' के साधन के रूप में देखा गया।

2. पाश्चात्य शिक्षा के प्रारंभिक प्रयास

राजस्थान में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात **अजमेर** से हुआ, क्योंकि यह सीधा ब्रिटिश नियंत्रण (चीफ कमिश्नर प्रांत) में था।

A. ईसाई मिशनरियों का योगदान:

- **1819 ई.:** जैबज कैरी (Jabez Carey) ने अजमेर में प्रथम आधुनिक स्कूल खोला।
- **उद्देश्य:** मिशनरियों का प्राथमिक उद्देश्य धर्म प्रचार था, लेकिन उनके द्वारा स्थापित स्कूलों ने आधुनिक विज्ञान और अंग्रेजी भाषा की नींव रखी।

B. सरकारी प्रयास:

- **1836 ई.:** अजमेर में 'अजमेर गवर्नमेंट स्कूल' की स्थापना हुई, जहाँ पहली बार आधिकारिक तौर पर अंग्रेजी शिक्षा प्रारंभ की गई।
- **रियासतों में प्रसार:** * **अलवर (1842):** महाराजा विनय सिंह ने पाश्चात्य शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।
 - **जयपुर (1844):** महाराजा रामसिंह द्वितीय ने '**महाराजा कॉलेज**' की स्थापना की, जो बाद में राजस्थान में उच्च शिक्षा का प्रमुख केंद्र बना।
 - **भरतपुर (1858):** यहाँ भी पाश्चात्य पद्धति के स्कूल खोले गए।

3. मेयो कॉलेज (Mayo College), अजमेर: 'पूर्व का ईटन'

मेयो कॉलेज की स्थापना राजस्थान के इतिहास में एक युगांतकारी घटना थी। इसे भारतीय रियासतों के राजकुमारों और सामंतों के पुत्रों को 'ब्रिटिश सांचे' में ढालने के लिए बनाया गया था।

स्थापना की पृष्ठभूमि:

- **विचार:** लॉर्ड मेयो ने 1870 के **अजमेर दरबार** में राजकुमारों के लिए एक विशेष कॉलेज का विचार रखा।
- **वित्तीय सहयोग:** इसके निर्माण के लिए राजस्थान के राजाओं ने स्वेच्छा से चंदा दिया। सर्वाधिक योगदान **जयपुर और झालावाड़** रियासतों का था।
- **प्रारंभ (1875 ई.):** इसकी औपचारिक शुरुआत 1875 में हुई। इसके प्रथम प्राचार्य **सर ओलिवर सेंट जॉन** थे।

राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव:

- **वफादार वर्ग का निर्माण:** अंग्रेजों का उद्देश्य एक ऐसा शिक्षित राजपूत वर्ग तैयार करना था जो ब्रिटिश शासन का समर्थक और वफादार बना रहे।
- **जीवनशैली में बदलाव:** यहाँ पढ़ने वाले राजकुमारों ने पाश्चात्य वेशभूषा, खेल (पोलो, क्रिकेट) और प्रशासनिक तौर-तरीकों को अपनाया।
- **परिणाम:** यद्यपि इसका उद्देश्य ब्रिटिश समर्थक तैयार करना था, परंतु यहाँ शिक्षित कई युवाओं ने कालांतर में अपनी रियासतों में प्रशासनिक सुधार (Administrative Reforms) किए।

4. पाश्चात्य शिक्षा का सामाजिक प्रभाव (Impact)

पाश्चात्य शिक्षा ने राजस्थान के रूढ़िवादी समाज में एक 'वैचारिक हलचल' पैदा की।

1. **मध्यम वर्ग का उदय:** शिक्षा के प्रसार से वकील, शिक्षक और प्रशासनिक अधिकारियों का एक नया 'मध्यम वर्ग' उभरा। यह वर्ग ही आगे चलकर **राजनैतिक जनजागरण** का अगुआ बना।
2. **कुप्रथाओं पर प्रहार:** शिक्षित वर्ग ने सती प्रथा, कन्या वध और बाल विवाह जैसी प्रथाओं को तर्क की कसौटी पर परखा और उनके उन्मूलन की मांग की।
3. **उदारवादी विचार:** स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (French Revolution के आदर्श) जैसे शब्द राजस्थान के बुद्धिजीवियों की शब्दावली का हिस्सा बने।

5. पाश्चात्य शिक्षा का विरोधाभास

अंग्रेजों ने पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार 'मानसिक गुलामी' और 'प्रशासनिक सुगमता' के लिए किया था। परंतु, यह शिक्षा राजस्थान के लिए 'दुधारी तलवार' सिद्ध हुई। एक ओर इसने मेयो कॉलेज के माध्यम से एक अभिजात्य ब्रिटिश समर्थक वर्ग पैदा किया, तो दूसरी ओर इसी शिक्षा ने **अर्जुन लाल सेठी, जयनारायण व्यास और हीरालाल शास्त्री** जैसे नेतृत्वकर्ता भी पैदा किए, जिन्होंने पाश्चात्य लोकतांत्रिक मूल्यों का उपयोग ब्रिटिश और सामंती शासन को उखाड़ने के लिए किया।

6. महत्वपूर्ण तथ्य Important Notes)

- **तथ्य:** मेयो कॉलेज के प्रथम छात्र **अलवर के महाराजा मंगल सिंह** थे।
- **शिक्षा विभाग:** राजस्थान की रियासतों में शिक्षा को व्यवस्थित करने के लिए सबसे पहले **जयपुर (1867)** में एक पृथक शिक्षा विभाग बनाया गया।
- **स्त्री शिक्षा:** पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में **1866 ई.** में पुष्कर (अजमेर) में कन्या विद्यालय खोला गया, जिसे स्त्री शिक्षा की दिशा में प्रारंभिक कदम माना जाता है।
- **नोट:** कर्नल डिक्सन ने अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र में शिक्षा और सुधारों के लिए विशेष प्रयास किए थे।
-

7. आधुनिक शिक्षा के प्रमुख मील के पत्थर (तालिका)

वर्ष	संस्थान / घटना	स्थान	महत्व
1819	प्रथम आधुनिक स्कूल	अजमेर	मिशनरी जैबज कैरी द्वारा।
1836	राजकीय अंग्रेजी स्कूल	अजमेर	सरकारी स्तर पर अंग्रेजी शिक्षा का प्रारंभ।
1844	महाराजा कॉलेज	जयपुर	उच्च शिक्षा का प्रसार।
1875	मेयो कॉलेज	अजमेर	राजकुमारों की शिक्षा हेतु।

wincompete

1888

अजमेर कॉलेज (गवर्नमेंट कॉलेज)

अजमेर

राजस्थान का प्रथम डिग्री कॉलेज।



wincomplete

अध्याय 4: राजस्थान में समाचार पत्रों का उदय और राजनैतिक चेतना में भूमिका

1. राजस्थान में पत्रकारिता का उदय: प्रारंभिक चरण

19वीं शताब्दी के मध्य तक राजस्थान में सूचनाओं का आदान-प्रदान मौखिक या राजकीय पत्रों (परवानों) के माध्यम से होता था। मुद्रण कला (Printing Press) के आगमन ने यहाँ जनमत निर्माण की प्रक्रिया को बदल दिया।

- **मजहरुल सरूर (Mazharul Saroor - 1849):** यह राजस्थान का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है। यह भरतपुर से प्रकाशित हुआ था। यह द्विभाषी (हिंदी और उर्दू) पत्र था। यद्यपि यह सरकारी संरक्षण में था, लेकिन इसने सूचनाओं के प्रसार की नींव रखी।
- **राजपूताना गजट (1882):** मौलवी मुराद अली 'बीमार' द्वारा अजमेर से प्रकाशित। इसने रियासती प्रशासन की कमियों और जनता की शिकायतों को स्वर देना प्रारंभ किया।

2. राजनैतिक जागृति और सक्रिय पत्रकारिता (1920-1940)

20वीं सदी के प्रारंभ में समाचार पत्र केवल सूचना के साधन नहीं रहे, बल्कि वे ब्रिटिश सत्ता और सामंती दमन के विरुद्ध 'हथियार' बन गए।

A. राजस्थान केसरी (Rajasthan Kesari - 1920)

- **प्रकाशन स्थल:** वर्धा (महाराष्ट्र)।
- **संपादक:** विजय सिंह पथिक।
- **वित्तीय सहायता:** सेठ जमनालाल बजाज।
- **भूमिका:** इसका मुख्य उद्देश्य बिजोलिया किसान आंदोलन को देशव्यापी पहचान दिलाना था। इसने किसानों पर हो रहे अत्याचारों को निर्भीकता से प्रकाशित किया।

B. नवीन राजस्थान एवं तरुण राजस्थान

- **नवीन राजस्थान (1922):** अजमेर से राजस्थान सेवा संघ द्वारा प्रकाशित। विजय सिंह पथिक इसके मुख्य सूत्रधार थे। जब सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया, तो इसका नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' (1923) कर दिया गया।
- **भूमिका:** इन पत्रों ने बूँ, बूँदी और सिरोही के किसान आंदोलनों में चेतना जगाई। जयनारायण व्यास ने भी ब्यावर से 'तरुण राजस्थान' का संपादन कर मारवाड़ की जनता को जागृत किया।

3. अन्य महत्वपूर्ण समाचार पत्र एवं संपादक

राजस्थान की रियासतों में स्थानीय समस्याओं को उठाने के लिए कई अन्य पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई:

1. **त्याग भूमि (Tyag Bhumi):** अजमेर से हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा प्रकाशित। इसने गांधीवादी विचारों और सामाजिक सुधारों (जैसे खादी, छुआछूत निवारण) पर विशेष बल दिया।
2. **प्रताप (Pratap):** यद्यपि यह कानपुर से प्रकाशित होता था और इसके संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी थे, लेकिन बिजोलिया आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित करने में इसकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही।
3. **आगीबाण (Agiban):** जयनारायण व्यास द्वारा ब्यावर से राजस्थानी भाषा में प्रकाशित प्रथम राजनैतिक समाचार पत्र।
4. **रियासती (Riyasati):** सुमनेश जोशी द्वारा जोधपुर से प्रकाशित। इसने एकीकरण के समय जोधपुर के पाकिस्तान में मिलने के षड्यंत्र का पर्दाफाश किया था।

4. समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण

प्रेस की शक्ति और दमन का चक्र

राजस्थान में समाचार पत्रों ने 'निर्भीक विपक्ष' की भूमिका निभाई। इन्होंने केवल ब्रिटिश विरोधी वातावरण ही नहीं बनाया, बल्कि राजाओं और जागीरदारों के मध्य व्याप्त भ्रष्टाचार और 'लाग-बाग' (अवैध करों) के विरुद्ध किसानों को संगठित किया। यही कारण था कि अधिकांश समाचार पत्रों को रियासतों में प्रवेश से प्रतिबंधित कर दिया गया था (जैसे 'प्रताप' का मेवाड़ में प्रवेश प्रतिबंधित था)। इन बाधाओं के बावजूद, गुप्त रूप से बांटे जाने वाले इन पत्रों ने राजस्थान में 'प्रजामंडल' आंदोलनों के लिए वैचारिक आधार तैयार किया।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** राजपूताना गजट (1885) के संपादक **मौलवी मुराद अली** को उनकी निर्भीक पत्रकारिता के कारण कारावास भी भोगना पड़ा था।
- **नोट:** राजस्थान का प्रथम साप्ताहिक पत्र 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' (1876) उदयपुर से महाराणा सज्जन सिंह के काल में प्रकाशित हुआ था, जो मुख्य रूप से एक सरकारी गजट के समान था।
- **महत्वपूर्ण व्यक्तित्व:** रामनारायण चौधरी और शोभालाल गुप्त ने 'तरुण राजस्थान' के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पत्रकारिता को पहुंचाया।

6. प्रमुख समाचार पत्र एवं उनके संपादक (त्वरित संदर्भ तालिका)

समाचार पत्र	वर्ष	स्थान	संपादक / प्रकाशक
मजहरुल सरूर	1849	भरतपुर	(द्विभाषी - प्रथम पत्र)
सज्जन कीर्ति सुधाकर	1876	उदयपुर	महाराणा सज्जन सिंह
राजपूताना गजट	1885	अजमेर	मौलवी मुराद अली
राजस्थान केसरी	1920	वर्धा	विजय सिंह पथिक
नवीन राजस्थान	1922	अजमेर	विजय सिंह पथिक
त्याग भूमि	1927	अजमेर	हरिभाऊ उपाध्याय
आगीबाण	1932	ब्यावर	जयनारायण व्यास

wincompete



RAJPUTANA GAZETTE (Ajmer, 1885).
Editor: Maulvi Murad Ali 'Bimar'.
Early critic of administration.



VIJAY SINGH PATHIK.
Editor: Rajasthan Kesari & Tarun Rajasthan.
Key figure in political awakening.



RAJASTHAN KESARI (Wardha, 1920).
Backed by Jammalal Bajaj.
Highlighted feudal atrocities.



PRATAP (Kanpur).
Editor: Ganesh Shankar Vidyarthi.
Brought national attention to Bijolia Movement.



AGIBAN (Beawar, 1932).
Editor: Jalnarayan Vyas.
First political paper in Rajasthan language.

wincompete

अध्याय 5: सामाजिक जागृति में महत्वपूर्ण संस्थाओं की भूमिका

1. संस्थागत प्रयासों का महत्व

राजस्थान में व्यक्तिगत सुधारों (जैसे दयानन्द सरस्वती या विजय सिंह पथिक के प्रयास) को स्थायी और व्यापक बनाने के लिए 'संस्थाओं' की स्थापना अनिवार्य थी। इन संस्थाओं ने बिखरे हुए जनमत को एक मंच प्रदान किया और शासकों व ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक संगठित मोर्चा तैयार किया।

2. परोपकारिणी सभा (Paropkarini Sabha) - 1883

यह राजस्थान की पहली प्रमुख संस्था थी जिसने सामाजिक और धार्मिक सुधारों को वैधानिक स्वरूप दिया।

- **स्थापना:** फरवरी 1883, उदयपुर।
- **संस्थापक:** महर्षि दयानन्द सरस्वती।
- **अध्यक्ष:** मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह।
- **उद्देश्य:** स्वामी दयानन्द के कार्यों को उनकी मृत्यु के बाद जारी रखना, वैदिक साहित्य का प्रकाशन करना और अनाथों व विधवाओं की सहायता करना।
- **प्रभाव:** इस सभा ने राजस्थान के राजपूत शासकों को अपनी जीवनशैली सुधारने और शिक्षा की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। 1883 में ही इसका पंजीकरण अजमेर में हुआ, जो बाद में इसका मुख्य केंद्र बना।

3. संप सभा (Samp Sabha) - 1883

संप सभा का अर्थ है—'परस्पर एकता और प्रेम'। यह जनजातीय (भील-गरासिया) समाज में चेतना लाने वाली सबसे शक्तिशाली संस्था थी।

- **स्थापना:** 1883, सिरोही।
- **संस्थापक:** गोविंद गिरी।
- **कार्यप्रणाली:** गोविंद गिरी ने भील समाज में व्याप्त शराबखोरी, चोरी और कुप्रथाओं को दूर करने के लिए 'दश नियम' बनाए।
- **सामाजिक प्रभाव:** संप सभा ने भीलों को 'बेगार' (बिना मजदूरी काम) करने से मना करने के लिए संगठित किया। 1903 से मानगढ़ पहाड़ी पर इसके वार्षिक अधिवेशन होने लगे।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** इसी संस्था के माध्यम से भीलों में जो जागृति आई, वह आगे चलकर मानगढ़ नरसंहार (1913) और 'भगत आंदोलन' का आधार बनी।

4. राजस्थान सेवा संघ (Rajasthan Seva Sangh) - 1919

यह राजस्थान की सबसे सक्रिय और राजनैतिक रूप से सजग संस्था थी जिसने सामंती अत्याचारों की चूलें हिला दीं।

- **स्थापना:** 1919, वर्धा (महाराष्ट्र)।
- **स्थानांतरण:** 1920 में इसका मुख्यालय अजमेर लाया गया।
- **प्रमुख सूत्रधार:** विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर।
- **उद्देश्य:** जागीरदारों और किसानों के बीच विवादों को सुलझाना, प्रशासन की कमियों को उजागर करना और जनता में निर्भिकता पैदा करना।
- **विशेष उपलब्धि:** बिजोलिया और बेगूँ किसान आंदोलनों का सफल संचालन इसी संघ के मार्गदर्शन में हुआ। इसने 'नवीन राजस्थान' और 'तरुण राजस्थान' जैसे पत्रों के माध्यम से जनजागरण किया।

5. अन्य महत्वपूर्ण चेतना केंद्र

- **वर्धमान पाठशाला (1907):** जयपुर में अर्जुन लाल सेठी द्वारा स्थापित। यह क्रांतिकारियों को तैयार करने का गुप्त केंद्र थी।
- **मारवाड़ हितकारिणी सभा (1923):** जोधपुर में जयनारायण व्यास द्वारा पुनर्गठित। इसने मारवाड़ में उत्तरदायी शासन की मांग की।

- **वागड़ सेवा मंदिर:** भोगीलाल पांड्या द्वारा डूंगरपुर क्षेत्र में शिक्षा और दलित उद्धार के लिए स्थापित।

6. सभाओं का सामाजिक से राजनैतिक परिवर्तन

राजस्थान में संस्थाओं के विकास का एक निश्चित क्रम मिलता है। 1883 में स्थापित परोपकारिणी सभा और संप सभा का स्वरूप मुख्य रूप से 'सामाजिक-धार्मिक' था। लेकिन 1919 में स्थापित राजस्थान सेवा संघ का स्वरूप 'राजनैतिक' हो गया। यह बदलाव दर्शाता है कि जब तक समाज कुरीतियों से मुक्त नहीं हुआ, तब तक वह राजनैतिक स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए तैयार नहीं था। इन संस्थाओं ने 'सत्य' और 'अहिंसा' के साथ-साथ 'संगठन' की शक्ति का बोध कराया, जो प्रजामंडल आंदोलनों की पूर्वपीठिका सिद्ध हुई।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** संप सभा का प्रथम अधिवेशन 1903 में मानगढ़ की पहाड़ी पर हुआ था।
- **नोट:** राजस्थान सेवा संघ में आंतरिक मतभेदों के कारण 1928-29 के बाद इसका प्रभाव कम हो गया और इसका स्थान धीरे-धीरे विभिन्न रियासतों के 'प्रजामंडलों' ने ले लिया।
- कुछ पुस्तकों में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना केवल पथिक के नाम से दी गई है, लेकिन आधिकारिक तौर पर इसमें रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर का समान योगदान था।

8. संस्थाएं एवं उनके संस्थापक (त्वरित संदर्भ तालिका)

संस्था	स्थापना वर्ष	संस्थापक	मुख्य कार्यक्षेत्र
परोपकारिणी सभा	1883	दयानन्द सरस्वती	उदयपुर / अजमेर
संप सभा	1883	गोविंद गिरी	सिरोही / वागड़
विद्या प्रचारिणी सभा	1914	हरिभाई किंकर	बिजोलिया (चित्तौड़)
राजस्थान सेवा संघ	1919	विजय सिंह पथिक	वर्धा / अजमेर
मारवाड़ सेवा संघ	1920	जयनारायण व्यास	जोधपुर

wincompete



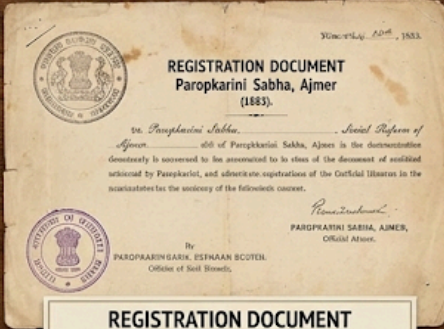
MAHARANA SAJJAN SINGH (Udaipur)
First President of Paropkarini Sabha (Est. 1883).



GOVIND GIRI.
Founder of Samp Sabha (1883).
Unified Bhit Tribals against social evils.



RAJASTHAN SEVA SANGH (Est. 1919, Wardha)
Leaders: Vijay Singh Pathik, Ramnarayan Chaudhary.
Political Awakening Hub.



REGISTRATION DOCUMENT
Paropkarini Sabha, Ajmer (1883)
First Legal Framework for Social Reform.



VARDHMAN PATHSHALA, JAIPUR
(Est. 1907)
Founder: Arjun Lal Sethi
Covert Center for Revolutionaries

wincompete

1857 की क्रांति

अध्याय 6: राजस्थान में 1857 की क्रांति के कारण और राजनैतिक स्थिति

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (RBSE) की पाठ्यपुस्तकों के प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित है।

1. राजनैतिक ढांचा: ए.जी.जी. (Agent to the Governor General) का पद

1818 की संधियों के बाद, अंग्रेजों ने राजस्थान की रियासतों पर प्रभावी नियंत्रण रखने के लिए एक प्रशासनिक तंत्र विकसित किया।

- **राजपूताना एजेंसी की स्थापना:** 1832 ई. में अजमेर में 'राजपूताना एजेंसी' का मुख्यालय बनाया गया।
- **ए.जी.जी. (A.G.G.):** इस तंत्र का सर्वोच्च अधिकारी 'एजेंट टू द गवर्नर जनरल' कहलाता था। राजस्थान के **प्रथम ए.जी.जी. मिस्टर लोकेट (Mr. Locket)** थे।
- **मुख्यालय का स्थानांतरण:** 1845 ई. में ए.जी.जी. का मुख्यालय ग्रीष्मकाल के लिए **माउंट आबू** स्थानांतरित कर दिया गया (शीतकाल में यह अजमेर रहता था)।
- **1857 के समय ए.जी.जी.:** क्रांति के समय राजस्थान के ए.जी.जी. **जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस** थे।

2. राजस्थान की छह सैनिक छावनियाँ

क्रांति के समय राजपूताना में ब्रिटिश नियंत्रण वाली **छह सैनिक छावनियाँ** थीं, जिनमें लगभग 5,000 सैनिक थे। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इन छावनियों में कोई भी यूरोपीय सैनिक नहीं था, केवल भारतीय सैनिक (मुख्यतः मेरठ और अवध के) थे।

छावनी	मुख्यालय	सैनिक टुकड़ी	वर्तमान स्थिति
नसीराबाद	अजमेर	15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री	अजमेर
नीमच	ग्वालियर (मालवा)	मालवा मेवाड़ राजपूताना बटालियन	मध्य प्रदेश
एरिनपुरा	पाली	जोधपुर लीजियन	पाली
देवली	टोंक	कोटा कंर्टिजेंट	टोंक
ब्यावर	अजमेर	मेरवाड़ा बटालियन	ब्यावर
खेरवाड़ा	उदयपुर	मेवाड़ भील कोर (MBC)	उदयपुर

wincompete

विशेष नोट: उपर्युक्त छावनियों में से **ब्यावर** और **खेरवाड़ा** के सैनिकों ने 1857 के विद्रोह में प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया था।

3. क्रांति के प्रमुख कारण: एक विश्लेषण

राजस्थान में क्रांति केवल दिल्ली की नकल नहीं थी, बल्कि यहाँ स्थानीय परिस्थितियों ने विद्रोह के लिए उपजाऊ भूमि तैयार की थी।

A. राजनैतिक कारण (हस्तक्षेप की नीति):

- **उत्तराधिकार के मामलों में दखल:** अंग्रेजों ने गोद निषेध नीति (Doctrine of Lapse) के माध्यम से रियासतों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया। उदाहरणतः भरतपुर और अलवर के उत्तराधिकार विवादों में ब्रिटिश हस्तक्षेप से असंतोष बढ़ा।
- **पॉलिटिकल एजेंटों का प्रभुत्व:** राजाओं की शक्तियाँ उनके महलों तक सीमित रह गईं और वास्तविक सत्ता पी.ए. (Political Agents) के हाथों में आ गई।

B. सामंती असंतोष (Feudal Discontent):

- **जागीरदारों के अधिकारों में कटौती:** 1818 की संधियों से पूर्व जागीरदार स्वतंत्र थे, लेकिन अंग्रेजों ने राजाओं को उकसाकर सामंतों की सैन्य शक्ति छीन ली और उन पर भारी कर लगा दिए।
- **आऊवा और कोठारिया के सामंत:** मारवाड़ के आऊवा ठाकुर **कुशाल सिंह** और कोठारिया के रावत जोध सिंह जैसे सामंत ब्रिटिश विरोधी चेतना के मुख्य स्तंभ बने।

C. आर्थिक कारण:

- रियासतों से भारी 'खिराज' (Tribute) वसूलना।
- अफीम और नमक के व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार, जिससे स्थानीय व्यापारियों और कृषकों को भारी हानि हुई।

D. तात्कालिक कारण (धार्मिक भावना):

- **चर्बी वाले कारतूस:** एनफील्ड राइफलों में गाय और सूअर की चर्बी वाले कारतूसों की खबर ने हिंदू और मुस्लिम सैनिकों को विद्रोही बना दिया। राजस्थान में नसीराबाद के सैनिकों में यह अफवाह तेजी से फैली थी।

4. विश्लेषण: अजमेर का सामरिक महत्व

1857 में अजमेर अंग्रेजों के लिए 'शस्त्रागार' (Arsenal) और खजाने का केंद्र था। यदि विद्रोही सैनिक सबसे पहले अजमेर पर अधिकार कर लेते, तो राजस्थान का इतिहास भिन्न होता। ए.जी.जी. जॉर्ज लॉरेंस ने इस खतरे को भांपते हुए नसीराबाद से 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री को अजमेर से हटाकर नसीराबाद भेज दिया था, क्योंकि उसे उन पर अविश्वास था। इसी अविश्वास ने नसीराबाद में विद्रोह का बीजारोपण किया।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** क्रांति के समय दिल्ली का सम्राट बहादुर शाह जफर था, लेकिन राजस्थान की रियासतों के राजाओं ने अपनी सुरक्षा के लिए अंग्रेजों का साथ दिया।
- **पॉलिटिकल एजेंट (1857):**
 - मेवाड़ (उदयपुर) - **मेजर शावर्स**
 - मारवाड़ (जोधपुर) - **मैक मोसन**
 - जयपुर - **कर्नल ईडन**
 - कोटा - **मेजर बर्टन**
- कुछ स्रोतों में नीमच छावनी को राजस्थान की सीमा से बाहर बताया जाता है, परंतु प्रशासनिक रूप से यह राजपूताना ए.जी.जी. के अधीन 'मेवाड़ पॉलिटिकल एजेंसी' का हिस्सा थी।

6. रियासती शासक (क्रांति के समय)

रियासत

शासक

उदयपुर

महाराणा स्वरूप सिंह

जोधपुर

महाराजा तख्त सिंह

जयपुर

महाराजा रामसिंह द्वितीय

कोटा

महाराव रामसिंह द्वितीय

बीकानेर

महाराजा सरदार सिंह

धौलपुर

भगवंत सिंह

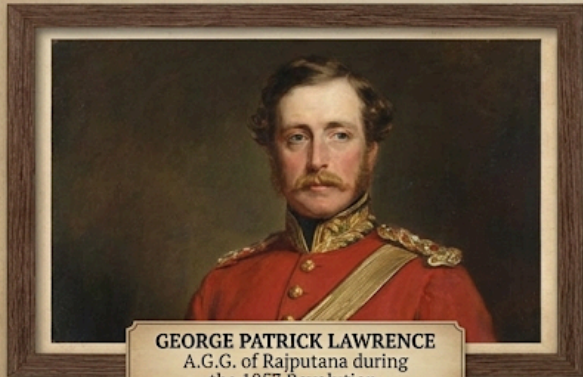
wincompete



RAJPUTANA AGENCY HEADQUARTERS, AJMER (Est. 1832).
Seat of the A.G.G. (Agent to the Governor General).



SIX MILITARY CANTONMENTS (1857):
Nasirabad, Neemuch, Erinpura, Deoli, Beawar, Kherwara.



GEORGE PATRICK LAWRENCE
A.G.G. of Rajputana during
the 1857 Revolution.

RAJASTHAN IN 1857:
Political Structure &
Causes of Revolt



THE IMMEDIATE CAUSE:
Greased Cartridges (Enfield Rifle).
Sparked religious discontent among soldiers.

wincompete

अध्याय 7: नसीराबाद, नीमच और एरिनपुरा में विद्रोह की घटनाएं

1. नसीराबाद छावनी में विद्रोह (राजस्थान में क्रांति का श्रीगणेश)

राजस्थान में 1857 की क्रांति का विधिवत प्रारंभ **नसीराबाद** से हुआ। यह अजमेर के निकट स्थित सबसे शक्तिशाली छावनी थी।

- **विद्रोह की तिथि:** 28 मई, 1857 (समय: दोपहर के 3:00 बजे)।
- **नेतृत्व:** 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिकों ने। इनका साथ 30वीं नेटिव इन्फैंट्री ने भी दिया।
- **प्रमुख कारण:** ए.जी.जी. द्वारा 15वीं नेटिव इन्फैंट्री पर अविश्वास करना और उन्हें अजमेर से नसीराबाद स्थानांतरित करना। सैनिकों में यह अफवाह फैल गई कि अंग्रेज उनके धर्म को नष्ट करने के लिए आटे में हड्डियों का चूरा मिला रहे हैं।
- **अधिकारियों की हत्या:** विद्रोहियों ने मेजर **स्पॉटिसवुड (Major Spottiswoode)** और **न्यूबेरी (Newbery)** की हत्या कर दी। लेफ्टिनेंट लॉक और हार्डी घायल हुए।
- **दिल्ली कूच:** छावनी को लूटने और जलाने के बाद विद्रोही सैनिक 18 जून, 1857 को दिल्ली पहुँचे।

2. नीमच छावनी में विद्रोह

नीमच छावनी उस समय राजपूताना ए.जी.जी. के अधीन 'मेवाड़ पॉलिटिकल एजेंसी' का हिस्सा थी।

- **विद्रोह की तिथि:** 3 जून, 1857 (समय: रात्रि 11:00 बजे)।
- **नेतृत्व:** मोहम्मद अली बेग और हीरा सिंह।
- **महत्वपूर्ण घटना:** विद्रोह से पूर्व कर्नल एबॉट (Colonel Abbott) ने सैनिकों को वफादारी की शपथ दिलाने का प्रयास किया, जिसे मोहम्मद अली बेग ने यह कहकर चुनौती दी कि "अंग्रेजों ने स्वयं अपनी शपथ (अवध के मामले में) भंग की है, अतः वे हमसे वफादारी की अपेक्षा न करें।"
- **अधिकारियों का पलायन:** विद्रोही सैनिकों ने छावनी में आग लगा दी। यहाँ से भागे हुए 40 अंग्रेज स्त्री-पुरुषों ने इंगला (चित्तौड़गढ़) गाँव में रुघाराम जाट के यहाँ शरण ली।
- **मेवाड़ की भूमिका:** मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट मेजर शावर्स ने महाराणा **स्वरूप सिंह** की सहायता से इन अंग्रेजों को मुक्त कराकर उदयपुर के **जग मंदिर** महलों में ठहराया।
- **दिल्ली कूच:** नीमच के विद्रोही शाहपुरा होते हुए देवली पहुँचे और वहाँ की छावनी को लूटते हुए दिल्ली की ओर बढ़ गए।

3. एरिनपुरा छावनी और 'जोधपुर लीजियन' का विद्रोह

एरिनपुरा (पाली) में स्थित 'जोधपुर लीजियन' की टुकड़ी ने राजस्थान की क्रांति को एक नया नारा और दिशा प्रदान की।

- **विद्रोह की तिथि:** 21 अगस्त, 1857।
- **स्थान:** विद्रोह का प्रारंभ आबू (जहाँ सैनिक प्रशिक्षण ले रहे थे) से हुआ और फिर एरिनपुरा पहुँचे।
- **नारा:** सैनिकों ने "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" का प्रसिद्ध नारा दिया।
- **नेतृत्व:** सूबेदार मोती खान, सूबेदार शीतल प्रसाद और तिलक राम।
- **दिल्ली कूच की प्रक्रिया:** एरिनपुरा के विद्रोही सैनिक दिल्ली की ओर जाते समय खैरवा (पाली) नामक स्थान पर रुके, जहाँ उनकी भेंट आऊवा के ठाकुर **कुशल सिंह** से हुई। इसके बाद यह विद्रोह एक व्यापक सामंती विद्रोह में बदल गया।

4. विश्लेषण: विद्रोहियों का दिल्ली की ओर आकर्षण

राजस्थान की लगभग सभी छावनियों (नसीराबाद, नीमच, एरिनपुरा, देवली) के विद्रोहियों का अंतिम लक्ष्य 'दिल्ली' पहुँचना था। इसके पीछे मुख्य कारण बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट मानकर उनके नेतृत्व में संघर्ष करना था। हालांकि, दिल्ली कूच की इस रणनीति ने अंग्रेजों को राजस्थान में अपनी स्थिति पुनः सुदृढ़ करने का अवसर दे दिया। यदि ये सैनिक दिल्ली जाने के बजाय अजमेर के शस्तागार पर अधिकार कर लेते, तो राजस्थान से अंग्रेजों का अस्तित्व शीघ्र समाप्त हो सकता था।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** नसीराबाद के विद्रोह के समय ब्रिटिश अधिकारियों की रक्षा हेतु **बम्बई लांसर्स** (Bombay Lancers) के सैनिकों को तैनात किया गया था, लेकिन उन्होंने भी विद्रोही भारतीयों पर गोली चलाने से मना कर दिया।
- नीमच विद्रोह की तिथि को लेकर कुछ स्थानीय वृत्तांतों में मतभेद है, परंतु स्तर-1 के सभी प्रामाणिक स्रोतों (डॉ. गोपीनाथ शर्मा) में **3 जून, 1857** ही मान्य है।
- **विशेष:** ब्यावर और खेरवाड़ा छावनियों ने इस दौरान शांति बनाए रखी और विद्रोह में प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया।

6. प्रमुख विद्रोह केंद्र एवं तिथियाँ (त्वरित संदर्भ तालिका)

केंद्र	तिथि	प्रमुख नेतृत्वकर्ता	ब्रिटिश अधिकारी (पी.ए.)
नसीराबाद	28 मई, 1857	15वीं व 30वीं एन.आई.	प्रिचार्ड (छावनी अधिकारी)
नीमच	3 जून, 1857	मोहम्मद अली बेग, हीरा सिंह	मेजर शावर्स (मेवाड़ पी.ए.)
एरिनपुरा	21 अगस्त, 1857	शीतल प्रसाद, मोती खान	मैकमोसन (मारवाड़ पी.ए.)



अध्याय 8: आऊवा का विद्रोह और ठाकुर कुशल सिंह की भूमिका

1. आऊवा विद्रोह की पृष्ठभूमि

मारवाड़ (जोधपुर रियासत) में विद्रोह का मुख्य केंद्र **आऊवा (पाली)** था। यहाँ के ठाकुर **कुशल सिंह चम्पावत** अपनी रियासत के महाराजा **तख्त सिंह** और अंग्रेजों की हस्तक्षेपकारी नीतियों के प्रबल विरोधी थे।

- **क्रांतिकारियों का मिलन:** जब एरिनपुरा छावनी के विद्रोही सैनिक दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे, तब **खैरवा** नामक स्थान पर ठाकुर कुशल सिंह ने उनसे भेंट की और विद्रोह का नेतृत्व संभाला।
- **सामंती गठबंधन:** कुशल सिंह के आह्वान पर आसोप, गूलर, आलनियावास और लांबिया के जागीरदार भी अपनी सेनाओं के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े हुए।

2. बिथौड़ा का युद्ध (Battle of Bithoda)

यह मारवाड़ की राजकीय सेना और क्रांतिकारियों के मध्य प्रथम बड़ा संघर्ष था।

- **तिथि: 8 सितम्बर, 1857।**
- **पक्ष:** एक ओर ठाकुर कुशल सिंह के नेतृत्व में विद्रोही सैनिक थे, तो दूसरी ओर जोधपुर महाराजा तख्त सिंह की सेना (किलेदार **ओनार सिंह** के नेतृत्व में) और अंग्रेज अधिकारी **कैप्टन हीथकोट** की संयुक्त सेना थी।
- **परिणाम:** क्रांतिकारियों ने राजकीय सेना को बुरी तरह पराजित किया। किलेदार ओनार सिंह मारा गया और हीथकोट को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। इस विजय ने क्रांतिकारियों के मनोबल को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया।

3. चेलावास का युद्ध (Battle of Chelawas): 'काले-गोरे का युद्ध'

बिथौड़ा की हार से तिलमिलाकर राजस्थान के ए.जी.जी. (A.G.G.) **जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस** स्वयं एक विशाल सेना लेकर आऊवा पहुँचे।

- **तिथि: 18 सितम्बर, 1857।**
- **मुख्य घटना:** इस युद्ध में जोधपुर के पॉलिटिकल एजेंट **मैक मोसन (Mac Mason)** भी अपनी सेना के साथ लॉरेंस की सहायता के लिए आए।
- **परिणाम:** कुशल सिंह की सेना ने अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी। ए.जी.जी. पैट्रिक लॉरेंस भागकर अजमेर चला गया।
- **मैक मोसन की हत्या:** क्रांतिकारियों ने मैक मोसन की हत्या कर दी और उसके सिर को **आऊवा के किले के दरवाजे** पर लटका दिया। राजस्थान की लोकगीतों में आज भी गाया जाता है— *"ढोल बाजै, चंग बाजै, भलो बाजै बांकीयो, एजेंट ने मार'र किले माथे टांकियो।"*

4. सुगाली माता: क्रांतिकारियों की आराध्य देवी

आऊवा के विद्रोह की आध्यात्मिक और प्रेरणादायी शक्ति **सुगाली माता** थीं।

- **स्वरूप:** माता की इस प्रतिमा के **10 सिर और 54 हाथ** थे।
- **महत्व:** कुशल सिंह और उनके सैनिक सुगाली माता को अपनी इष्टदेवी मानते थे। अंग्रेजों को लगा कि जब तक यह प्रतिमा आऊवा में है, सैनिकों का मनोबल नहीं टूटेगा।
- **जब्ती:** 1858 में आऊवा के पतन के बाद अंग्रेज सेनापति **होम्स** इस प्रतिमा को उठाकर अजमेर ले गया (वर्तमान में यह पाली के बांगड़ संग्रहालय में सुरक्षित है)।

5. आऊवा का पतन और कुशल सिंह का पलायन

- **होम्स का आक्रमण:** जनवरी 1858 में कर्नल होम्स के नेतृत्व में एक भारी सेना ने आऊवा को घेर लिया।
- **पलायन:** स्थिति को भांपते हुए ठाकुर कुशल सिंह किले की जिम्मेदारी अपने भाई **पृथ्वी सिंह** (लांबिया के ठाकुर) को सौंपकर सहायता हेतु मेवाड़ (सलूमबर और कोठारिया) की ओर चले गए।
- **कोठारिया की शरण:** कोठारिया के रावत **जोध सिंह** ने ठाकुर कुशल सिंह को शरण और सुरक्षा प्रदान की।

- **आत्मसमर्पण:** 1860 ई. में कुशल सिंह ने नीमच में अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उनके विरुद्ध जांच के लिए 'मेजर टेलर कमीशन' बैठाया गया, जिसने साक्ष्यों के अभाव में उन्हें निर्दोष मानकर रिहा कर दिया।

6. विश्लेषण: आऊवा विद्रोह का स्वरूप

आऊवा का विद्रोह केवल सैनिकों का विद्रोह नहीं था, बल्कि यह राजपूताना के सामंतों का ब्रिटिश साम्राज्यवाद और उनके पिटू राजाओं के विरुद्ध एक संगठित 'अभिजात विद्रोह' था। ठाकुर कुशल सिंह ने स्थानीय जनभावना और धार्मिक प्रतीकों (सुगाली माता) को जोड़कर इसे जन-आंदोलन का रूप दे दिया। मैक मोसन का सिर काटा जाना ब्रिटिश प्रतिष्ठा पर सबसे गहरी चोट थी, जिसने यह सिद्ध किया कि राजस्थान की मरुधरा विदेशी दासता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** चेलावास के युद्ध को इतिहासकारों ने 'काले और गोरे का युद्ध' कहा है क्योंकि इसमें एक तरफ भारतीय (काले) और दूसरी तरफ अंग्रेज (गोरे) थे।
- **नोट:** ठाकुर कुशल सिंह की जांच करने वाले आयोग का नाम **टेलर कमीशन (Taylor Commission)** था, जो अक्सर आरपीएससी परीक्षाओं में पूछा जाता है।
- **स्थान परिवर्तन:** सुगाली माता की प्रतिमा अजमेर से वर्तमान में पाली के संग्रहालय में लाई जा चुकी है।

8. आऊवा संघर्ष के युद्ध (त्वरित संदर्भ तालिका)

युद्ध	तिथि	नेतृत्व (क्रांतिकारी)	विपक्षी नेतृत्व	परिणाम
बिथौड़ा	8 सितम्बर, 1857	कुशल सिंह	ओनार सिंह / हीथकोट	क्रांतिकारी विजयी
चेलावास	18 सितम्बर, 1857	कुशल सिंह	पैट्रिक लॉरेंस / मैक मोसन	क्रांतिकारी विजयी (मैक मोसन मृत)
आऊवा घेरा	जनवरी 1858	पृथ्वी सिंह	कर्नल होम्स	अंग्रेजों का अधिकार

wincompete



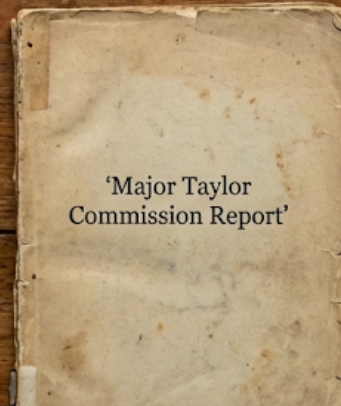
THAKUR KUSHAL SINGH
(Auwa)
Leader of the Marwar
Rebellion against British and
Jodhpur State.



BATTLE OF CHELAWAS
(‘Kaleb-Gore Ka Yudh’)
Victory for Kushal
Singh. Mac Mason
(Political Agent) killed.



SUGALI MATA
(10 Heads, 54 Hands)
The spiritual force behind
the Auwa rebellion. Seized
by British in 1858.



**MAJOR TAYLOR
COMMISSION REPORT**
(1860)
Inquiry into Kushal Singh's role.
Acquitted him due to lack of
evidence.

wincompete

अध्याय 9: कोटा में विद्रोह: जन-क्रांति का स्वरूप

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (RBSE) के प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर तैयार की गई है।

1. कोटा विद्रोह की विशिष्टता: एक 'जन-क्रांति'

राजस्थान में 1857 का विद्रोह जहाँ अन्य स्थानों पर मुख्य रूप से सैनिक छावनियों तक सीमित था, वहीं कोटा में इसने एक 'जन-क्रांति' (Mass Revolution) का रूप ले लिया। कोटा में कोई ब्रिटिश सैनिक छावनी नहीं थी, फिर भी यहाँ का विद्रोह सबसे सुनियोजित और दीर्घकालिक रहा। यहाँ की जनता और स्थानीय सेना ने मिलकर ब्रिटिश सत्ता और उनके समर्थक शासक के विरुद्ध मोर्चा खोला।

2. विद्रोह का सूत्रपात और तात्कालिक कारण

कोटा के पॉलिटिकल एजेंट (P.A.) मेजर बर्टन (Major Burton) नीमच से विद्रोह दबाकर 12 अक्टूबर, 1857 को कोटा लौटे थे।

- **गोपनीय सलाह:** 13 अक्टूबर को मेजर बर्टन ने कोटा महाराव रामसिंह द्वितीय से भेंट की और उन्हें सलाह दी कि सेना के कुछ अधिकारी (जैसे जयदयाल और मेहराब खान) अंग्रेज विरोधी हैं, अतः उन्हें पदच्युत कर दंडित किया जाना चाहिए।
- **भनक लगना:** महाराव और बर्टन के बीच हुई इस गोपनीय बातचीत की सूचना क्रांतिकारियों को लग गई, जिससे सेना और जनता में भारी आक्रोश फैल गया।

3. ऐतिहासिक घटनाक्रम: 15 अक्टूबर, 1857

- **विद्रोह का प्रारंभ:** 15 अक्टूबर, 1857 की सुबह कोटा की स्थानीय सेना और आम जनता ने रेजिडेंसी (पॉलिटिकल एजेंट का निवास) को घेर लिया।
- **प्रमुख नेतृत्वकर्ता:** इस विद्रोह का सफल नेतृत्व लाला जयदयाल (एक प्रसिद्ध वकील) और मेहराब खान (करौली के रहने वाले रिसालदार) ने किया।
- **मेजर बर्टन की हत्या:** क्रांतिकारियों ने रेजिडेंसी पर आक्रमण कर मेजर बर्टन, उनके दो पुत्रों (आर्थर और फ्रैंक) तथा एक डॉक्टर (डॉ. सैडलर) की हत्या कर दी।
- **अपमानजनक प्रदर्शन:** क्रांतिकारियों ने मेजर बर्टन का सिर काटकर पूरे कोटा शहर में घुमाया और अंत में उसे तोप के मुहाने पर रखकर उड़ा दिया। यह घटना ब्रिटिश प्रतिष्ठा पर सबसे भीषण प्रहार थी।

4. प्रशासनिक पतन और महाराव की नजरबंदी

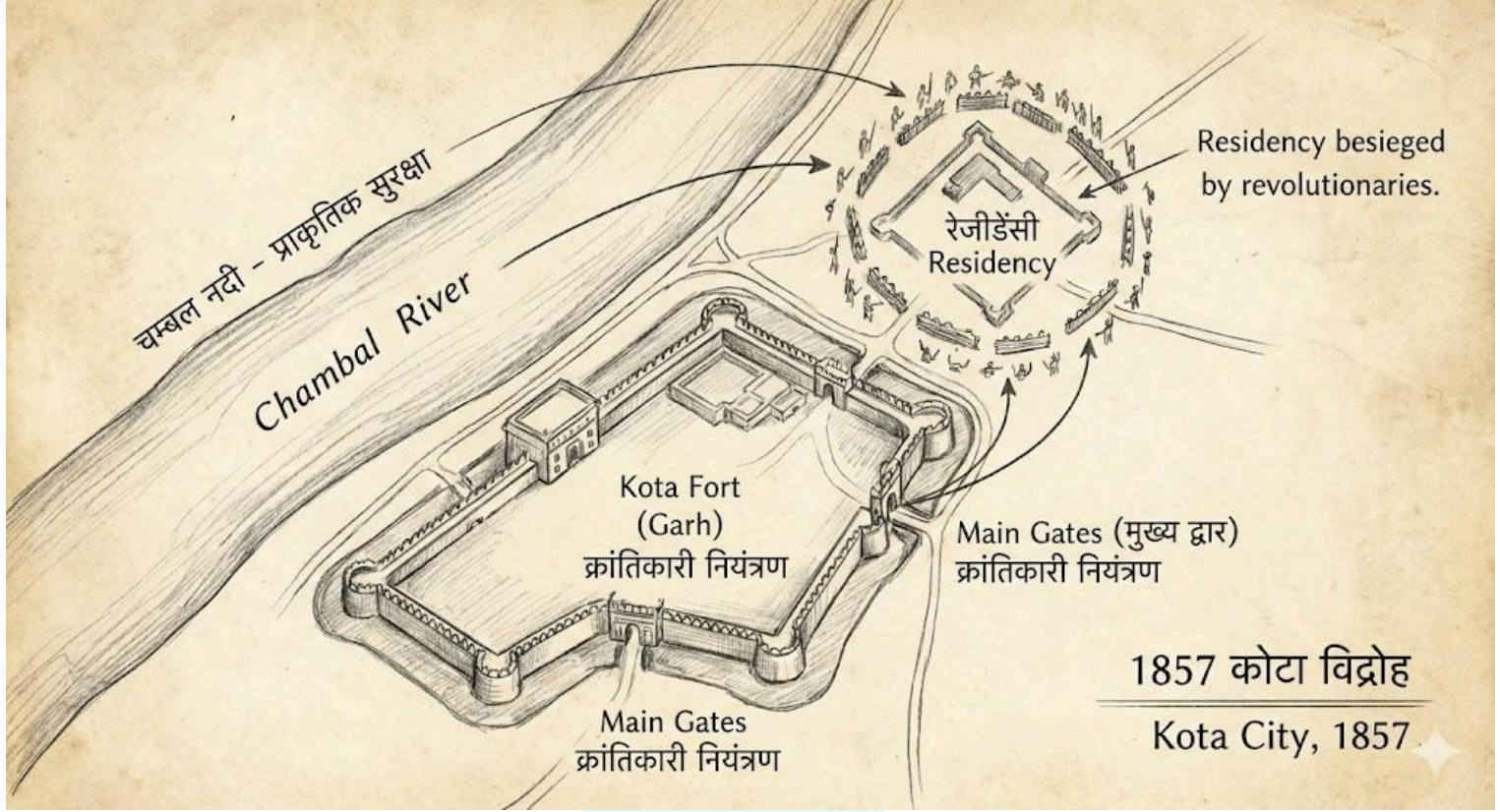
विद्रोहियों ने न केवल रेजिडेंसी बल्कि पूरे कोटा शहर पर अधिकार कर लिया।

- **नजरबंदी:** कोटा महाराव रामसिंह द्वितीय को क्रांतिकारियों ने उनके ही महल में नजरबंद (House Arrest) कर दिया।
- **क्रांतिकारियों का शासन:** लगभग छह माह (अक्टूबर 1857 से मार्च 1858) तक कोटा शहर का प्रशासन पूरी तरह क्रांतिकारियों के हाथों में रहा। उन्होंने राजकीय भंडारों और शस्त्रागारों पर अधिकार कर लिया।
- **समझौता:** दबाव में आकर महाराव को एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने पड़े, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि "मेजर बर्टन की हत्या महाराव के आदेश पर नहीं बल्कि क्रांतिकारियों के स्वतः स्फूर्त आक्रोश का परिणाम थी।"

5. विद्रोह का दमन और करौली की सहायता

- **करौली का सहयोग:** जब महाराव नजरबंद थे, तब करौली के महाराजा मदनपाल ने अपनी सेना भेजकर महाराव को महल से मुक्त कराने में सहायता की।
- **जनरल रॉबर्ट्स का आक्रमण:** मार्च 1858 में जनरल रॉबर्ट्स के नेतृत्व में एक विशाल अंग्रेजी सेना ने कोटा पर आक्रमण किया।
- **अंतिम संघर्ष:** 30 मार्च, 1858 को भीषण संघर्ष के बाद अंग्रेजों ने कोटा पर पुनः अधिकार कर लिया। लाला जयदयाल और मेहराब खान को गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में उन्हें कोटा में ही फांसी दे दी गई।

6. कोटा में विद्रोह



7. विश्लेषण: कोटा विद्रोह का राजनैतिक प्रभाव

कोटा का विद्रोह राजस्थान की क्रांति का 'चरम बिंदु' था। यहाँ का विद्रोह इस मायने में महत्वपूर्ण है कि यहाँ प्रशासन पूरी तरह ठप हो गया था और जनता ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया था। महाराव रामसिंह द्वितीय की भूमिका संदेह के घेरे में रही, जिसके कारण युद्ध के बाद उनकी 'तोपों की सलामी' की संख्या 17 से घटाकर 13 कर दी गई, जबकि करौली के मदनपाल की सलामी बढ़ाकर 17 कर दी गई। यह अंग्रेजों की 'पुरस्कार और दंड' की नीति का प्रत्यक्ष उदाहरण था।

8. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** कोटा के विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों को नसीराबाद और मालवा से अतिरिक्त सेना बुलानी पड़ी थी।
- **जांच आयोग:** महाराव की भूमिका की जांच के लिए **लॉर्ड रॉबर्ट्स** के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया गया था, जिसने महाराव को बर्टन की हत्या के आरोप से मुक्त कर दिया लेकिन प्रशासनिक विफलता का दोषी माना।
- **विरोधाभास:** कुछ स्थानीय वृत्तांतों में महाराव को क्रांतिकारियों का गुप्त समर्थक बताया गया है, जबकि आधिकारिक ब्रिटिश दस्तावेज (स्तर-1) उन्हें क्रांतिकारियों के हाथों का 'विवश कैदी' मानते हैं।

wincompete

9. कोटा क्रांति: मुख्य विवरण (त्वरित संदर्भ तालिका)

विवरण

तथ्य

प्रारंभ तिथि

15 अक्टूबर, 1857

प्रमुख नेता

लाला जयदयाल एवं मेहराब खान

मृत ब्रिटिश अधिकारी

मेजर बर्टन (P.A.), डॉ. सैडलर

सहायक रियासत

करौली (महाराजा मदनपाल)

दमनकारी अधिकारी

जनरल रॉबर्ट्स (मार्च 1858)

दण्ड स्वरूप कार्यवाही

महाराव की तोपों की सलामी में कटौती

wincompete

अध्याय 10: अन्य रियासतों में क्रांति, तात्या टोपे और उपसंहार

1. बीकानेर: महाराजा सरदार सिंह का अद्वितीय कदम

बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह राजस्थान के एकमात्र ऐसे शासक थे, जो अपनी सेना लेकर विद्रोहियों को दबाने के लिए अपनी रियासत की सीमा से बाहर भी गए।

- **सैन्य अभियान:** उन्होंने पंजाब (वर्तमान हरियाणा) के **हिसार, सिरसा और हांसी** क्षेत्रों में जाकर ब्रिटिश विरोधी विद्रोह को दबाया और अंग्रेजों की प्रत्यक्ष सहायता की।
- **ब्रिटिश पुरस्कार:** उनकी इस स्वामी-भक्ति से प्रसन्न होकर अंग्रेजों ने उन्हें **टिब्बी परगने (हनुमानगढ़)** के **41 गाँव** उपहार स्वरूप प्रदान किए।

2. तात्या टोपे का राजस्थान में आगमन

महान क्रांतिकारी तात्या टोपे ने राजस्थान में दो बार प्रवेश किया और यहाँ के राजाओं व जनता से सहायता की अपील की।

- **प्रथम आगमन (अगस्त 1858):** तात्या टोपे ग्वालियर से हारकर भीलवाड़ा के रास्ते राजस्थान आए। **8 अगस्त, 1858** को **कुवाड़ा (भीलवाड़ा)** नामक स्थान पर जनरल रॉबर्ट्स की सेना से उनका युद्ध हुआ, जिसमें उन्हें पीछे हटना पड़ा।
- **झालावाड़ पर अधिकार:** कुवाड़ा से वे झालावाड़ पहुँचे, जहाँ की सेना ने उनका साथ दिया। झालावाड़ के महाराजा **पृथ्वी सिंह** को तात्या टोपे ने बंदी बना लिया और राज्य पर अधिकार कर लिया।
- **द्वितीय आगमन (दिसंबर 1858):** वे पुनः बांसवाड़ा की ओर से प्रविष्ट हुए और **बांसवाड़ा** पर अधिकार किया। उन्होंने टोंक, सीकर और बीकानेर तक अपनी पहुँच बनाई।
- **पतन:** अंत में, नरवर (मध्य प्रदेश) के जागीरदार **मानसिंह नरुका** के विश्वासघात के कारण वे पकड़े गए और 18 अप्रैल, 1859 को उन्हें शिवपुरी में फांसी दे दी गई।

3. अन्य रियासतों में विद्रोह का स्वरूप

A. धौलपुर:

धौलपुर में विद्रोह का नेतृत्व बाहर से आए सैनिकों (ग्वालियर और इंदौर के क्रांतिकारी) ने किया। यहाँ के शासक **भगवंत सिंह** थे। विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों की सहायता हेतु **पटियाला** से सेना बुलानी पड़ी।

B. भरतपुर:

भरतपुर दिल्ली के निकट होने के कारण अत्यंत संवेदनशील था। यहाँ की **गूजर और मेवात** की जनता ने विद्रोह कर दिया। यहाँ के नाबालिग महाराजा **जसवंत सिंह** को पॉलिटिकल एजेंट **मोरिसन** ने आगरा भाग जाने की सलाह दी।

C. टोंक:

टोंक एकमात्र मुस्लिम रियासत थी। यहाँ के नवाब **वजीर-उद-दौला** अंग्रेजों के समर्थक थे, लेकिन उनके मामा **मीर आलम खान** के नेतृत्व में टोंक की सेना और जनता ने विद्रोह किया। टोंक विद्रोह की विशिष्टता यह थी कि यहाँ **महिलाओं ने भी युद्ध में भाग लिया** था।

4. क्रांति की विफलता के कारण:

राजस्थान में क्रांति के विफल होने के पीछे निम्नलिखित ठोस कारण थे:

1. **नेतृत्व का अभाव:** क्रांतिकारियों के पास कोई संगठित योजना और अखिल राजपूताना स्तर का नेतृत्व नहीं था।
2. **शासकों की निष्ठा:** राजस्थान के लगभग सभी राजाओं ने अंग्रेजों का तन-मन-धन से साथ दिया। यदि वे साथ न देते, तो अंग्रेजों का अस्तित्व समाप्त हो सकता था।
3. **समन्वय की कमी:** नसीराबाद, नीमच और आऊवा के विद्रोह अलग-अलग समय पर हुए, जिससे अंग्रेजों को उन्हें एक-एक कर दबाने का अवसर मिल गया।

4. **संसाधनों का अभाव:** अंग्रेजों के पास उन्नत हथियार और सूचना तंत्र (तार व्यवस्था) थी, जबकि क्रांतिकारियों के पास पुरानी तकनीक थी।

5. विश्लेषण: 1857 की क्रांति का राजस्थान पर स्थायी प्रभाव

यद्यपि यह क्रांति सैन्य रूप से विफल रही, परंतु इसने राजस्थान में 'सामंती युग' के अंत और 'राष्ट्रीय चेतना' के उदय की प्रस्तावना लिखी। राजाओं की अंग्रेजों के प्रति अत्यधिक निष्ठा ने जनता और सामंतों को उनके विरुद्ध खड़ा कर दिया। इस क्रांति ने यह सिद्ध किया कि भविष्य में स्वतंत्रता का मार्ग रियासतों के महलों से नहीं, बल्कि जन-संगठनों और वैचारिक जागृति से होकर गुजरेगा। सूर्यमल्ल मीसण जैसे कवियों की रचनाओं ने इस चेतना को बाद के आंदोलनों के लिए सुरक्षित रखा।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** अमरचंद बांठिया (बीकानेर निवासी) को 'राजस्थान का मंगल पांडे' कहा जाता है, क्योंकि वे 1857 की क्रांति में फांसी पर चढ़ने वाले प्रथम राजस्थानी थे। उन्होंने ग्वालियर में लक्ष्मीबाई को अपना खजाना सौंप दिया था।
- **नोट:** तात्या टोपे को सहायता देने के आरोप में **सवाई माधोपुर** के जागीरदार और कोठारिया के रावत जोध सिंह का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।
- कुछ स्रोतों में धौलपुर के विद्रोह की शुरुआत अक्टूबर 1857 दी गई है, परंतु व्यापक प्रभाव दिसंबर 1857 के दौरान देखा गया जब पटियाला की सेना आई।

7. रियासत और विद्रोह के सूत्रधार (त्वरित संदर्भ तालिका)

रियासत	शासक (1857)	विद्रोह का नेतृत्व / विशेष
बीकानेर	महाराजा सरदार सिंह	राज्य से बाहर जाकर अंग्रेजों की सहायता की।
धौलपुर	महाराजा भगवंत सिंह	ग्वालियर व इंदौर के सैनिकों द्वारा विद्रोह।
टोंक	नवाब वजीर-उद-दौला	मीर आलम खान का नेतृत्व, महिलाओं की भागीदारी।
झालावाड़	महाराजा पृथ्वी सिंह	तात्या टोपे ने राज्य पर अधिकार किया।
बांसवाड़ा	लक्ष्मण सिंह	तात्या टोपे का द्वितीय प्रवेश व अधिकार।

wincompete



MAHARAJA SARDAR SINGH (Bikaner)
The only ruler to lead his army outside Rajasthan (Punjab, 1857) to aid the British. Granted 41 villages of Tibbi Pargana.



TATYA TOPE'S CAMPAIGN (1858-59)
Captured Jhalawar and Banswara rulers. Defeated at Kuwada (Bhilwara) by Gen. Roberts. Betrayed and executed.



WOMEN WARRIORS OF TONK (1857)
Unique instance where women participated in the revolt against Nawab Wazir-ud-Daula under Mir Alam Khan's leadership.



AMAR CHAND BANTHIA ('Mangal Pandey of Rajasthan')
First martyr from Rajasthan (Gwalior, 1858). Executed for funding Lakshmbai and Talya Tope.

wincompete

राजनीतिक जनजागरण: समाचार पत्रों एवं संस्थाओं की भूमिका

अध्याय 11: राजस्थान के प्रारंभिक जन-संगठन और चेतना केंद्र

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और डॉ. बृज किशोर शर्मा के प्रमाणिक शोध पत्रों एवं राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रकाशनों पर आधारित है।

1. राजनीतिक जनजागरण की पृष्ठभूमि

20वीं सदी के दूसरे दशक तक राजस्थान में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने जनता को मानसिक रूप से तैयार कर दिया था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद की परिस्थितियों, 'होमरूल लीग' के प्रभाव और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बढ़ते कद ने राजस्थान के प्रबुद्ध वर्ग को रियासती कुशासन के विरुद्ध संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

2. राजपूताना मध्य भारत सभा (Rajputana Madhya Bharat Sabha) - 1918

यह राजस्थान और मध्य भारत की रियासतों में राजनीतिक चेतना जगाने वाली पहली प्रभावशाली संस्था थी।

- **स्थापना:** 29 दिसंबर 1918 को दिल्ली में आयोजित 'चाँदनी चौक' स्थित **मारवाड़ी पुस्तकालय** में।
- **प्रमुख सूत्रधार:** गणेश शंकर विद्यार्थी, विजय सिंह पथिक, चाँदकरण शारदा और गिरधर शर्मा।
- **अध्यक्ष एवं कार्यालय:** इसके प्रथम अध्यक्ष **सेठ जमनालाल बजाज** थे और उपाध्यक्ष **हरिभाऊ उपाध्याय**। इसका प्रधान कार्यालय **अजमेर** में रखा गया।
- **उद्देश्य:** रियासती जनता को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जोड़ना और रियासतों में 'उत्तरदायी शासन' (Responsible Government) की मांग करना।
- **अधिवेशन:** इसका दूसरा अधिवेशन अमृतसर (1919) में और तीसरा अधिवेशन **मार्च 1920 में अजमेर** में हुआ, जिसकी अध्यक्षता **जमनालाल बजाज** ने की।
- **राजनीतिक प्रभाव:** इस सभा ने पहली बार रियासती जनता की समस्याओं (विशेषकर किसानों के दुख) को कांग्रेस के मंच तक पहुँचाया। नागपुर अधिवेशन (1920) के समय इस संस्था को कांग्रेस की सहयोगी संस्था के रूप में मान्यता मिली।

3. राजस्थान सेवा संघ (Rajasthan Seva Sangh) - 1919

यदि राजपूताना मध्य भारत सभा वैचारिक मंच थी, तो 'राजस्थान सेवा संघ' प्रत्यक्ष संघर्ष का संगठन था।

- **स्थापना:** 1919, वर्धा (महाराष्ट्र) में।
- **संस्थापक:** **विजय सिंह पथिक**, **रामनारायण चौधरी**, हरिभाई किंकर और केसरी सिंह बारहट।
- **मुख्यालय परिवर्तन:** 1920 में इसका कार्यालय वर्धा से **अजमेर** स्थानांतरित कर दिया गया।
- **कार्यप्रणाली:** संघ का मुख्य कार्य रियासतों में होने वाले अत्याचारों की जांच करना और उन्हें समाचार पत्रों के माध्यम से सार्वजनिक करना था।
- **राजनीतिक प्रभाव:** * **बिजोलिया और बेगूँ:** संघ ने इन आंदोलनों को संगठित नेतृत्व प्रदान किया। रामनारायण चौधरी ने बेगूँ के किसानों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
 - **जांच आयोग:** जब भी किसी रियासत में दमन होता, संघ अपनी जांच समिति भेजता (जैसे बरड़ किसान आंदोलन के समय)।
 - **प्रेस का उपयोग:** संघ ने 'नवीन राजस्थान' और 'तरुण राजस्थान' के माध्यम से जनता में निर्भीकता भरी।
 - **पतन:** 1928-29 के आसपास विजय सिंह पथिक और रामनारायण चौधरी के मध्य मतभेदों के कारण यह संस्था शिथिल हो गई, लेकिन इसने तब तक हज़ारों राजनीतिक कार्यकर्ता तैयार कर दिए थे।

4. चेतना के अन्य प्रमुख केंद्र

A. अजमेर: राजनीतिक गतिविधियों की धुरी अजमेर सीधे ब्रिटिश नियंत्रण में होने के कारण राजस्थान के क्रांतिकारियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए 'सुरक्षित बंदरगाह' था। राजस्थान सेवा संघ, राजपूताना मध्य भारत सभा और बाद में 'हरिजन सेवा संघ' के मुख्यालय यहीं थे।

B. वर्धा (महाराष्ट्र): बाहरी आधार स्तंभ

जमनालाल बजाज की कर्मभूमि होने के कारण वर्धा राजस्थान के राजनैतिक आंदोलनों के लिए 'लॉजिस्टिक्स' और वित्त का मुख्य केंद्र था। विजय सिंह पथिक ने यहीं से 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन शुरू किया था।

5. RMBS और राजस्थान सेवा संघ का अंतर्संबंध

अक्सर छात्रों में इन दो संस्थाओं को लेकर भ्रम रहता है। **राजपूताना मध्य भारत सभा (RMBS)** का चरित्र अधिक 'नीतिगत' और 'अखिल भारतीय' था, जिसका ध्यान कांग्रेस को रियासतों की ओर खींचने पर था। इसके विपरीत, **राजस्थान सेवा संघ** 'कार्यकारी' (Executive) संगठन था, जो जमीन पर उतरकर जागीरदारों से लोहा लेता था। इन दोनों संस्थाओं ने मिलकर राजस्थान में उस 'मध्यम वर्ग' को संगठित किया, जिसने 1930 के दशक में 'प्रजामंडल' आंदोलन की बागडोर संभाली। इनके बिना राजस्थान का एकीकरण और लोकतांत्रिक प्रक्रिया संभव नहीं थी।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** जमनालाल बजाज को 'गांधी जी का पाँचवा पुत्र' कहा जाता है, जिन्होंने राजपूताना मध्य भारत सभा को न केवल आर्थिक संबल दिया बल्कि उसे गांधीवादी अहिंसक मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया।
- **नोट:** रामनारायण चौधरी को राजस्थान सेवा संघ का सचिव बनाया गया था, और उन्होंने ही 'तरुण राजस्थान' के संपादन का अधिकांश कार्य संभाला।
- कुछ पुस्तकों में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1920 दी गई है, परंतु **स्तर-1 के सूत्रों (हुकुम चंद जैन)** के अनुसार वर्धा में स्थापना **1919** में हुई थी और 1920 में इसका अजमेर स्थानांतरण हुआ था।

7. प्रारंभिक जन-संगठनों की तुलना (त्वरित संदर्भ तालिका)

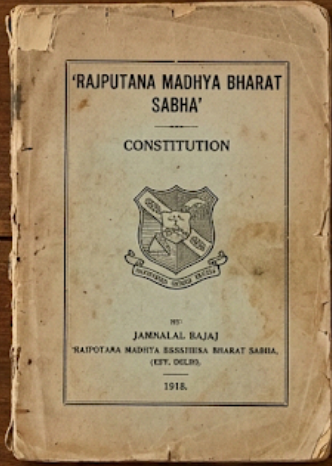
विशेषता	राजपूताना मध्य भारत सभा	राजस्थान सेवा संघ
स्थापना वर्ष	1918	1919
स्थापना स्थान	दिल्ली (मारवाड़ी पुस्तकालय)	वर्धा (महाराष्ट्र)
मुख्य संस्थापक	बजाज, विद्यार्थी, पथिक	पथिक, रामनारायण चौधरी, किंकर
प्रधान केंद्र	अजमेर	अजमेर (1920 से)
मुख्य पत्र	राजस्थान केसरी (सहयोग)	नवीन राजस्थान / तरुण राजस्थान
मुख्य उद्देश्य	उत्तरदायी शासन की मांग	सामंती अत्याचारों का विरोध

wincompete



SETH JAMNALAL BAJAJ
('Gandhi's 5th Son')

First President of Rajputana
Madhya Bharat Sabha (1918)
Financier of the movement.



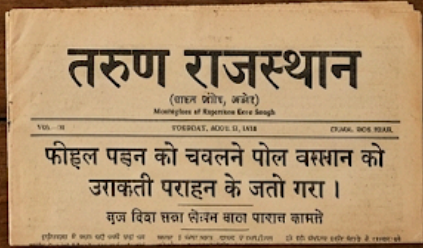
**RAJPUTANA MADHYA
BHARAT SABHA**
(Est. 1918, Delhi)

First political organization.
Aimed at Responsible
Government.

RAJASTHAN SEVA SANGH
(Est. 1919, Wardha)

Founders: Vijay Singh Pathik,
Ramnarayan Chaudhary.

Led Peasant Movements.



TARUN RAJASTHAN
(Ajmer)

Mouthpiece of Rajasthan
Seva Sangh.

Exposed feudal atrocities and
awakened the masses.

wincompete

अध्याय 12: समाचार पत्रों का राजनीतिक प्रभाव: पथिक से व्यास तक

1. राजस्थान केसरी (1920): राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद

विजय सिंह पथिक ने महसूस किया कि राजस्थान के स्थानीय आंदोलनों (जैसे बिजोलिया) को तब तक सफलता नहीं मिलेगी जब तक उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान न मिले। इसी उद्देश्य से **वर्धा (महाराष्ट्र)** से 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।

- **संपादक व आर्थिक पक्ष:** संपादक **विजय सिंह पथिक** थे और सह-संपादक **रामनारायण चौधरी**। इसका आर्थिक भार **सेठ जमनालाल बजाज** ने उठाया।
- **विशिष्ट प्रभाव:** 'राजस्थान केसरी' ने बिजोलिया के किसानों पर हो रहे जुल्मों को कविता और तीखे लेखों के माध्यम से जनता के सामने रखा। इस पत्र ने राजस्थान के युवाओं में 'बलिदान' की भावना जगाई। इसके माध्यम से पहली बार राजस्थान के बाहर बैठे नेताओं (जैसे गांधी और तिलक) का ध्यान राजपूताना की आंतरिक स्थिति की ओर गया।

2. नवीन राजस्थान और तरुण राजस्थान: दमन के विरुद्ध संघर्ष

अजमेर से प्रकाशित इन पत्रों ने राजस्थान सेवा संघ के मुखपत्र के रूप में कार्य किया।

- **नवीन राजस्थान (1922):** अजमेर से प्रकाशित इस पत्र ने **बेगूँ किसान आंदोलन** और **सिरोही के भील आंदोलन** को स्वर दिया। इसकी भाषा इतनी उग्र और तार्किक थी कि ब्रिटिश सरकार ने इसे 'विद्रोही' घोषित कर दिया।
- **तरुण राजस्थान (1923):** जब 'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो पथिक ने उसी प्रेस और उसी भावना के साथ इसका नाम बदलकर '**तरुण राजस्थान**' कर दिया। यह प्रेस सेंसरशिप को चकमा देने की एक ऐतिहासिक रणनीति थी।
- **ऐतिहासिक प्रभाव:** तरुण राजस्थान ने '**नीमूचना हत्याकांड (1925)**' की खबरों को इतनी प्रमुखता से छापा कि अलवर महाराजा को रक्षात्मक रुख अपनाना पड़ा। **जयनारायण व्यास** ने ब्यावर से इसका संपादन संभालकर मारवाड़ की जनता को रियासती कुशासन के विरुद्ध खड़ा किया।

3. आगीबाण (1932): राजस्थानी भाषा में प्रथम राजनीतिक प्रहार

जयनारायण व्यास ने यह महसूस किया कि ग्रामीण जनता तक पहुंचने के लिए उनकी मातृभाषा का उपयोग अनिवार्य है।

- **महत्व:** ब्यावर से प्रकाशित 'आगीबाण' (अग्निबाण) **राजस्थानी भाषा का प्रथम राजनीतिक समाचार पत्र** था।
- **विषय वस्तु:** इसने मारवाड़ में प्रचलित 'जागीरदारी प्रथा', 'लाग-बाग' और 'बेगार' के विरुद्ध ग्रामीण अंचलों में चेतना प्रज्वलित की। इसकी भाषा लोक-मुहावरों से युक्त थी, जिसने इसे आम किसान के बीच अत्यंत लोकप्रिय बना दिया।
- **राजनैतिक प्रभाव:** इसने मारवाड़ प्रजामंडल के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक जमीन तैयार की और व्यास जी को 'लोकनायक' के रूप में स्थापित किया।

4. समाचार पत्रों के वे लेख जिन्होंने सत्ता को हिला दिया

समाचार पत्रों की शक्ति उनके द्वारा प्रकाशित विशिष्ट रिपोर्टाज और लेखों में निहित थी:

1. **बिजोलिया की पुकार:** 'प्रताप' (कानपुर) और 'राजस्थान केसरी' के लेखों ने मेवाड़ सरकार को 'बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग' गठित करने के लिए मजबूर किया।
2. **मारवाड़ की अवस्था:** जयनारायण व्यास के तीखे लेखों ने मारवाड़ के प्रशासन को इतना विचलित किया कि उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया गया।
3. **भील दमन की रिपोर्टिंग:** राजस्थान सेवा संघ के पत्रों ने सिरोही और पाल (मेवाड़) में भीलों पर हुई गोलीबारी का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खुलासा किया, जिससे ब्रिटिश संसद में भी सवाल उठे।

5. प्रेस बनाम रियासती कानून

राजस्थान में प्रेस का विकास ब्रिटिश भारत की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण था। यहाँ 'प्रेस एक्ट' के अलावा राजाओं के निजी आदेश (फरमान) चलते थे। अखबारों को रियासत की सीमा में लाने पर प्रतिबंध था, इसलिए 'राजस्थान केसरी' जैसे पत्र गुप्त रूप से ऊंटों या

गठरियों में छुपाकर गांवों तक पहुँचाए जाते थे। प्रेस ने राजस्थान में 'पब्लिक ओपिनियन' (जनमत) का निर्माण किया, जिसने सदियों पुरानी यह धारणा तोड़ दी कि "राजा ईश्वर का रूप है और उसका विरोध पाप है।"

6. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य:** गणेश शंकर विद्यार्थी का पत्र 'प्रताप' यद्यपि राजस्थान से बाहर (कानपुर) से निकलता था, लेकिन पथिक जी के आग्रह पर इसने राजस्थान के किसान आंदोलनों को राष्ट्रीय मंच प्रदान करने में 'रीढ़ की हड्डी' का कार्य किया।
- **नोट:** त्याग भूमि (हरिभाऊ उपाध्याय) ने राजनैतिक चेतना के साथ-साथ 'गांधीवादी जीवन मूल्यों' और 'खादी' के प्रचार पर अधिक बल दिया, जो अन्य उग्र पत्रों से भिन्न था।
- कुछ स्रोतों में 'नवीन राजस्थान' के बंद होने का कारण आर्थिक बताया जाता है, लेकिन आधिकारिक ऐतिहासिक साक्ष्यों (स्तर-1) के अनुसार ब्रिटिश दमन और प्रतिबंध ही मुख्य कारण थे।

7. समाचार पत्रों का तुलनात्मक सारांश (तालिका)

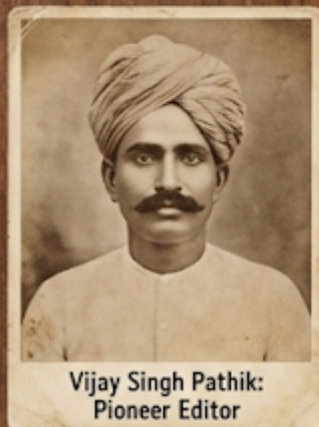
पत्र का नाम	प्रारंभ वर्ष	स्थान	मुख्य व्यक्तित्व	प्रमुख योगदान
राजस्थान केसरी	1920	वर्धा	पथिक, बजाज	बिजोलिया आंदोलन का राष्ट्रीयकरण।
नवीन राजस्थान	1922	अजमेर	विजय सिंह पथिक	बेगूँ और भील आंदोलनों का नेतृत्व।
तरुण राजस्थान	1923	अजमेर/ब्यावर	पथिक, व्यास, चौधरी	नीमूचणा कांड का खुलासा।
आगीबाण	1932	ब्यावर	जयनारायण व्यास	राजस्थानी भाषा में जनजागरण।

wincompete



TARUN RAJASTHAN (Ajmer, 1923).
Renamed from 'Navin Rajasthan' to evade ban.
Exposed Neemuchana Massacre.

RAJASTHAN KESARI (Wardha, 1920).
Editor : Vijay Singh Pathik.
Financed by Jamnalal Bajaj.
Nationalized Bijolia Movement.



Vijay Singh Pathik:
Pioneer Editor

AGIBAN (Beawar, 1932).
Editor : Jainarayan Vyas.
First political paper in Rajasthani language.
Awakened rural masses.

PRATAP (Kanpur).
Editor : Ganesh Shankar Vidyarthi.
Backbone of national support for Rajasthan peasant movements.



अध्याय 13: सामाजिक-राजनीतिक चेतना में साहित्य और कवियों की भूमिका

1. राजस्थानी साहित्य: चारण परंपरा से राष्ट्रीयता तक

राजस्थान में साहित्य सदैव ही वीरता का प्रेरक रहा है, परंतु 19वीं और 20वीं सदी में इसका स्वरूप 'राज-प्रशस्ति' (राजाओं की प्रशंसा) से बदलकर 'लोक-जागृति' और 'स्वतंत्रता' की ओर मुड़ गया। कवियों ने सामंती दासता और ब्रिटिश दमन के विरुद्ध ओजस्वी वाणी का प्रयोग किया।

2. सूर्यमल्ल मीसण: वीर रसावतार और चेतना के अग्रदूत

बूंदी के दरबारी कवि **सूर्यमल्ल मीसण** को आधुनिक राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना का प्रथम कवि माना जाता है।

- **1857 की क्रांति और मीसण:** उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय राजस्थान के राजाओं को पत्र लिखकर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने राजाओं की निष्क्रियता की तीखी आलोचना की।
- **वीर सतसई (Veer Satsai):** यह उनकी कालजयी रचना है। इसका प्रसिद्ध दोहा आज भी राजस्थान के शौर्य का प्रतीक है: "इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय। पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय॥" (अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पालने में ही माँ अपने पुत्र को मर मिटने की शिक्षा देती है।)
- "इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय। पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय॥"

(अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पालने में ही माँ अपने पुत्र को मर मिटने की शिक्षा देती है।)

- **वंश भास्कर (Vansh Bhaskar):** यद्यपि यह बूंदी का इतिहास है, परंतु इसमें मीसण ने अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का सजीव वर्णन किया है।

● 3. केसरी सिंह बारहट और 'चेतावनी रा चूंगट्या'

बारहट परिवार राजस्थान का वह एकमात्र परिवार है जिसने अपना संपूर्ण जीवन और परिवार स्वतंत्रता की बलिबेदी पर समर्पित कर दिया।

- **चेतावनी रा चूंगट्या (Chetavani ra Chungatya - 1903): * ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** 1903 ई. में लॉर्ड कर्जन ने दिल्ली दरबार आयोजित किया था, जिसमें मेवाड़ के **महाराणा फतेह सिंह** शामिल होने जा रहे थे।
 - **रचना का प्रभाव:** केसरी सिंह ने महाराणा के स्वाभिमान को जगाने के लिए **13 सोरठे** (डिंगल भाषा में) लिखकर भेजे।
 - **परिणाम:** इन सोरठों को पढ़कर महाराणा इतने प्रभावित हुए कि वे दिल्ली पहुँचने के बावजूद **दरबार में शामिल नहीं हुए** और बिना भाग लिए उदयपुर लौट आए। यह ब्रिटिश प्रतिष्ठा पर एक बहुत बड़ा नैतिक प्रहार था।
- **अन्य योगदान:** उन्होंने क्रांतिकारी संगठन 'वीर भारत सभा' की स्थापना की। उनके पुत्र **प्रताप सिंह बारहट** और भाई **जोरावर सिंह बारहट** भी क्रांतिकारी साहित्य और गतिविधियों के सक्रिय स्तंभ थे।

● 4. अर्जुन लाल सेठी: क्रांतिकारी साहित्य और शिक्षा

जयपुर के अर्जुन लाल सेठी न केवल एक क्रांतिकारी थे, बल्कि एक प्रखर विद्वान और साहित्यकार भी थे।

- **साहित्यिक कृतियाँ:** उन्होंने 'शूद्र मुक्ति', 'स्त्री मुक्ति', 'महेन्द्र कुमार' और 'मदन पराजय' जैसे नाटकों और ग्रंथों की रचना की।
- **विशेषता:** उनका साहित्य सीधा और मारक था। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में व्याप्त छुआछूत और विदेशी दासता पर कड़ा प्रहार किया।
- **वर्धमान पाठशाला:** उन्होंने साहित्य और शिक्षा को क्रांतिकारियों को तैयार करने का माध्यम बनाया। उन्होंने कहा था— "अर्जुन लाल सेठी यदि राजकीय सेवा स्वीकार करेगा, तो अंग्रेजों को देश से बाहर कौन निकालेगा?"

5. जनजागृति के अन्य साहित्यकार स्वर

सागर मल गोपा (जैसलमेर): उन्होंने 'जैसलमेर का गुंडाराज' और 'आजादी के दीवाने' जैसी पुस्तकें लिखीं, जिसके कारण उन्हें जेल में अमानवीय यातनाएं देकर जला दिया गया।

विजय सिंह पथिक: 'तरुण राजस्थान' और 'नवीन राजस्थान' में उनके लेख और कविताएं (जैसे- "पंथिक तू क्यों सोता है?") किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं।

हीरालाल शास्त्री: उनका प्रसिद्ध गीत 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' प्रजामंडल कार्यकर्ताओं में उत्साह भरता था।

जयनारायण व्यास: 'ढोल', 'पोपां बाई री पोल' और 'मारवाड़ की अवस्था' जैसे पैम्फलेट्स (लघु पुस्तिकाओं) के माध्यम से कुशासन की पोल खोली।

6. डिंगल साहित्य का आधुनिक रूपांतरण

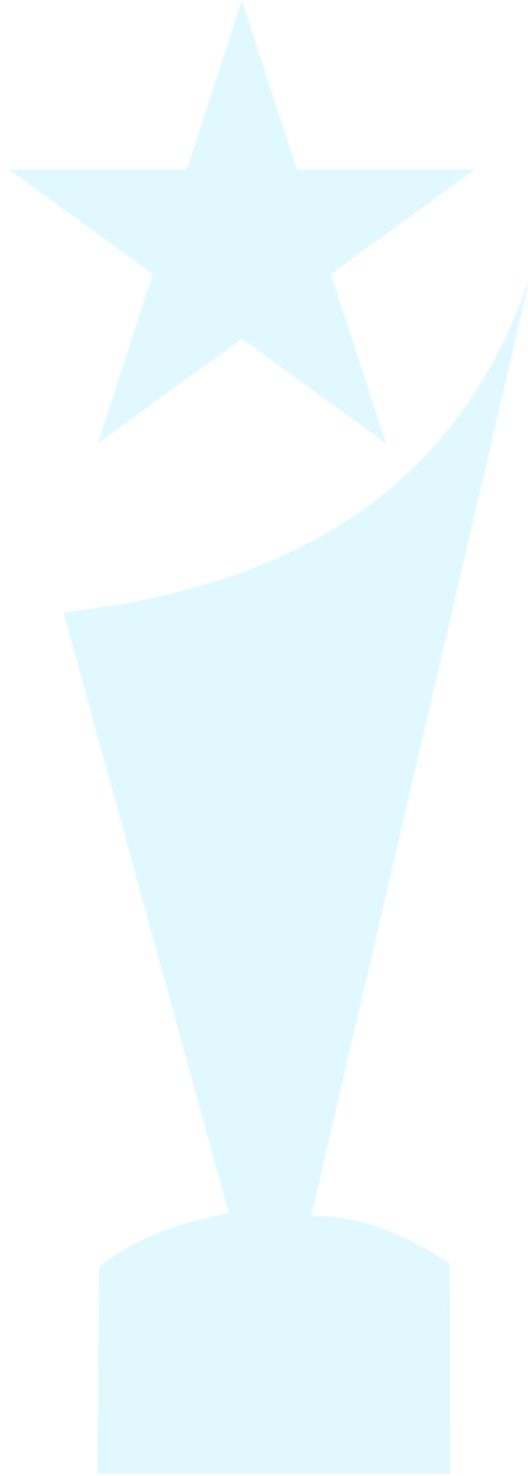
राजस्थान का पारंपरिक 'डिंगल' साहित्य मध्यकाल में युद्धों का वर्णन करता था, लेकिन 20वीं सदी के कवियों ने इस वीर-काव्य का उपयोग 'ब्रिटिश विरोध' के लिए किया। 'चेतावनी रा चूंगट्या' जैसे सोरठे केवल काव्य नहीं थे, बल्कि वे एक सोए हुए शासक की 'राजनैतिक आत्मा' को जगाने की औषधि थे। साहित्य ने उस समय 'सूचना' से अधिक 'ऊर्जा' का कार्य किया, जिससे राजस्थान की जनता कठिन संघर्षों (जैसे बिजोलिया या बेगू) में भी अडिग रही।

7. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य:** सूर्यमल्ल मीसण ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किसानों और जागीरदारों के बीच एकता स्थापित करने का प्रयास किया था ताकि वे सम्मिलित रूप से अंग्रेजों का मुकाबला कर सकें।
- **नोट:** केसरी सिंह बारहट को शाहपुरा (भीलवाड़ा) के राजा ने राजपुरा गद्दी और सम्मान दिया था, लेकिन उन्होंने देशसेवा को सर्वोपरि रखा।
- **साहित्यिक शैली:** इस काल के अधिकांश कवियों ने 'डिंगल' और 'पिंगल' शैलियों का उपयोग किया ताकि राजपूती आन-बान और राष्ट्रीयता का भाव प्रभावी ढंग से व्यक्त हो सके।

8. प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ (त्वरित संदर्भ तालिका)

साहित्यकार	प्रमुख रचनाएँ	मुख्य संदेश / प्रभाव
सूर्यमल्ल मीसण	वीर सतसई, वंश भास्कर	1857 की क्रांति हेतु राजाओं को जगाना।
केसरी सिंह बारहट	चेतावनी रा चूंगट्या	फतेह सिंह को दिल्ली दरबार से रोकना।
अर्जुन लाल सेठी	महेन्द्र कुमार, मदन पराजय	सामाजिक शुद्धि और क्रांतिकारी चेतना।
सागर मल गोपा	जैसलमेर का गुंडाराज	सामंती दमन और भ्रष्टाचार का पर्दाफाश।



wincompete

इल न देणी आपणी, हालरिया हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय ॥

इल न देणी आपणी,
हालरिया हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै,
मरण बड़ाई माय ॥

सुधा रिले न देखावे न देखावे न देखावे
वला ने

SURYAMAL MISRAN ("Veer Rasavatar").
Manuscript page of 'Veer Satsai'
(c. 1857). Inspired rulers during the
First War of Independence.



Pratap Singh Barhath:
Revolutionary Poet & Martyr

केसारी रा रा चुगहत्या

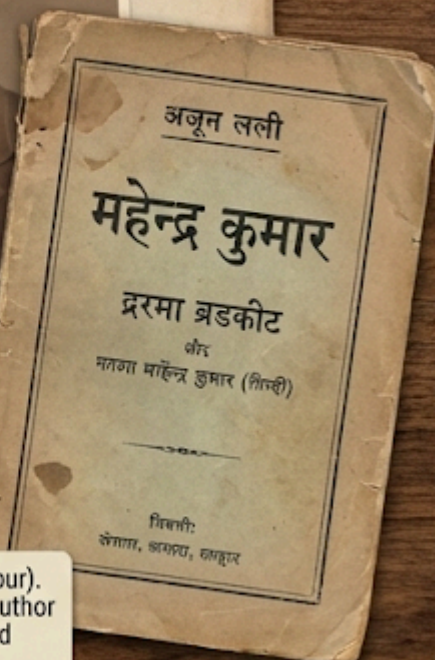
'Chetavani ra Chungatya' (1903)

13 सराथार मों अठरे नाना सा सुबसे
बाद जमाने भात्र जकात्र गुरिदा से दशबाहे सारी देने
साजाइ मत्तस प्रेमना, सभारी वसाप्रपनी . डाठगच्छी
भाग में वाषाप्रसता सुकना असाभ्य ज्योका वडा कती
लगनरपमा अद्विष मरुछ.रुगणे विरामक भारी तबाळा
काती । अन्नमा ठले में तुमन कसमो सावकम हला
भाशाना वरुगीर डठी चुबुज वो के.साराचा वासिमसप
तद वडली मनी मरने शन परत प्राउर रुमरी स लावा
जात । सुब किस दसात वडावे समान केरी जमने हावा
पीना लघले साभम नहीन पत्नीो जमा से मपताना
सोमार से वाणीन राधि वैठला न कानो सभक सने
सकल प्रीतीो मरनडापती के वंगारा कटवी दगाहाता

KESARI SINGH BARHATH
'Chetavani ra Chungatya' (1903).
13 Sorathas that stopped Maharana
Fateh Singh from attending Delhi
Durbar.

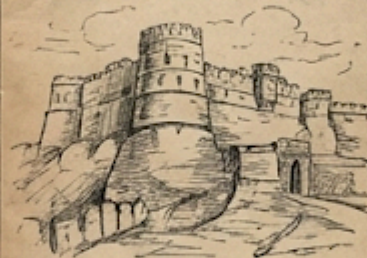


ARJUN LAL SETHI (Jaipur).
Revolutionary Scholar & Author
of 'Mahendra Kumar'. Used
literature for social and
political reform.



जौसाल्मेर का गुंदराज

का
वालर का कीम



कार
सागर मल गोपा
(जाहलजार)

SAGAR MAL GOPA (Jaisalmer).
Author of 'Jaisalmer ka Gundaraj'.
Martyred for exposing feudal
oppression through literature.

अध्याय 14: राजनैतिक चेतना में महिलाओं की भूमिका

1. पृष्ठभूमि: घरेलू परिधि से राजनैतिक मंच तक

राजस्थान में महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी 1920 के दशक के बाद तीव्र हुई। जहाँ एक ओर पुरुष 'राजस्थान सेवा संघ' और 'प्रजामंडलों' के माध्यम से सक्रिय थे, वहीं महिलाओं ने न केवल धरना-प्रदर्शनों में भाग लिया, बल्कि गिरफ्तारियाँ दीं और जेल की यातनाएँ भी सहनीं। इन महिलाओं ने शिक्षा और खादी प्रचार को अपना मुख्य अस्त्र बनाया।

2. अंजना देवी चौधरी: प्रथम सत्याग्रही महिला

अंजना देवी चौधरी (रामनारायण चौधरी की धर्मपत्नी) का नाम राजस्थान के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

- **ऐतिहासिक उपलब्धि:** वे राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन में गिरफ्तार होने वाली प्रथम महिला थीं। उन्हें 1924 ई. में बूंदी और मेवाड़ की रियासतों से निष्कासित किया गया और बंदी बनाया गया।
- **प्रमुख योगदान:** उन्होंने बिजोलिया और बेगू के किसान आंदोलनों में महिलाओं का नेतृत्व किया। उन्होंने पर्दा प्रथा का त्याग कर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाया और सत्याग्रहियों का मनोबल बढ़ाया।

महिला सेनानी	प्रमुख क्षेत्र	मुख्य योगदान / घटना
अंजना देवी चौधरी	बिजोलिया, बूंदी	गिरफ्तार होने वाली प्रथम महिला।
नारायणी देवी वर्मा	मेवाड़	मेवाड़ प्रजामंडल एवं जेल यात्रा।
काली बाई	रास्तापाल (डूंगरपुर)	शिक्षा हेतु सर्वोच्च बलिदान।
किशोरी देवी	कटराथल (सीकर)	10,000 महिलाओं का सम्मेलन।
रतन शास्त्री	जयपुर, टोंक	वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना।
रमा देवी	बिजोलिया	किसान आंदोलन में सक्रियता।

wincompete



काली बाई का बलिदान,
रास्तापाल (इंटरपुर, 1947)



कटराथल (सीकर) महिला सम्मेलन, 1934 - नेतृत्व: किशोरी देवी



राजस्थान की वीरांगनाएँ: स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का नेतृत्व (1920-1947)



प्रथम सत्याग्रही महिला: अंजना देवी चौधरी (गिरफ्तारी: 1924)



रतन शास्त्री और वनस्थली विद्यापीठ (स्थापना: 1935)

अध्याय 15: प्रजामंडलों के उदय की पूर्वपीठिका

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक प्रकाशनों पर आधारित है।

1. राजनैतिक संक्रमण: किसान आंदोलनों से प्रजामंडल तक

1920 के दशक के किसान आंदोलनों (बिजोलिया, बेगूँ) ने राजस्थान की जनता को संगठित होना सिखाया था, लेकिन ये आंदोलन मुख्य रूप से 'आर्थिक' मांगों (लगान, लाग-बाग) तक सीमित थे। 1927 के बाद राजस्थान के नेतृत्व ने यह अनुभव किया कि जब तक रियासतों में 'उत्तरदायी शासन' (Responsible Government) स्थापित नहीं होगा, तब तक किसानों और आम जनता का शोषण समाप्त नहीं होगा। यहीं से 'प्रजामंडल' की अवधारणा का उदय हुआ।

2. अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद (AISPC) - 1927

यह संस्था रियासती भारत के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ थी, जिसने समस्त रियासतों के आंदोलनों को एक 'अखिल भारतीय' पहचान दी।

- **स्थापना:** दिसंबर 1927, बम्बई (मुंबई)।
- **अध्यक्ष:** दीवान बहादुर रामचंद्र राव।
- **राजस्थान का प्रतिनिधित्व:** राजस्थान के प्रमुख नेता जैसे **विजय सिंह पथिक**, **जयनारायण व्यास**, और **कन्हैयालाल कल्यांत्री** इसके संस्थापक सदस्यों में थे। जयनारायण व्यास को इसका 'प्रांतीय सचिव' बनाया गया।
- **प्रभाव:** इस परिषद ने रियासतों के राजाओं को चेतावनी दी कि वे अपनी प्रजा को शासन में भागीदारी दें। इसने रियासती दमन के विरुद्ध 'वैश्विक जनमत' तैयार किया।

3. राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद (1928)

अखिल भारतीय संस्था की तर्ज पर राजस्थान के लिए एक पृथक इकाई की आवश्यकता महसूस की गई।

- **प्रथम अधिवेशन:** 1931, अजमेर।
- **अध्यक्षता:** चाँदकरण शारदा।
- **महत्व:** इस परिषद ने राजस्थान की विभिन्न रियासतों के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को एक मंच पर लाकर 'प्रजामंडलों' के गठन की योजना तैयार की। जयनारायण व्यास ने इसके माध्यम से मारवाड़ में नागरिक अधिकारों की लड़ाई को तेज किया।

4. 1938 का हरिपुरा अधिवेशन: एक युगांतकारी परिवर्तन

1938 से पहले, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीति रियासतों के आंतरिक मामलों में 'अहस्तक्षेप' की थी। लेकिन **हरिपुरा (गुजरात)** अधिवेशन ने इस नीति को पूरी तरह बदल दिया।

- **अध्यक्ष:** सुभाष चंद्र बोस।
- **हरिपुरा प्रस्ताव:** इस अधिवेशन में प्रस्ताव पारित किया गया कि "रियासतों की स्वतंत्रता का संघर्ष वहां की जनता को स्वयं लड़ना होगा, लेकिन कांग्रेस उन्हें अपना पूर्ण नैतिक समर्थन और सहयोग प्रदान करेगी।"
- **दूरगामी प्रभाव:** कांग्रेस के इस 'ग्रीन सिग्नल' के बाद राजस्थान की लगभग हर रियासत में प्रजामंडलों की बाढ़ आ गई। कार्यकर्ताओं का डर समाप्त हो गया क्योंकि उन्हें अब गांधी, नेहरू और बोस जैसे बड़े नेताओं का समर्थन प्राप्त था।

5. प्रजामंडल गठन में 'हरिपुरा' की भूमिका

1938 के हरिपुरा अधिवेशन को राजस्थान के आधुनिक इतिहास का '**प्रस्थान बिंदु**' कहा जा सकता है। इससे पहले रियासती कार्यकर्ता स्वयं को अकेला महसूस करते थे। हरिपुरा प्रस्ताव ने राजाओं के इस दावे को खारिज कर दिया कि "प्रजा का कांग्रेस से कोई लेना-देना नहीं है।" इसी अधिवेशन के प्रभाव स्वरूप 1938 में ही **मेवाड़, जयपुर (पुनर्गठन), शाहपुरा, अलवर, और धौलपुर** जैसे महत्वपूर्ण प्रजामंडलों की स्थापना हुई। यह राजस्थान में 'सामंती राजतंत्र' के अंत और 'लोकतांत्रिक गणराज्य' के उदय की स्पष्ट पूर्वपीठिका थी।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** जवाहरलाल नेहरू 1939 में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' के अध्यक्ष बने, जिससे रियासती आंदोलनों को अजेय शक्ति मिली।
- **नोट:** राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन का मुख्य उद्देश्य 'ब्रिटिश शासन का अंत' नहीं, बल्कि 'रियासती राजाओं के संरक्षण में उत्तरदायी शासन की स्थापना' था।
- कुछ स्रोतों में जयपुर प्रजामंडल की स्थापना 1931 दी गई है, लेकिन इसकी वास्तविक 'सक्रियता' और 'पुनर्गठन' 1938 के हरिपुरा अधिवेशन के बाद ही संभव हुआ।

7. प्रजामंडल उदय की समयरेखा (तालिका)

वर्ष	घटना / संस्था	महत्व
1927	अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद	रियासती आंदोलनों का अखिल भारतीय समन्वय।
1931	राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद अधिवेशन	अजमेर में राजस्थान के कार्यकर्ताओं का जुटान।
1938	कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन	रियासती संघर्ष को कांग्रेस का आधिकारिक समर्थन।
1938-39	प्रजामंडलों की स्थापना की लहर	अधिकांश प्रमुख रियासतों में प्रजामंडलों का गठन।
1945	उदयपुर अधिवेशन (AISPC)	नेहरू की अध्यक्षता में मेवाड़ में ऐतिहासिक सम्मेलन।

wincompete

अध्याय 15: प्रजामंडलों के उदय की पूर्वपीठिका - ऐतिहासिक दस्तावेज और चित्र



अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् (AISPC) (बम्बई, 1927): केनाभारकी आंदोलनन स्थापन, रियासती आंदोलनों का अखिल भारतीय मंच।



राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद्, प्रथम अधिवेशन (अजमेर, 1931): अध्यक्षता - चाँदकरण शारदा। राजस्थान में प्रजामंडल गठन की आधारशिला।



हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन (1938): सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में रियासती आंदोलनों को कांग्रेस का नैतिक समर्थन। 'उत्तरदायी शासन' का शंखनाद।



प्रजामंडलों का मुख्य उद्देश्य: 'रियासती राजाओं के संरक्षण में उत्तरदायी शासन' की स्थापना।



प्रमुख सूत्रधार: किसान आंदोलनों से राजनीतिक संघर्ष की ओर ले जाने वाले नेता।

किसान एवं जनजाति आंदोलन

अध्याय 16: बिजोलिया किसान आंदोलन - विश्व का सबसे लंबा अहिंसक संघर्ष

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और डॉ. बृज किशोर शर्मा (विशेषज्ञ: किसान आंदोलन) के प्रमाणिक शोध पर आधारित है।

1. बिजोलिया: एक ऐतिहासिक परिचय

बिजोलिया (वर्तमान भीलवाड़ा जिला) मेवाड़ रियासत का 'प्रथम श्रेणी' का ठिकाना था। इसे 'ऊपरमाल' के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ के अधिकांश किसान धाकड़ जाति के थे, जो अपनी मेहनत और कृषि कौशल के लिए प्रसिद्ध थे।

- **विद्रोह की जड़ें:** किसानों पर 84 प्रकार की लागतें (लाग-बाग) और अत्यधिक भू-राजस्व (लगान) का बोझ था। इसके अतिरिक्त 'बेगार' (बिना मजदूरी काम) ने किसानों का जीवन दूभर कर दिया था।

2. प्रथम चरण (1897-1915): स्थानीय नेतृत्व

आंदोलन का प्रारंभ 1897 ई. में 'गिरधारीपुरा' गाँव में गंगाराम धाकड़ के पिता के मृत्यु भोज के अवसर पर हुआ।

- **राव कृष्ण सिंह की भूमिका:** 1897 में किसानों ने नानजी पटेल और ठाकरी पटेल को अपनी शिकायतें लेकर महाराणा फतेह सिंह के पास भेजा। इससे नाराज होकर राव कृष्ण सिंह ने 1903 ई. में 'चंवरी कर' (पुत्री के विवाह पर ₹5 का कर) लगा दिया। किसानों ने दो वर्षों तक अपनी पुत्रियों का विवाह नहीं किया, जिससे विवश होकर राव को यह कर हटाना पड़ा।
- **पृथ्वी सिंह का दमन:** 1906 ई. में कृष्ण सिंह की मृत्यु के बाद पृथ्वी सिंह नए ठिकानेदार बने। उन्होंने जनता पर 'तलवार बंधाई' (उत्तराधिकार शुल्क) का भार डाल दिया। इसका विरोध करने पर साधु सीताराम दास, फतेहकरण चारण और ब्रह्मदेव को ठिकाने से निष्कासित कर दिया गया।

3. द्वितीय चरण (1916-1922): विजय सिंह पथिक और संगठित संघर्ष

यह आंदोलन का सबसे प्रभावशाली चरण था, जिसने इसे स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया।

- **विजय सिंह पथिक का प्रवेश:** साधु सीताराम दास के आग्रह पर 1916 ई. में पथिक जी (मूल नाम: भूप सिंह) इस आंदोलन से जुड़े। उन्होंने किसानों में जागृति लाने के लिए 'विद्या प्रचारिणी सभा' और 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' (1917) की स्थापना की, जिसके सरपंच मन्ना पटेल बनाए गए।
- **राष्ट्रीय पहचान:** पथिक जी ने 'प्रताप' (कानपुर) समाचार पत्र के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी के माध्यम से इस आंदोलन को पूरे भारत में चर्चित किया। महात्मा गांधी ने भी पथिक जी को 'राष्ट्रीय पथिक' की उपाधि दी और अपने निजी सचिव महादेव भाई देसाई को जाँच हेतु भेजा।
- **सफलता:** 1922 ई. में ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैंड की मध्यस्थता में किसानों और ठिकाने के बीच समझौता हुआ और 35 प्रकार की लाग-बाग हटा दी गईं।

4. तृतीय चरण (1923-1941): माणिक्य लाल वर्मा की भूमिका

1923 के बाद आंदोलन में कुछ शिथिलता आई, जिसे माणिक्य लाल वर्मा और जमनालाल बजाज ने पुनर्जीवित किया।

- **माणिक्य लाल वर्मा:** उन्होंने अपने प्रसिद्ध 'पंछीड़ा' गीत के माध्यम से किसानों में नया जोश भरा। वर्मा जी ने किसानों को अहिंसक रहते हुए अपने अधिकारों के लिए मर-मिटने को तैयार किया।
- **त्याग और संघर्ष:** 1927 में पथिक जी के आंदोलन से अलग होने के बाद वर्मा जी ने कमान संभाली। 1931 में हुए 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' के प्रभाव और मेवाड़ प्रजामंडल की सक्रियता ने आंदोलन को बल दिया।
- **अंतिम समझौता (1941):** मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य और राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता के प्रयासों से किसानों की मांगें मान ली गईं। उनकी जब्त जमीनें वापस कर दी गईं और आंदोलन 44 वर्षों के बाद समाप्त हुआ।

5. बिजोलिया आंदोलन की विशिष्टता

बिजोलिया आंदोलन केवल राजस्थान का नहीं, बल्कि भारत का 'प्रथम संगठित किसान आंदोलन' था। इसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इसमें हिंसा की एक भी घटना नहीं हुई। इसने राजस्थान की अन्य रियासतों (बेगूँ, बूंदी, अलवर) के किसानों को 'प्रतिरोध' की भाषा सिखाई। राव कृष्ण सिंह की 'चंवरी' और पृथ्वी सिंह की 'तलवार बंधाई' केवल आर्थिक कर नहीं थे, बल्कि वे सामंती अहंकार के प्रतीक थे, जिसे किसानों ने अपनी सामूहिक शक्ति से तोड़ दिया।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

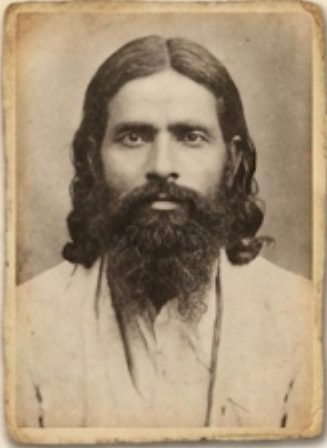
- **तथ्य:** तुलसी भील नामक व्यक्ति इस आंदोलन के दौरान सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए 'संदेशवाहक' के रूप में प्रतिदिन मिलों पैदल चलता था।
- **नोट:** मेवाड़ सरकार द्वारा गठित प्रथम जाँच आयोग 'बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग' (1919) था।
- कुछ पुस्तकों में चंवरी कर की राशि ₹13 दी गई है, परंतु **आधिकारिक (स्तर-1)** स्रोतों के अनुसार यह राशि **₹5** ही थी।

7. बिजोलिया आंदोलन के महत्वपूर्ण पड़ाव (तालिका)

वर्ष	घटना / नेतृत्व	मुख्य परिणाम
1897	प्रारंभ (साधु सीताराम दास)	नानजी-ठाकरी पटेल द्वारा शिकायत।
1903	राव कृष्ण सिंह	चंवरी कर का विरोध।
1906	राव पृथ्वी सिंह	तलवार बंधाई कर का विरोध।
1916	विजय सिंह पथिक	ऊपरमाल पंच बोर्ड का गठन (1917)।
1919	बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग	प्रथम राजकीय जाँच समिति।
1922	रॉबर्ट हॉलैंड समझौता	अल्पकालिक राहत एवं करों में कटौती।
1941	वर्मा जी व मोहन सिंह मेहता	आंदोलन का सफल समापन।

wincompete

अध्याय 16: बिजोलिया किसान आंदोलन - विश्व का सबसे लंबा अहिंसक संघर्ष (1897-1941) - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र



प्रथम चरण के प्रणेता: साधु सीताराम दास (1897-1915)। स्थानीय नेतृत्व का शंखनाद।



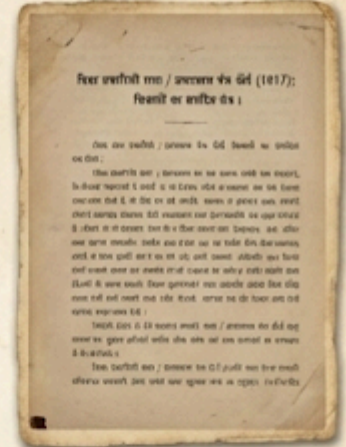
बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग रिपोर्ट (1919): मेवाड़ सरकार की प्रथम जाँच समिति।



द्वितीय चरण: विजय सिंह पथिक (राष्ट्रीय पथिक)। 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' (1917) के संस्थापक।



समाचार पत्र 'प्रताप' (कानपुर): गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान। महात्मा गांधी का समर्थन।



विद्या प्रवारिणी सभा / ऊपरमाल पंच बोर्ड (1917): किसानों का संगठित मंच।



तृतीय चरण: माणिक्य लाल वर्मा (पंछीड़ा गीत के रचयिता)। आंदोलन को अंतिम सफलता दिलाई।



अंतिम समझौता (1941): सर टी. विजयराघवाचार्य और डॉ. मोहन सिंह मेहता के प्रयासों से सफल समापन।

अध्याय 17: बेगूँ और बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक प्रकाशनों के आधार पर तैयार की गई है।

1. बेगूँ किसान आंदोलन (1921-1923): दूसरा बड़ा संघर्ष

मेवाड़ रियासत का बेगूँ ठिकाना बिजोलिया के पड़ोस में स्थित था। यहाँ के किसान भी अत्यधिक लगान और 'लाग-बाग' से त्रस्त थे।

- **आंदोलन का प्रारंभ:** 1921 ई. में चित्तौड़गढ़ के 'भैरूकुण्ड' (मेनाल) नामक स्थान पर किसानों ने एकत्रित होकर आंदोलन का निर्णय लिया।
- **रामनारायण चौधरी का नेतृत्व:** विजय सिंह पथिक के परामर्श पर **रामनारायण चौधरी** ने इस आंदोलन का नेतृत्व संभाला। उन्होंने किसानों को संगठित किया और उनकी मांगों को मेवाड़ सरकार के समक्ष रखा।
- **बोल्शेविक समझौता (Bolshevik Agreement):** 1922 ई. में बेगूँ के ठाकुर **अनूप सिंह** और राजस्थान सेवा संघ के मध्य एक समझौता हुआ, जिसे मेवाड़ सरकार और अंग्रेजों ने 'बोल्शेविक समझौते' की संज्ञा देकर अस्वीकार कर दिया। अनूप सिंह को नज़रबंद कर दिया गया और ठिकाने पर 'मुंसरमात' (राजकीय नियंत्रण) बैठा दी गई।
- **गोविंदपुरा कांड (13 जुलाई, 1923): * घटना:** ट्रेंच कमीशन के आदेश पर ब्रिटिश सेना ने गोविंदपुरा गाँव में एकत्रित किसानों पर अंधाधुंध गोलियां चला दीं।
 - **शहादत:** इस गोलीबारी में **रूपाजी और कृपाजी धाकड़** नामक दो वीर किसान शहीद हो गए।
- **परिणाम:** भारी दमन के बावजूद किसानों का मनोबल नहीं टूटा। अंततः सरकार को झुकना पड़ा और 1925 तक अधिकांश मांगें मान ली गईं।

2. बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन (1922-1925)

बूंदी रियासत के पश्चिमी पथरीले क्षेत्र को 'बरड़' कहा जाता है। यहाँ किसानों पर अत्यधिक लगान के साथ-साथ प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और अत्याचार मुख्य समस्या थी।

- **पंडित नयनूराम शर्मा की भूमिका:** राजस्थान सेवा संघ के सक्रिय सदस्य **नयनूराम शर्मा** ने बरड़ के किसानों को नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने जागीरदारों और पुलिस के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई।
- **डाबी कांड (2 अप्रैल, 1923): * घटना:** डाबी नामक स्थान पर किसानों की एक सभा हो रही थी, जिस पर पुलिस अधीक्षक **इकराम हुसैन** ने गोलियां चलाने का आदेश दिया।
 - **शहादत:** झंडा गीत गाते हुए **नानक जी भील** और **देवीलाल गुर्जर** शहीद हो गए। नानक जी भील की शहादत पर माणिक्य लाल वर्मा ने 'अर्ज़ी' नामक प्रसिद्ध गीत लिखा।
- **आंदोलन का स्वरूप:** इस आंदोलन में महिलाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। 1925 में नयनूराम शर्मा की गिरफ्तारी और राजस्थान सेवा संघ में आपसी विवाद के कारण यह आंदोलन कुछ शिथिल पड़ गया, लेकिन किसानों की चेतना को इसने जीवित रखा।

3. विश्लेषण: बेगूँ और बूंदी आंदोलनों का तुलनात्मक महत्व

बिजोलिया की सफलता ने राजस्थान के किसानों में यह विश्वास पैदा कर दिया था कि 'संगठन' के माध्यम से सामंती सत्ता को चुनौती दी जा सकती है। बेगूँ आंदोलन जहाँ अपने 'बोल्शेविक समझौते' (जिसका अर्थ अंग्रेजों की दृष्टि में साम्यवाद का प्रसार था) के लिए चर्चा में रहा, वहीं बूंदी आंदोलन ने यह सिद्ध किया कि जनजातीय (भील) और पिछड़ी जातियाँ (गुर्जर-धाकड़) मिलकर दमन का सामना कर सकती हैं। इन आंदोलनों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब किसान केवल आर्थिक मांगों तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे अपनी 'राजनीतिक गरिमा' के प्रति भी सजग हो चुके थे।

4. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** बेगूँ आंदोलन की जांच के लिए मेवाड़ सरकार ने 'ट्रेंच' (Mr. Trench) को भेजा था। ट्रेंच ने ही गोविंदपुरा में किसानों पर गोलियां चलवाई थीं।

- **नोट: नयनूराम शर्मा** हाड़ौती प्रजामंडल के भी संस्थापक रहे, जिससे स्पष्ट होता है कि किसान आंदोलनों ने ही प्रजामंडल का आधार तैयार किया।
- कुछ स्रोतों में डाबी कांड की तिथि भिन्न मिलती है, परंतु **आधिकारिक (स्तर-1)** स्रोतों के अनुसार **2 अप्रैल, 1923** ही सर्वाधिक मान्य है।
-

5. आंदोलनों का संक्षिप्त सारांश (त्वरित संदर्भ तालिका)

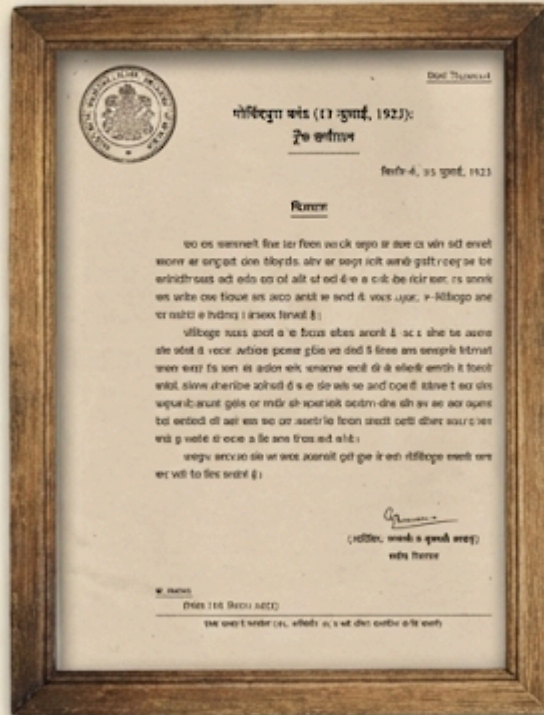
आंदोलन	प्रमुख नेता	शहीद / नायक	मुख्य घटना
बेगूँ	रामनारायण चौधरी	रूपाजी - कृपाजी धाकड़	गोविंदपुरा हत्याकांड (1923)
बूंदी (बरड़)	पं. नयनूराम शर्मा	नानक जी भील, देवीलाल गुर्जर	डाबी हत्याकांड (1923)
अलवर (नीमूचणा)	रामनारायण चौधरी (सहायता)	—	नीमूचणा हत्याकांड (1925)

wincompete

अध्याय 17: बेगूँ और बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र



बेगूँ आंदोलन
नेतृत्व: रामनारायण चौधरी (1921-1923)।
मेवाड़ रियासत के किसानों को संगठित किया।



गोविंदपुरा कांड (13 जुलाई, 1923):
ट्रेंच कमीशन के आदेश पर गोलीबारी।
शहीद: रूपाजी व कृपाजी धाकड़।



बूंदी (बरड़) आंदोलन
नेतृत्व: पं. नयनूराम शर्मा (1922-1925)।
जागीरदारी अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष।



डाबी कांड (2 अप्रैल, 1923):
पुलिस अधीक्षक इकराम हुसैन की गोलीबारी।
शहीद: नानक जी भील (झंडा गीत गाते हुए)
व देवीलाल गुर्जर।

अध्याय 18: अलवर और शेखावाटी किसान आंदोलन

1. अलवर किसान आंदोलन (1921-1925)

अलवर रियासत में किसान आंदोलन के दो मुख्य कारण थे— जंगली सूअरों की समस्या और भू-राजस्व में अत्यधिक वृद्धि।

- **सूअरों की समस्या:** रियासत में जंगली सूअरों को पालने का रिवाज था, जो किसानों की खड़ी फसलों को नष्ट कर देते थे। राजकीय कानून के अनुसार उन्हें मारना निषिद्ध था। 1921 में किसानों ने इसके विरुद्ध आंदोलन किया और अंततः सरकार को उन्हें मारने की अनुमति देनी पड़ी।
- **लगान वृद्धि (1924):** महाराजा **जयसिंह** ने 1924 ई. में नई लगान दरें लागू कीं, जिससे भू-राजस्व में भारी वृद्धि हो गई। इसके विरोध में राजपूत किसानों ने संगठित होकर आंदोलन प्रारंभ किया।

2. नीमूचणा कांड (14 मई, 1925): 'राजस्थान का जलियांवाला बाग'

यह राजस्थान के किसान आंदोलनों के इतिहास की सबसे वीभत्स और दमनकारी घटना मानी जाती है।

- **घटना:** अलवर के बानसूर और थानागाजी तहसील के लगभग 800 किसान **14 मई, 1925** को **नीमूचणा** गाँव में एक सभा कर रहे थे।
- **दमन:** कमांडर **छाजू सिंह** (जिसे राजस्थान का 'जनरल डायर' कहा जाता है) के नेतृत्व में सेना ने किसानों को घेरकर मशीनगनों से अंधाधुंध फायरिंग की। इसमें सैकड़ों किसान शहीद हुए और पूरे गाँव को आग लगा दी गई।
- **गांधीजी की प्रतिक्रिया:** महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'यंग इंडिया' में इस कांड को '**डायरवाद का दोहरा संस्करण (Double Distilled Dyerism)**' कहा और इसे जलियांवाला बाग हत्याकांड से भी अधिक वीभत्स बताया।
- **परिणाम:** इस भीषण नरसंहार के बाद चौतरफा दबाव में आकर महाराजा को पुरानी लगान दरें बहाल करनी पड़ीं।

3. शेखावाटी (जाट) किसान आंदोलन (1922-1947)

शेखावाटी क्षेत्र के '**पंचपाने**' (बिसाऊ, डूंडलोद, झुंझुनू, मंडावा और नवलगढ़) के जागीरदार किसानों का अत्यधिक शोषण करते थे। यहाँ का आंदोलन मुख्य रूप से **जाट** जाति के किसानों द्वारा संचालित था।

- **मुख्य कारण:** सीकर के राव राजा **कल्याण सिंह** द्वारा राजस्व दरों में 25% से 50% तक की भारी वृद्धि करना।
- **नेतृत्व:** **सदर हरलाल सिंह, नेतराम सिंह और पृथ्वी सिंह गोठड़ा** ने इस आंदोलन को कुशल नेतृत्व प्रदान किया।
- **प्रमुख घटनाएँ:**
 - **कटराथल सम्मेलन (1934):** 10,000 महिलाओं का विशाल सम्मेलन (विवरण अध्याय 14 में प्रस्तुत)।
 - **कुडन हत्याकांड (1935):** धापी देवी के प्रोत्साहन पर किसानों ने लगान देने से मना कर दिया। अंग्रेज अधिकारी कैप्टन वेब ने फायरिंग करवाई, जिसमें कई किसान शहीद हुए। इस घटना की चर्चा **ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स)** में भी हुई थी।
 - **जयसिंहपुरा हत्याकांड (1934):** डूंडलोद के ठाकुर के भाई ने निहत्थे किसानों पर गोलियां चलवाईं। यह राजस्थान का पहला मामला था जिसमें किसी जागीरदार को किसानों की हत्या के आरोप में सजा हुई।
- **अंतिम समझौता:** 1947 में हीरालाल शास्त्री की मध्यस्थता से जागीरदारों और किसानों के बीच स्थाई समझौता हुआ।

4. विश्लेषण: अलवर और शेखावाटी के आंदोलनों की विशिष्टता

अलवर का नीमूचणा आंदोलन जहाँ **महाराजा (रियासत)** के विरुद्ध था, वहीं शेखावाटी का आंदोलन सीधे तौर पर **जागीरदारों (ठिकानेदारों)** के विरुद्ध था। अलवर में 'सूअरों' जैसा मुद्दा पारिस्थितिक और आर्थिक संतुलन को दर्शाता है, जबकि शेखावाटी में आंदोलन 'जातिगत स्वाभिमान' और 'जागीरदारी जुल्म' के विरुद्ध था। नीमूचणा कांड ने सिद्ध किया कि रियासती दमनकारी तंत्र ब्रिटिश दमन से कम नहीं था। इन आंदोलनों ने ही आगे चलकर शेखावाटी और अलवर में **प्रजामंडल** की नींव को मजबूत किया।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: मेव किसान आंदोलन (1932-33)** भी अलवर और भरतपुर क्षेत्र में हुआ था, जिसका नेतृत्व **डॉ. मोहम्मद अली** ने किया था। यह सांप्रदायिक मोड़ लेने के कारण अन्य किसान आंदोलनों से भिन्न रहा।
- **नोट:** शेखावाटी के किसानों की सहायता के लिए 'राजस्थान जाट क्षेत्रीय महासभा' (1931) का गठन किया गया था।
- कुछ स्रोतों में नीमूचणा कांड में मृतकों की संख्या भिन्न मिलती है, परंतु **आधिकारिक (स्तर-1)** स्रोतों के अनुसार इसमें लगभग 156 से अधिक किसान शहीद हुए थे।

6. प्रमुख हत्याकांड एवं संबंधित तथ्य (त्वरित संदर्भ तालिका)

घटना / कांड	तिथि	स्थान	मुख्य दमनकारी / अधिकारी	विशेष टिप्पणी
नीमूचणा कांड	14 मई, 1925	अलवर (बानसूर)	कमांडर छाजू सिंह	राजस्थान का जलियांवाला बाग।
जयसिंहपुरा कांड	21 जून, 1934	शेखावाटी	ईश्वरी सिंह	जागीरदार को पहली बार सजा।
कुडन कांड	1935	सीकर	कैप्टन वेब	ब्रिटिश संसद में चर्चा हुई।
खूँडी कांड	1935	सीकर	—	विवाह के अवसर पर किसानों पर हमला।

wincompete

अध्याय 18: अलवर और शेखावाटी किसान आंदोलन - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र



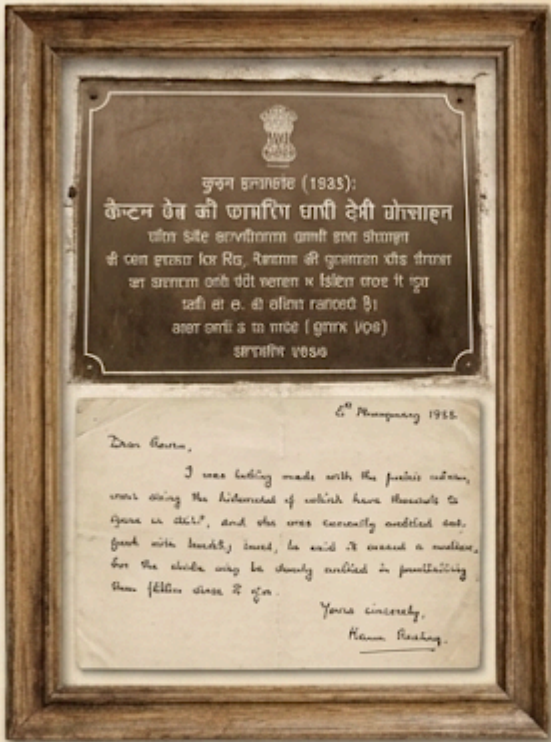
अलवर आंदोलन नेतृत्व (1924):
महाराजा जयसिंह द्वारा लगान वृद्धि का विरोध।
राजपूत किसानों का संघर्ष।



'यंग इंडिया' (महात्मा गांधी):
नीमूचणा कांड (14 मई, 1925) को
'डायरवाद का दोहरा संस्करण' बताया।



शेखावाटी जाट आंदोलन (1922-1947)
नेतृत्व: सरदार हरलाल सिंह, नेतराम सिंह,
पृथ्वी सिंह गोठड़ा।



कुडन हत्याकांड (1935): कैप्टन वेब की
फायरिंग। धापी देवी का प्रोत्साहन।
ब्रिटिश संसद में गूंज।

अध्याय 19: जनजाति आंदोलन: गोविंद गिरी और भगत आंदोलन

1. जनजातीय जागृति की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी के अंत में वागड़ (डूंगरपुर-बांसवाड़ा), मेवाड़ और सिरोही क्षेत्र के भील अत्यंत दयनीय स्थिति में थे। भारी करों, 'बेगार' प्रथा, वन अधिकारों के हनन और शराबखोरी ने उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को जर्जर कर दिया था। इस अंधकारमय समय में **गोविंद गिरी** ने एक मसीहा के रूप में भीलों को संगठित किया।

2. गोविंद गिरी: व्यक्तित्व और वैचारिक आधार

- **जन्म:** 1858 ई. में डूंगरपुर रियासत के **बांसिया** गाँव में एक बंजारा परिवार में।
- **प्रभाव:** गोविंद गिरी महर्षि **दयानन्द सरस्वती** के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। स्वामी जी के परामर्श पर ही उन्होंने भील समाज की सेवा और कुरीतियों के उन्मूलन का मार्ग चुना।
- **भगत आंदोलन:** उन्होंने भीलों को हिंदू धर्म के दायरे में सुधारने के लिए 'भगत आंदोलन' चलाया। उन्होंने 'धूनी' और 'निशान' (ध्वज) को आस्था का प्रतीक बनाया।

3. संप सभा (Samp Sabha) - 1883

गोविंद गिरी ने भीलों को संगठित करने और उनमें एकता स्थापित करने के लिए **1883 ई.** में सिरोही में 'संप सभा' की स्थापना की। 'संप' का अर्थ है—परस्पर प्रेम और सौहार्द।

संप सभा के 'दश नियम' (आचार संहिता):

भीलों के नैतिक उत्थान के लिए गोविंद गिरी ने 10 कड़े नियम बनाए, जिनमें प्रमुख थे:

1. प्रतिदिन स्नान करना और पवित्र रहना।
2. मांस, मदिरा और नशीले पदार्थों का पूर्ण त्याग करना।
3. चोरी और लूटपाट न करना।
4. पंचायत द्वारा विवादों का निपटारा करना (अदालतों में न जाना)।
5. स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना।
6. बच्चों को शिक्षित करना।
7. बेगार (बिना मजदूरी काम) न करना।

4. मानगढ़ नरसंहार (17 नवंबर, 1913): 'राजस्थान का जलियांवाला'

यह राजस्थान के जनजातीय इतिहास की सबसे दुखद और वीरतापूर्ण घटना है।

- **एकत्रीकरण:** अश्विन शुक्ल पूर्णिमा (मार्गशीर्ष मार्गशीर्ष) के अवसर पर संप सभा का वार्षिक अधिवेशन **मानगढ़ पहाड़ी** (बांसवाड़ा-गुजरात सीमा) पर हो रहा था।
- **घेराबंदी:** भीलों की बढ़ती शक्ति से सशंकित होकर अंग्रेजों और रियासती सेनाओं (मेवाड़ भील कोर) ने पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया।
- **दमन:** 17 नवंबर, 1913 को कर्नल शटलर के आदेश पर अंधाधुंध गोलियां चलाई गईं।
- **शहादत:** इस वीभत्स कांड में **1500 से अधिक भील** शहीद हुए। गोविंद गिरी को गिरफ्तार कर लिया गया।
- **महत्व:** इसे राजस्थान का '**प्रथम जलियांवाला बाग**' कहा जाता है (नीमूचणा से भी पहले)।

5. आंदोलन का प्रभाव और अंतिम वर्ष

- **गिरफ्तारी और सजा:** गोविंद गिरी को मृत्युदंड दिया गया, जिसे बाद में आजीवन कारावास और फिर 10 वर्ष की सजा में बदल दिया गया।
- **अंतिम समय:** जेल से रिहा होने के बाद उन पर राजस्थान की रियासतों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उन्होंने अपना अंतिम समय गुजरात के **कम्बोई** (पंचमहल जिला) नामक स्थान पर समाज सेवा में बिताया। **1931 ई.** में उनका देहावसान हुआ।

- **जागृति का प्रसार:** गोविंद गिरी ने भीलों को केवल धार्मिक रूप से ही नहीं, बल्कि 'राजनैतिक' रूप से भी जागरूक किया। उन्होंने उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया, जिसने आगे चलकर 'एकी आंदोलन' का मार्ग प्रशस्त किया।

6. विश्लेषण: भगत आंदोलन का सामाजिक-राजनैतिक स्वरूप

गोविंद गिरी का आंदोलन प्रारंभ में एक 'सुधारवादी आंदोलन' था, जिसका उद्देश्य भीलों को सभ्य बनाना और कुरीतियों से मुक्त करना था। परंतु, जैसे ही भीलों ने 'बेगार' करने से मना किया और अपनी पंचायतें स्थापित कीं, यह आंदोलन 'सामंती व्यवस्था' के लिए चुनौती बन गया। अंग्रेजों ने इसे 'भील राज्य' स्थापित करने की साजिश के रूप में देखा। मानगढ़ का बलिदान यह सिद्ध करता है कि राजस्थान की जनजातियों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ी कीमत चुकाई है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** गोविंद गिरी के शिष्य **पुँजा धीरजी** भी एक प्रमुख भील नेता थे जिन्होंने मानगढ़ के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **नोट:** मानगढ़ पहाड़ी वर्तमान में बांसवाड़ा जिले में स्थित है और इसे 'राष्ट्रीय शहीद स्मारक' के रूप में विकसित किया गया है।
- कुछ पुस्तकों में संप सभा की स्थापना 1903 दी गई है, लेकिन प्रामाणिक **स्तर-1 (डॉ. गोपीनाथ शर्मा)** के अनुसार इसकी स्थापना **1883** में हुई थी और 1903 में इसका प्रथम बड़ा अधिवेशन हुआ था।

8. गोविंद गिरी और संप सभा: एक नजर में (तालिका)

विवरण

तथ्य

संस्थापक	गोविंद गिरी (बांसिया गाँव, डूंगरपुर)
संस्था एवं वर्ष	संप सभा (1883), सिरोही
प्रमुख आंदोलन	भगत आंदोलन
आराध्य स्थल	मानगढ़ पहाड़ी (बांसवाड़ा)
नरसंहार तिथि	17 नवंबर, 1913
मुख्य संदेश	बेगार मुक्त समाज और नैतिक पवित्रता

wincompete

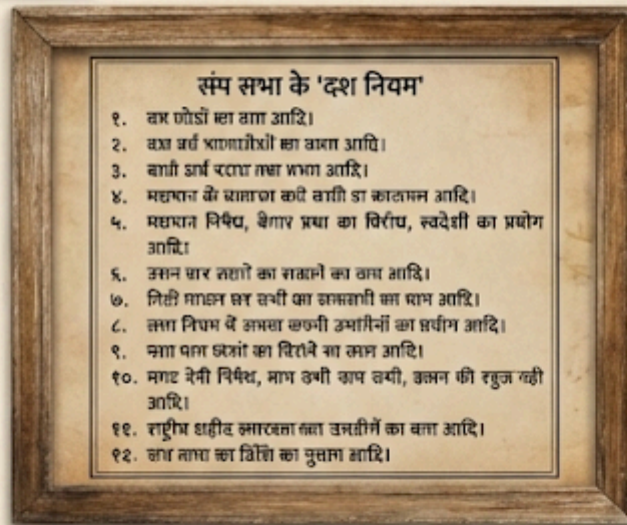
अध्याय 19: जनजाति आंदोलन: गोविंद गिरी और भगत आंदोलन - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र



गोविंद गिरी (1858-1931):
भील समाज सुधारक एवं
'भगत आंदोलन' के प्रणेता।
बांसिया (डूंगरपुर) निवासी।



भगत आंदोलन के प्रतीक: 'धूनी' और 'निशान'।
भीलों में नैतिक एवं सामाजिक सुधार का माध्यम।



संघ सभा के 'दश नियम' (स्थापना: 1883, सिरोही):
मद्यपान निषेध, बेगार प्रथा का विरोध, स्वदेशी का प्रयोग आदि।



मानगढ़ नरसंहार (17 नवंबर, 1913): 'राजस्थान का
जलियांवाला'। कर्नल शटलर के आदेश पर 1500+ भील शहीद।



राष्ट्रीय शहीद स्मारक, मानगढ़ धाम (बांसवाड़ा):
शहीदों की स्मृति में निर्मित स्मारक।

अध्याय 20: एकी आंदोलन: मोतीलाल तेजावत और 'मेवाड़ की पुकार'

1. एकी आंदोलन की पृष्ठभूमि

1913 के मानगढ़ नरसंहार के बाद भील आंदोलन कुछ समय के लिए दब गया था, लेकिन उनकी मूलभूत समस्याएं (अत्यधिक लगान, बेगार, और वन अधिकारों का हनन) यथावत थीं। 1921 ई. में जब पूरे भारत में 'असहयोग आंदोलन' की लहर थी, तब मेवाड़ की भोमट और मगरा बेल्ट के भीलों ने **मोतीलाल तेजावत** के नेतृत्व में पुनः विद्रोह का बिगुल फूँका।

- **आंदोलन का नाम:** 'एकी' का अर्थ है— 'एकता'। इसका उद्देश्य भील और गरसिया जनजातियों को सामंती शोषण के विरुद्ध एक सूत्र में पिरोना था।
- **नारा:** "न हाकिम, न हुकुम" (अर्थात् न कोई शासक होगा और न ही उसका आदेश माना जाएगा)।

2. मोतीलाल तेजावत: 'भीलों के मसीहा'

- **जन्म:** 1885 ई. में उदयपुर की झाड़ोल तहसील के **कोलियारी** गाँव में एक ओसवाल (जैन) परिवार में।
- **प्रारंभिक कार्य:** वे झाड़ोल ठिकाने के कामदार के रूप में कार्य करते थे, जहाँ उन्होंने अपनी आँखों से आदिवासियों पर होने वाले अत्याचारों को देखा। उन्होंने आदिवासियों की सेवा के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी।
- **उपाधियाँ:** भील उन्हें प्यार से '**बावजी**' कहते थे और उन्हें अपना '**मसीहा**' मानते थे।

3. आंदोलन का श्रीगणेश: मातृकुण्डिया (1921)

एकी आंदोलन की औपचारिक शुरुआत **1921 ई.** में चित्तौड़गढ़ जिले की राशमी तहसील में स्थित **मातृकुण्डिया** नामक स्थान से हुई।

- **महत्व:** मातृकुण्डिया को '**राजस्थान का हरिद्वार**' या '**मेवाड़ का हरिद्वार**' कहा जाता है।
- **घटना:** वैशाख पूर्णिमा के मेले के अवसर पर तेजावत ने हजारों भीलों को एकत्रित कर उन्हें लगान और बेगार न देने की शपथ दिलाई। यहीं से उन्होंने मेवाड़ महाराणा को अपनी मांगें भेजने का निर्णय लिया।

4. 'मेवाड़ की पुकार': 21 सूत्री मांग पत्र

मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ प्रशासन और महाराणा फतेह सिंह के समक्ष अपनी मांगों का एक ऐतिहासिक मसौदा तैयार किया, जिसे '**मेवाड़ की पुकार**' कहा जाता है।

प्रमुख मांगें (21 में से मुख्य):

1. लगान (भू-राजस्व) की दरों में भारी कटौती की जाए।
2. 'बेगार' (बिना मजदूरी श्रम) प्रथा को पूर्णतः समाप्त किया जाए।
3. जंगली जानवरों (जैसे सूअर) से फसल रक्षा के लिए उन्हें मारने की अनुमति मिले।
4. वनों से घास, लकड़ी और महुआ (शराब हेतु) एकत्र करने के आदिवासियों के पारंपरिक अधिकार बहाल हों।
5. विभिन्न प्रकार की अवैध 'लाग-बाग' को समाप्त किया जाए।
6. ठिकानेदारों द्वारा की जाने वाली अनैतिक वसूली और उत्पीड़न पर रोक लगे।

परिणाम: महाराणा ने 21 में से **18 मांगें** मान ली थीं, लेकिन तीन महत्वपूर्ण मांगें (वन अधिकार, बेगार और सूअर हत्या) नहीं मानीं, जिसके कारण तेजावत ने आंदोलन जारी रखा।

5. नीमड़ा नरसंहार (7 मार्च, 1922): दूसरा वीभत्स कांड

एकी आंदोलन के दौरान विजयनगर रियासत (वर्तमान गुजरात सीमा) के **नीमड़ा** गाँव में एक भीषण नरसंहार हुआ।

- **घटना:** 7 मार्च, 1922 को तेजावत के नेतृत्व में भीलों का एक विशाल सम्मेलन नीमड़ा में हो रहा था।
- **दमन:** 'मेवाड़ भील कोर' (MBC) के सैनिकों ने मेजर सटन के आदेश पर अंधाधुंध गोलियाँ बरसाईं।

- **शहादत:** इस कांड में **1200 से अधिक भील** शहीद हुए। तेजावत के पैर में गोली लगी, लेकिन भीलों ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।
- **तुलना:** इतिहासकार इसे मानगढ़ के बाद **'दूसरा जलियांवाला बाग'** हत्याकांड कहते हैं।

6. आत्मसमर्पण और अंतिम वर्ष

- **अज्ञातवास:** नीमड़ा कांड के बाद तेजावत वर्षों तक ईडर और सिरौही की पहाड़ियों में छिपे रहे।
- **गांधीजी की भूमिका:** महात्मा गांधी के संदेशवाहक **मणिलाल कोठारी** के परामर्श पर तेजावत ने **1929 ई.** में ईडर (गुजरात) में आत्मसमर्पण कर दिया।
- **जेल और रिहाई:** उन्हें उदयपुर की केंद्रीय जेल में रखा गया। 1936 ई. में उन्हें इस शर्त पर रिहा किया गया कि वे बिना अनुमति मेवाड़ से बाहर नहीं जाएंगे।
- **सामाजिक कार्य:** उन्होंने अपना शेष जीवन भीलों के सामाजिक उत्थान और गांधीवादी विचारों के प्रचार में लगाया। **1963 ई.** में उनका निधन हुआ।

7. एकी आंदोलन का बहुआयामी प्रभाव

एकी आंदोलन केवल एक 'कर-विरोधी' आंदोलन नहीं था, बल्कि यह आदिवासियों का अपनी **'वन-संपदा'** और **'स्वतंत्र जीवनशैली'** को बचाने का एक हताश प्रयास था। तेजावत ने जैन होकर भी मांसाहार और मदिरा त्यागने की जो शपथ भीलों को दिलाई, उसने आंदोलन को एक 'नैतिक स्वरूप' प्रदान किया। 'मेवाड़ की पुकार' ने सिद्ध किया कि आदिवासी अब अपने अधिकारों के प्रति इतने सजग हो गए थे कि वे लिखित रूप में शासन को चुनौती दे सकते थे। यह आंदोलन आगे चलकर **प्रजामंडल** की नींव को ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाने का सेतु बना।

8. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** मोतीलाल तेजावत ने सिरौही में भी **'गरासिया जनजाति'** को संगठित किया था, जिसके कारण 1922 में सिरौही के सियावा और रोहिड़ा क्षेत्रों में भी दमन हुआ था।
- **नोट:** तेजावत को आदिवासियों का 'बावजी' कहा जाता है, जबकि गोविंद गिरी को 'गुरु' माना जाता है।
- **विशेष:** एकी आंदोलन का विस्तार केवल मेवाड़ तक नहीं, बल्कि ईडर, सिरौही, विजयनगर और डूंगरपुर तक था।

9. एकी आंदोलन: मुख्य विवरण (त्वरित संदर्भ तालिका)

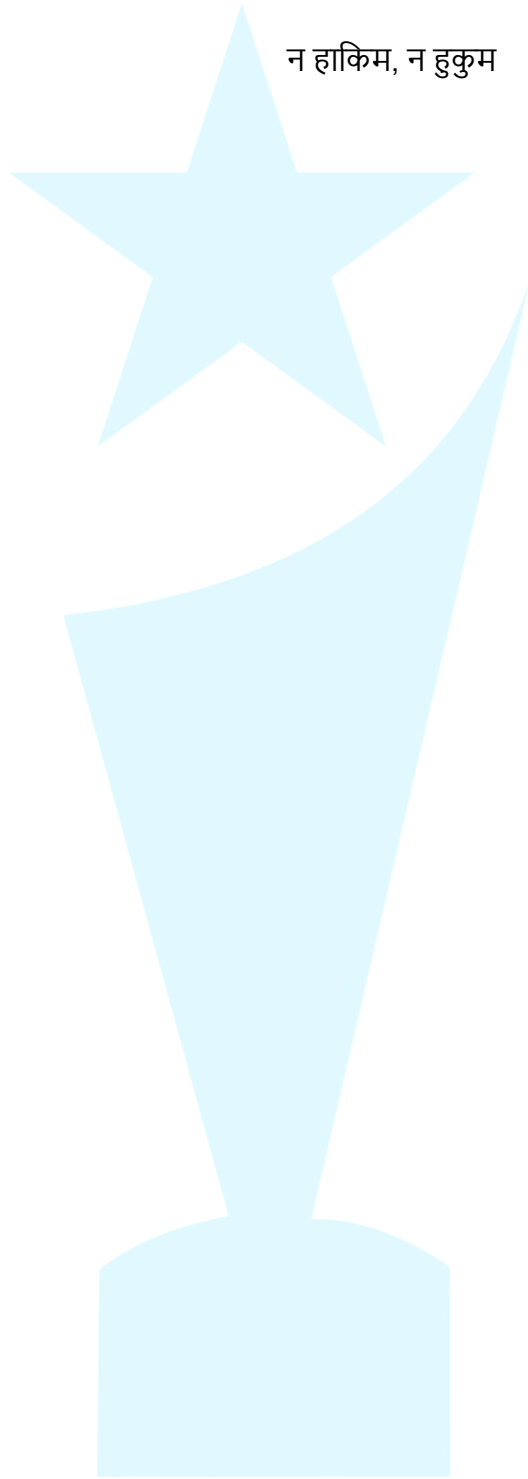
विवरण	तथ्य
मुख्य नेता	मोतीलाल तेजावत (बावजी)
प्रारंभ स्थल	मातृकुण्डिया (चित्तौड़गढ़), 1921
प्रमुख मांग पत्र	मेवाड़ की पुकार (21 सूत्री)
विभाजनकारी हत्याकांड	नीमड़ा नरसंहार (7 मार्च, 1922)

मुख्य लक्ष्य

बेगार मुक्ति और वन अधिकारों की बहाली

नारा

न हाकिम, न हुकुम



wincompete

अध्याय 20: एकी आंदोलन: मोतीलाल तेजावत और 'मेवाड़ की पुकार' - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र



मोतीलाल तेजावत ('बावजी') (1885-1963) - एकी आंदोलन के प्रणेता। झाड़ोल, उदयपुर निवासी।



एकी आंदोलन का प्रारंभ: मातृकुण्डिया (1921) - 'मेवाड़ का हरिद्वार'। भीलों का विशाल सम्मेलन।



1. 'मेवाड़ की पुकार' पत्र - महाराणा को प्रस्तुत।
2. बेगार व वन अधिकारों की मांग।
3. प्रशासनिक सुधार व अधिकारों की मांग।
4. भीलों का प्रशासनिक व शैक्षणिक सुधार।
5. भीलों का अधिकार पत्र प्रस्तुत करना।
6. जंगल अधिकार विचारों को जंगल बेगार व वन अधिकारों की मांग।
7. प्रशासनिक सुधारों के अभाव में जनता दुःखित की मांग।
8. प्रशासनिक सुधार व सुधारों की मांग।
9. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
10. जंगल अधिकारों की मांग।
11. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
12. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
13. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
14. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
15. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
16. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
17. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
18. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
19. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
20. जंगल व वन अधिकारों की मांग।
21. जंगल व वन अधिकारों की मांग।

'मेवाड़ की पुकार' (21 सूत्री मांग पत्र) - महाराणा को प्रस्तुत। बेगार व वन अधिकारों की मांग।



नीमड़ा नरसंहार (7 मार्च, 1922) - 1200+ भील शहीद। 'दूसरा जलियांवाला बाग'। नारा: 'न हाकिम, न हुकुम'।

प्रजामंडल आंदोलन और राजस्थान का एकीकरण

अध्याय 21: जयपुर और मेवाड़ प्रजामंडल - संगठन और संघर्ष

1. प्रजामंडल आंदोलनों का उदय: एक परिचय

राजस्थान की रियासतों में 'प्रजामंडल' (प्रजा का मंडल/संगठन) की स्थापना का मुख्य उद्देश्य 'रियासती राजाओं के संरक्षण में उत्तरदायी शासन (Responsible Government) की स्थापना' और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा था। 1938 के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के बाद इन आंदोलनों ने तीव्र गति पकड़ी।

2. जयपुर प्रजामंडल: राजस्थान का प्रथम प्रजामंडल

जयपुर प्रजामंडल राजस्थान में स्थापित होने वाला पहला प्रजामंडल था। इसका इतिहास दो चरणों में विभाजित है:

A. प्रथम चरण (1931): स्थापना

- **संस्थापक:** कपूर चंद पाटनी।
- **स्थिति:** 1931 ई. में इसकी स्थापना हुई, परंतु रियासती सरकार के असहयोग और प्रभावी नेतृत्व की कमी के कारण यह संस्था कुछ वर्षों तक निष्क्रिय रही।

B. द्वितीय चरण (1936-1938): पुनर्गठन और सक्रियता

- **पुनर्गठन (1936):** सेठ जमनालाल बजाज के प्रयासों और हीरालाल शास्त्री के सहयोग से इसका पुनर्गठन किया गया।
- **प्रथम अधिवेशन (1938):** जयपुर प्रजामंडल का पहला अधिवेशन मई 1938 में जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में हुआ। इसमें उत्तरदायी शासन की मांग को प्रमुखता से उठाया गया।
- **1939 का सत्याग्रह:** जब जयपुर रियासत ने प्रजामंडल के पंजीकरण पर रोक लगा दी और जमनालाल बजाज के जयपुर प्रवेश को प्रतिबंधित कर दिया, तो प्रजामंडल ने सत्याग्रह प्रारंभ किया। बजाज जी ने गिरफ्तारी दी, जिससे यह आंदोलन राष्ट्रीय चर्चा में आ गया।
- **जेंटलमैन एग्रीमेंट (1942):** भारत छोड़ो आंदोलन के समय हीरालाल शास्त्री (प्रजामंडल अध्यक्ष) और जयपुर के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य एक ऐतिहासिक समझौता हुआ। इसके तहत प्रजामंडल 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय भाग नहीं लेगा, और सरकार भविष्य में उत्तरदायी शासन की दिशा में कदम उठाएगी।

3. मेवाड़ प्रजामंडल (1938): सामंती दमन के विरुद्ध मोर्चा

मेवाड़ (उदयपुर) में प्रजामंडल की स्थापना सामंती अत्याचारों और नागरिक अधिकारों के हनन के विरुद्ध एक बड़ी राजनैतिक क्रांति थी।

- **स्थापना:** 24 अप्रैल, 1938।
- **स्थान:** उदयपुर में 'साहित्य कुटीर' (बलवंत सिंह मेहता का निवास)।
- **प्रथम अध्यक्ष:** बलवंत सिंह मेहता।
- **मुख्य सूत्रधार:** माणिक्य लाल वर्मा (महामंत्री)।
- **दमन और निर्वासन:** मेवाड़ सरकार ने स्थापना के तुरंत बाद प्रजामंडल को अवैध घोषित कर दिया। माणिक्य लाल वर्मा को मेवाड़ से निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने अजमेर (नया गाँव) को अपना केंद्र बनाया और वहीं से आंदोलन का संचालन किया।
- **प्रथम अधिवेशन (1941):** प्रजामंडल पर से प्रतिबंध हटने के बाद नवंबर 1941 में उदयपुर में इसका प्रथम अधिवेशन हुआ। इसकी अध्यक्षता माणिक्य लाल वर्मा ने की और उद्घाटन आचार्य कृपलानी ने किया। इसमें श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने भी भाग लिया।
- **1942 की भूमिका:** मेवाड़ प्रजामंडल ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय भूमिका निभाई। "नाराज मत हो, मेवाड़ छोड़ो" के नारों के साथ कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारियां दीं।

4. प्रमुख व्यक्तित्वों की भूमिका

A. कपूर चंद पाटनी:-इन्होंने राजस्थान में प्रजामंडल की अवधारणा को सबसे पहले संस्थागत स्वरूप दिया। यद्यपि 1931 में उनका प्रयास सीमित रहा, लेकिन उन्होंने जयपुर में जन-चेतना की नींव रखी।

B. सेठ जमनालाल बजाज:-बजाज जी ने जयपुर प्रजामंडल को न केवल आर्थिक संबल दिया, बल्कि उसे राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। उन्होंने गांधीवादी मूल्यों (खादी, अस्पृश्यता निवारण) को प्रजामंडल के कार्यक्रमों का हिस्सा बनाया। उनके नेतृत्व ने सिद्ध किया कि पूंजीपति वर्ग भी स्वतंत्रता संग्राम में अग्रगामी हो सकता है।

C. माणिक्य लाल वर्मा:-वर्मा जी मेवाड़ प्रजामंडल की 'रीढ़' थे। बिजोलिया किसान आंदोलन के अनुभवों को उन्होंने प्रजामंडल के राजनैतिक ढांचे में समाहित किया। उनके ओजस्वी गीतों और संगठनात्मक क्षमता ने मेवाड़ के सुदूर पहाड़ी अंचलों तक 'स्वतंत्रता' के संदेश को पहुँचाया।

5. विश्लेषण: जयपुर और मेवाड़ प्रजामंडल की रणनीतियों में अंतर

जयपुर प्रजामंडल का चरित्र **'समझौतावादी और सुधारात्मक'** अधिक था, जो 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' के रूप में स्पष्ट हुआ। इसका मुख्य जोर प्रशासनिक सुधारों पर था। इसके विपरीत, मेवाड़ प्रजामंडल का चरित्र **'संघर्षपूर्ण और जन-आधारित'** था। माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व में मेवाड़ प्रजामंडल ने सीधे तौर पर महाराणा और सामंती सत्ता को चुनौती दी। जयपुर प्रजामंडल जहाँ 'संवैधानिक सुधारों' की ओर अग्रसर था, वहीं मेवाड़ प्रजामंडल ने किसानों और आदिवासियों को भी राजनैतिक अधिकारों से जोड़कर आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया।

6. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य:** जयपुर प्रजामंडल के दौरान 'आजाद मोर्चा' (बाबा हरिश्चंद्र द्वारा गठित) ने 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' का विरोध किया और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।
- **नोट:** मेवाड़ प्रजामंडल के अधिवेशन (1941) में आचार्य कृपलानी का आना यह दर्शाता है कि कांग्रेस अब रियासती मामलों में कितनी गंभीर हो चुकी थी।
- कुछ स्रोतों में प्रजामंडल का उद्देश्य 'राजशाही का अंत' बताया जाता है, लेकिन आधिकारिक तौर पर उनका लक्ष्य **'राजा के संरक्षण में उत्तरदायी शासन'** था, न कि पूर्ण गणतंत्र।

7. जयपुर और मेवाड़ प्रजामंडल: तुलनात्मक सारणी

विशेषता	जयपुर प्रजामंडल	मेवाड़ प्रजामंडल
स्थापना वर्ष	1931 (पुनर्गठन 1936-38)	1938
प्रमुख नेता	पाटनी, बजाज, हीरालाल शास्त्री	माणिक्य लाल वर्मा, बलवंत सिंह मेहता
मुख्य नारा/घटना	जेंटलमैन एग्रीमेंट (1942)	"नाराज मत हो, मेवाड़ छोड़ो"
मुख्य प्रतिद्वंद्वी	सर मिर्जा इस्माइल (प्रधानमंत्री)	सर टी. विजयराघवाचार्य (प्रधानमंत्री)
उद्घाटनकर्ता (अधिवेशन)	सेठ जमनालाल बजाज	आचार्य जे.बी. कृपलानी

अध्याय 21: जयपुर और मेवाड़ प्रजामंडल - संगठन और संघर्ष (ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र)

मुख्य उद्देश्य: रियासती राजाओं के संरक्षण में उत्तरदायी शासन (Responsible Government) की स्थापना।

जयपुर प्रजामंडल (स्थापना 1931/1938):
राजस्थान का प्रथम



1939 सत्याग्रह: जमनालाल बजाज की गिरफ्तारी।

जेटलवैन एग्रीमेंट (1942):
हीरालाल शास्त्री व सर मिर्जा इस्माइल के मध्य समझौता (भारत छोड़ो आंदोलन में निष्पक्षता)।

मेवाड़ प्रजामंडल (स्थापना 1938):
सामंती दमन के विरुद्ध मोर्चा



प्रथम अधिवेशन, उदपपुर (1941):
उद्घाटनकर्ता आचार्य जे.बी. कृपलानी।

1942 संघर्ष नारा:
'नाराज मत हो, मेवाड़ छोड़ो'।



कपूर चंद पाटनी: जयपुर में
जन-चेतना के नींव निर्माता
(संस्थापक 1931)।



सेठ जमनालाल बजाज:
प्रजामंडल को राष्ट्रीय आंदोलन से
जोड़ने वाले गांधीवादी नेता।



माणिक्य लाल वर्मा:
मेवाड़ प्रजामंडल की 'रीढ़' व
ओजस्वी संगठक।



जयपुर रणनीति: 'समझौतावादी और सुधारात्मक'
(प्रशासनिक सुधारों पर जोर)।



मेवाड़ रणनीति: 'संघर्षपूर्ण और जन-आधारित'
(सामंती सत्ता को सीधी चुनौती)।

स्रोत: डॉ. गोपीनाथ शर्मा, ब्रह्मचंद्र जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक लाक्षण।

अध्याय 22: मारवाड़, बीकानेर और हाड़ौती प्रजामंडल - दमन और प्रतिरोध

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम' के प्रामाणिक साक्ष्यों पर आधारित है।

1. मारवाड़ प्रजामंडल (1934): नागरिक अधिकारों का संघर्ष

मारवाड़ (जोधपुर) में राजनैतिक चेतना का संघर्ष राजस्थान में सबसे लंबा और तीखा रहा। यहाँ सामंती दमन और प्रशासनिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'लोकनायक' जयनारायण व्यास ने मोर्चा संभाला।

- **स्थापना:** 1934 ई. में जोधपुर में।
- **अध्यक्ष:** भंवरलाल सर्राफ।
- **मुख्य सूत्रधार:** जयनारायण व्यास और आनंदमल सुराणा।
- **साहित्यिक प्रहार:** जयनारायण व्यास ने 'पोपां बाई री पोल' और 'मारवाड़ की अवस्था' नामक लघु पुस्तिकाओं के माध्यम से जोधपुर रियासत के कुशासन का पर्दाफाश किया।
- **रियासती दमन:** सरकार ने प्रजामंडल को अवैध घोषित कर व्यास जी को रियासत से निष्कासित कर दिया। उन्होंने ब्यावर और मुंबई को अपना केंद्र बनाकर 'अखंड भारत' (मुंबई) और 'आगीबाण' (ब्यावर) के माध्यम से संघर्ष जारी रखा।
- **बालमुकुंद बिस्सा का बलिदान:** 1942 के आंदोलन के दौरान जेल में अमानवीय व्यवहार और भूख हड़ताल के कारण बालमुकुंद बिस्सा शहीद हो गए। उन्हें 'राजस्थान का जतिन दास' कहा जाता है।
- **चंडावल और डाबड़ा कांड:** इन घटनाओं ने मारवाड़ प्रजामंडल के संघर्ष को किसानों की पीड़ा से जोड़ दिया।

2. बीकानेर प्रजामंडल (1936): 'कलकत्ता' में स्थापना

बीकानेर रियासत में महाराजा गंगा सिंह का शासन था। यहाँ राजनैतिक गतिविधियों पर कठोर प्रतिबंध था, जिसके कारण प्रजामंडल की स्थापना रियासत से बाहर करनी पड़ी।

- **स्थापना:** 4 अक्टूबर, 1936।
- **स्थान:** कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता)। यह राजस्थान का दूसरा प्रजामंडल था जिसकी स्थापना रियासत से बाहर हुई।
- **संस्थापक एवं अध्यक्ष:** मघाराम वैद्य। उनके साथ भिक्षालाल बोहरा और लक्ष्मण दास स्वामी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **दमन की पराकाष्ठा:** महाराजा गंगा सिंह ने बीकानेर में प्रजामंडल के प्रवेश पर रोक लगा दी। मघाराम वैद्य को निष्कासित कर दिया गया।
- **बीकानेर षड्यंत्र केस:** रियासती सरकार ने स्वामी गोपाल दास, सत्यनारायण सर्राफ और अन्य कार्यकर्ताओं पर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर उन्हें जेल में डाल दिया।
- **दूधवा खारा आंदोलन:** प्रजामंडल के समर्थन से हनुमान सिंह आर्य के नेतृत्व में किसानों ने जागीरदारी जुल्मों के विरुद्ध संघर्ष किया। 1946 में बीरबल सिंह (रायसिंहनगर) की शहादत ने बीकानेर में राजनैतिक चेतना की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

3. हाड़ौती और कोटा प्रजामंडल (1934/1939)

हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, झालावाड़) में जन-जागृति का श्रेय पंडित नयनूराम शर्मा को जाता है।

- **हाड़ौती प्रजामंडल (1934):** पंडित नयनूराम शर्मा ने इसकी स्थापना की। इनका मुख्य ध्यान किसानों की समस्याओं और 'बेगार' प्रथा के उन्मूलन पर था। प्रशासनिक उदासीनता के कारण यह संस्था अधिक सक्रिय नहीं रह सकी।
- **कोटा प्रजामंडल (1939):** नयनूराम शर्मा ने अभिन्न हरि के सहयोग से 1939 में इसका पुनर्गठन 'कोटा प्रजामंडल' के रूप में किया।
- **उपलब्धियाँ:** कोटा प्रजामंडल ने रियासत में उत्तरदायी शासन की मांग के साथ-साथ शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर बल दिया।
- **दमन:** 1941 में नयनूराम शर्मा की अज्ञात हत्या हो गई, जिससे आंदोलन को गहरा धक्का लगा। इसके बाद अभिन्न हरि ने नेतृत्व संभाला। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कोटा में अभूतपूर्व जन-विद्रोह हुआ और लगभग **तीन दिनों तक शहर पर जनता का अधिकार** रहा।

4. प्रमुख व्यक्तित्वों का योगदान

A. जयनारायण व्यास:

व्यास जी मारवाड़ के निर्भीक सेनानी थे। उन्होंने सामंती अत्याचारों को केवल सहा नहीं बल्कि उन्हें चुनौती दी। वे एक कुशल पत्रकार, लेखक और वक्ता थे। उन्होंने 'तरुण राजस्थान' का संपादन कर पूरे राजपूताना की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया।

B. मघाराम वैद्य:

बीकानेर जैसी कठोर रियासत में, जहाँ 'महाराजा' के विरुद्ध बोलना असंभव माना जाता था, मघाराम वैद्य ने कलकत्ता में रहकर प्रजामंडल का झंडा बुलंद रखा। उन्होंने बीकानेर के दमनकारी कानूनों के विरुद्ध राष्ट्रीय जनमत तैयार किया।

C. पंडित नयनूराम शर्मा:

वे हाड़ौती क्षेत्र के 'राजनैतिक भीष्म' थे। राजस्थान सेवा संघ के माध्यम से उन्होंने बरड़ किसान आंदोलन का नेतृत्व किया और बाद में प्रजामंडल के माध्यम से कोटा-बूंदी में नागरिक अधिकारों की नींव रखी।

5. दमन और प्रतिरोध का तुलनात्मक स्वरूप

मारवाड़, बीकानेर और कोटा—इन तीनों रियासतों में प्रजामंडल का संघर्ष भिन्न था। मारवाड़ में संघर्ष 'नागरिक स्वतंत्रता' और 'जागीरदारी उन्मूलन' पर केंद्रित था। बीकानेर में यह संघर्ष 'राजा की निरंकुशता' के विरुद्ध 'अस्तित्व' की लड़ाई थी (कलकत्ता में स्थापना इसका प्रमाण है)। वहीं हाड़ौती/कोटा में यह 'सामाजिक न्याय' और 'बेगार मुक्ति' से प्रेरित था। इन तीनों क्षेत्रों के आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि दमन जितना कठोर होगा, प्रतिरोध उतना ही संगठित होगा। बीकानेर का 'षड्यंत्र केस' और मारवाड़ की 'बिस्सा की शहादत' प्रजामंडल इतिहास के सबसे प्रेरणादायी अध्याय हैं।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** जयनारायण व्यास को 'शेर-ए-राजस्थान', 'लोकनायक' और 'धुन के धनी' के रूप में जाना जाता है।
- **नोट:** बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना कलकत्ता में होने के पीछे मुख्य कारण बीकानेर का 'सार्वजनिक सुरक्षा कानून' था, जिसने किसी भी संगठन पर प्रतिबंध लगा रखा था।
- **विशेष:** 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में कोटा प्रजामंडल की भूमिका सबसे क्रांतिकारी रही, जहाँ कोतवाली पर तिरंगा फहराया गया और प्रशासन जनता के हाथ में आ गया।

7. प्रजामंडल तुलनात्मक सारांश (तालिका)

प्रजामंडल	स्थापना वर्ष	संस्थापक / नेता	मुख्य घटना / दमन
मारवाड़	1934	जयनारायण व्यास, भंवरलाल सर्राफ	बालमुकुंद बिस्सा की शहादत (1942)।
बीकानेर	1936	मघाराम वैद्य	स्थापना कलकत्ता में; बीकानेर षड्यंत्र केस।
हाड़ौती	1934	पं. नयनूराम शर्मा	बेगार विरोधी आंदोलन।

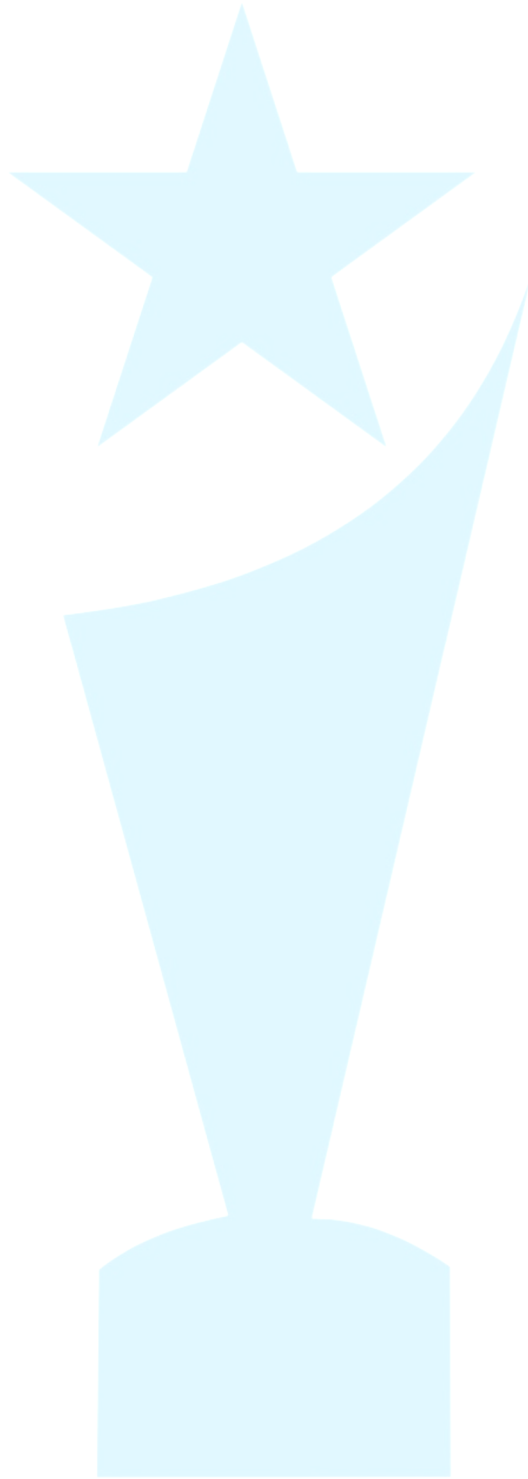
wincompete

कोटा

1939

नयनूराम शर्मा, अभिन्न हरि

1942 में शहर पर जनता का
अधिकार।

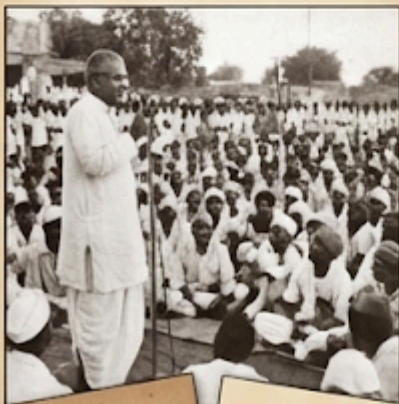


wincompete

अध्याय 22: मारवाड़, बीकानेर और हाड़ौती प्रजामंडल - दमन और प्रतिरोध (ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र)

मुख्य संघर्ष: नागरिक अधिकार, जागीरदारी उन्मूलन और राजा की निरंकुशता का प्रतिरोध।

मारवाड़ प्रजामंडल (स्थापना 1934): 'लोकनायक' जयनारायण व्यास का संघर्ष।



बालमुकुंद बिस्सा की शहादत (1942): 'राजस्थान का जतिन दास'।

बीकानेर प्रजामंडल (स्थापना 1936, कलकत्ता): महाराजा गंगा सिंह का दमन।



बीरबल सिंह की शहादत (1946): दूधवा खारा आंदोलन का प्रतीक।

हाड़ौती/कोटा प्रजामंडल (1934/1939): पं. नयनूराम शर्मा का सामाजिक न्याय संघर्ष।



हाड़ौती/कोटा प्रजामंडल का मनतर गहासत 'बेहगर'।



1942 जन-विद्रोह: कोटा शहर पर जनता का अधिकार।

अध्याय 23: अन्य रियासतों में प्रजामंडल (अलवर, भरतपुर, धौलपुर, जैसलमेर)

1. अलवर प्रजामंडल (1938): सामाजिक सुधार से राजनीति तक

अलवर में राजनीतिक चेतना का मार्ग सामाजिक सुधारों से होकर गुजरा। यहाँ प्रजामंडल ने न केवल उत्तरदायी शासन की मांग की, बल्कि दलित उत्थान पर भी विशेष बल दिया।

- **स्थापना: 1938 ई.**
- **प्रमुख नेता: हरिनारायण शर्मा और कुंज बिहारी लाल मोदी।**
- **हरिनारायण शर्मा की भूमिका:** शर्मा जी ने अलवर में 'अस्पृश्यता निवारण संघ' और 'वाल्मीकि संघ' की स्थापना की। उन्होंने समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ा। उनके प्रयासों से ही अलवर में प्रजामंडल को एक मजबूत सामाजिक आधार प्राप्त हुआ।
- **उत्तरदायी शासन:** 1946 में प्रजामंडल के दबाव में आकर महाराजा ने 'संवैधानिक समिति' का गठन किया, लेकिन वास्तविक सत्ता सौंपने में देरी की, जिसके विरुद्ध प्रजामंडल ने आंदोलन जारी रखा।

2. भरतपुर प्रजामंडल (1938): रेवाड़ी (हरियाणा) में स्थापना

भरतपुर रियासत ब्रिटिश प्रांतों (आगरा-मथुरा) के निकट होने के कारण राजनीतिक रूप से अधिक सजग थी। यहाँ के महाराजा प्रजामंडल की गतिविधियों के प्रति अत्यंत सख्त थे।

- **स्थापना: 1938 ई.** में (रियासत में प्रतिबंध के कारण रेवाड़ी में इसकी स्थापना हुई)।
- **अध्यक्ष: गोपीलाल यादव।**
- **प्रमुख व्यक्तित्व:** मास्टर आदित्येंद्र, युगल किशोर चतुर्वेदी (जिन्हें 'राजस्थान का नेहरू' कहा जाता है) और किशन लाल जोशी।
- **गोपीलाल यादव की भूमिका:** उन्होंने प्रजामंडल के माध्यम से 'बृज प्रतिनिधि समिति' के गठन की मांग की ताकि शासन में जनता की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय गोपीलाल यादव के नेतृत्व में भरतपुर में व्यापक गिरफ्तारियां हुईं।

3. धौलपुर प्रजामंडल (1936) और तसीमो कांड

धौलपुर में प्रजामंडल आंदोलन ने किसानों के अधिकारों और राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान के लिए बड़ा संघर्ष किया।

- **स्थापना: 1936 ई.**
- **संस्थापक: कृष्ण दत्त पालीवाल, ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु और जोहरी लाल इंदु।**
- **तसीमो कांड (11 अप्रैल, 1947):** धौलपुर प्रजामंडल के इतिहास की सबसे गौरवशाली घटना। तसीमो गाँव में एक सभा के दौरान तिरंगा फहराने पर पुलिस ने गोलीबारी की, जिसमें **पंचम सिंह** और **छत्तर सिंह** शहीद हो गए। यह घटना धौलपुर में राजशाही के अंत की प्रस्तावना बनी।

4. जैसलमेर: दमन की पराकाष्ठा और सागर मल गोपा

जैसलमेर राजस्थान की सबसे पिछड़ी और निरंकुश रियासत थी, जिसे 'राजस्थान का अंडमान' भी कहा जाता था। यहाँ प्रजामंडल की स्थापना सबसे अंत में संभव हो सकी।

- **सागर मल गोपा का बलिदान: * साहित्यिक प्रहार:** उन्होंने '**जैसलमेर का गुंडाराज**', 'आजादी के दीवाने' और 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' जैसी पुस्तकें लिखकर महाराणा जवाहर सिंह के कुशासन की पोल खोली।
 - **अमानवीय यातनाएं:** उन्हें राजद्रोह के आरोप में जेल में डाल दिया गया, जहाँ जेलर गुमान सिंह ने उन्हें अमानवीय यातनाएं दीं।
 - **शहादत: 3 अप्रैल, 1946** को उन्हें जेल में ही मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया। उनकी शहादत ने पूरे राजस्थान में आक्रोश की लहर पैदा कर दी।
- **प्रजामंडल की स्थापना (1945):** सागर मल गोपा के संघर्ष के बीच **मीठा लाल व्यास** ने **जोधपुर** में जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना की।

5. पूर्वी बनाम पश्चिमी रियासतों का संघर्ष

अलवर, भरतपुर और धौलपुर जैसी पूर्वी रियासतों में आंदोलन का स्वरूप 'सामूहिक और संगठनात्मक' था क्योंकि वे ब्रिटिश प्रांतों के सीधे संपर्क में थे। इसके विपरीत, जैसलमेर जैसे सुदूर पश्चिमी क्षेत्रों में संघर्ष 'व्यक्तिगत और बलिदानपरक' था। सागर मल गोपा का बलिदान यह सिद्ध करता है कि जहाँ दमन की सीमाएं सबसे अधिक थीं, वहाँ प्रतिरोध की कीमत भी सबसे अधिक (प्राणों की आहुति) चुकानी पड़ी। इन सभी आंदोलनों का साझा परिणाम यह हुआ कि 1947 तक राजाओं ने यह स्वीकार कर लिया कि अब जनता को सत्ता में साझीदार बनाना अपरिहार्य है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** युगल किशोर चतुर्वेदी को उनकी वैचारिक स्पष्टता के कारण 'राजस्थान का नेहरू' कहा जाता है।
- **नोट:** सागर मल गोपा हत्याकांड की जांच के लिए 'गोपाल स्वरूप पाठक आयोग' का गठन किया गया था, जिसने इसे आत्महत्या करार दिया, जिसे जनता ने कभी स्वीकार नहीं किया।
- **विशेष:** जैसलमेर रियासत ने प्रजामंडल को कभी आधिकारिक मान्यता नहीं दी, अंततः भारत में विलय के साथ ही वहाँ लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू हुई।

7. प्रजामंडल सारांश (तालिका)

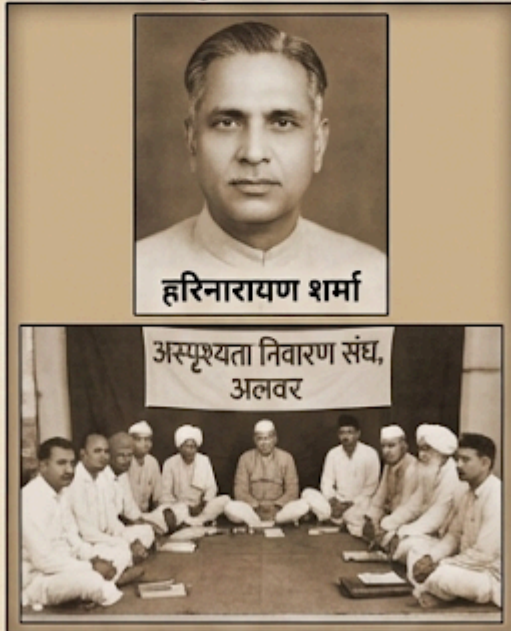
रियासत	स्थापना वर्ष	मुख्य नेता	विशेष घटना / तथ्य
धौलपुर	1936	कृष्ण दत्त पालीवाल	तसीमो कांड (पंचम सिंह, छत्तर सिंह शहीद)।
अलवर	1938	हरिनारायण शर्मा	अस्पृश्यता निवारण एवं सामाजिक सुधार।
भरतपुर	1938	गोपीलाल यादव	स्थापना रेवाड़ी (हरियाणा) में हुई।
जैसलमेर	1945	मीठा लाल व्यास	सागर मल गोपा की जेल में शहादत (1946)।

wincompete

अध्याय 23: अन्य रियासतों में प्रजामंडल (अलवर, भरतपुर, धौलपुर, जैसलमेर) - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र

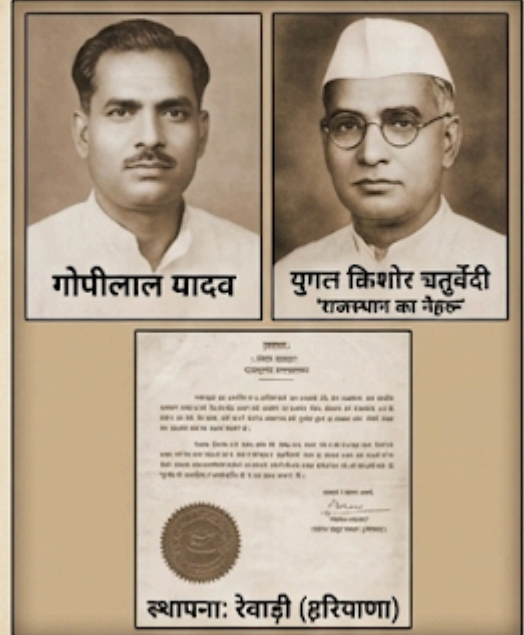
मुख्य संघर्ष: सामाजिक सुधार, तिरंगे का सम्मान और व्यक्तिगत बलिदान।

अलवर प्रजामंडल (स्थापना 1938):
सामाजिक सुधार से राजनीति तक।



हरिनारायण शर्मा का नेतृत्व: दलित उत्थान
और उत्तरदायी शासन की मांग।

भरतपुर प्रजामंडल (स्थापना 1938, रेवाड़ी):



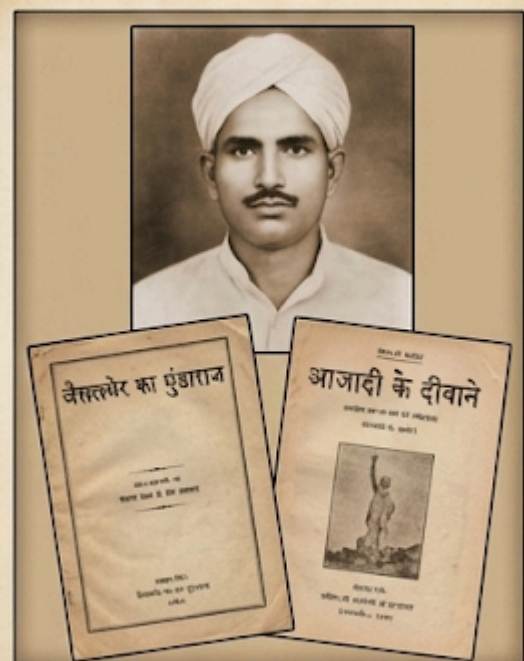
गोपीलाल यादव व युगत किशोर चतुर्वेदी का
संघर्ष। 1942 आंदोलन में सक्रियता।

धौलपुर प्रजामंडल (1936) और तसीमो कांड:



तसीमो कांड (1947): तिरंगे की रक्षा में
शहीदों का बलिदान।

जैसलमेर: दमन की पराकाष्ठा और सागर मल गोपा।



सागर मल गोपा की शहादत (1946): अमानवीय
यातनाओं के विरुद्ध 'व्यक्तिगत बलिदान'।

स्रोत: डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक साक्ष्य।

अध्याय 24: राजस्थान का एकीकरण: प्रथम से चतुर्थ चरण (मत्स्य संघ से वृहद् राजस्थान)

1. एकीकरण की पृष्ठभूमि: रियासती विभाग (States Department)

भारत की आजादी के समय राजस्थान (तत्कालीन राजपूताना) में 19 रियासतें, 3 ठिकाने (कुशलगढ़, लावा, नीमराणा) और 1 केंद्र शासित प्रदेश (अजमेर-मेरवाड़ा) थे।

- रियासती विभाग की स्थापना: 5 जुलाई, 1947।
- अध्यक्ष: सरदार वल्लभभाई पटेल।
- सचिव: वी.पी. मेनन।
- विलय की शर्तें: रियासती विभाग ने यह घोषणा की थी कि केवल वे ही रियासतें अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक और वार्षिक आय 1 करोड़ रुपये से अधिक हो। राजस्थान में केवल 4 रियासतें (जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और मेवाड़) ही इन शर्तों को पूरा करती थीं। शेष रियासतों का विलय अनिवार्य था।

2. प्रथम चरण: मत्स्य संघ (18 मार्च, 1948)

एकीकरण का प्रारंभ अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतों के विलय से हुआ।

- नामकरण: के.एम. मुंशी के सुझाव पर इसका नाम 'मत्स्य संघ' रखा गया।
- शामिल रियासतें: अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली (ट्रिक: ABCD) + नीमराणा ठिकाना।
- राजधानी: अलवर।
- राजप्रमुख: उदयभान सिंह (धौलपुर महाराजा)।
- प्रधानमंत्री: शोभाराम कुमावत (अलवर)।
- उद्घाटन: 18 मार्च, 1948 को एन.वी. गाडगिल (नरहरि विष्णु गाडगिल) द्वारा लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर) में।

3. द्वितीय चरण: पूर्व राजस्थान / राजस्थान संघ (25 मार्च, 1948)

दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की 9 छोटी रियासतों और 1 ठिकाने का विलय किया गया।

- शामिल रियासतें: बाँसवाड़ा, बूंदी, झुंजरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा और टोंक (9 रियासतें) + कुशलगढ़ ठिकाना।
- राजधानी: कोटा।
- राजप्रमुख: भीमसिंह (कोटा महाराव)।
- प्रधानमंत्री: गोकुल लाल असावा (शाहपुरा)।
- उद्घाटन: एन.वी. गाडगिल द्वारा।
- विशेष कथन: विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय बाँसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह ने कहा था— "मैं अपने डेथ वारंट (Death Warrant) पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।"

4. तृतीय चरण: संयुक्त राजस्थान (18 अप्रैल, 1948)

जब मेवाड़ (उदयपुर) ने एकीकरण में शामिल होने का निर्णय लिया, तो राजस्थान संघ का स्वरूप बदल गया।

- विलय: पूर्व राजस्थान (द्वितीय चरण) + उदयपुर (मेवाड़)।
- राजधानी: उदयपुर।
- राजप्रमुख: भूपाल सिंह (मेवाड़ महाराणा)।
- प्रधानमंत्री: माणिक्य लाल वर्मा।
- उद्घाटन: जवाहरलाल नेहरू द्वारा उदयपुर में।
- शर्तें: महाराणा भूपाल सिंह ने 20 लाख रुपये प्रिवी पर्स और वंशानुगत राजप्रमुख पद की मांग रखी थी।

5. चतुर्थ चरण: वृहद् राजस्थान (30 मार्च, 1949)

यह राजस्थान के एकीकरण का सबसे महत्वपूर्ण चरण था, जिसमें चार बड़ी रियासतों का विलय हुआ।

- **विलय:** संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) + **जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर** (ट्रिक: JBBJ)।
- **महत्व:** इसी दिन राजस्थान का अधिकांश हिस्सा एकीकृत हुआ, इसीलिए **30 मार्च को 'राजस्थान दिवस'** मनाया जाता है।
- **राजधानी:** **जयपुर** (पी. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर)।
- **महाराजप्रमुख:** **भूपाल सिंह** (उदयपुर)। यह पद विशेष रूप से उनके लिए बनाया गया।
- **राजप्रमुख:** **सवाई मानसिंह द्वितीय** (जयपुर)।
- **प्रधानमंत्री (मुख्यमंत्री):** **हीरालाल शास्त्री**।
- **उद्घाटन:** **सरदार वल्लभभाई पटेल** द्वारा जयपुर में।

6. बड़ी रियासतों का विलय और पटेल की भूमिका

चतुर्थ चरण का एकीकरण सरदार पटेल की सबसे बड़ी कूटनीतिक जीत थी। जोधपुर के महाराजा **हनुवंत सिंह** पाकिस्तान में मिलने की योजना बना रहे थे, जबकि बीकानेर के महाराजा **शार्दूल सिंह** ने सबसे पहले 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर कर राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया था। पटेल ने जानते थे कि इन चार बड़ी रियासतों के बिना राजस्थान का निर्माण सामरिक और भौगोलिक दृष्टि से अधूरा है। जयपुर को राजधानी बनाना और उदयपुर के महाराजा को 'महाराजप्रमुख' का सम्मान देना क्षेत्रीय विवादों को सुलझाने की एक सोची-समझी रणनीति थी।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** पी. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर ही अन्य विभागों का वितरण हुआ— **न्याय विभाग (जोधपुर), शिक्षा विभाग (बीकानेर), खनिज एवं कस्टम विभाग (उदयपुर), कृषि विभाग (भरतपुर) और वन एवं सहकारी विभाग (कोटा)**।
- **नोट:** मत्स्य संघ को राजस्थान में शामिल करने का निर्णय बाद में (पाँचवें चरण में) हुआ, चौथे चरण तक यह पृथक इकाई था।
- कुछ पुस्तकों में मत्स्य संघ का उद्घाटन 17 मार्च दिया गया है, परंतु सरकारी दस्तावेजों और **स्तर-1 (हिंदी ग्रंथ अकादमी)** के अनुसार **18 मार्च, 1948** ही आधिकारिक तिथि है।

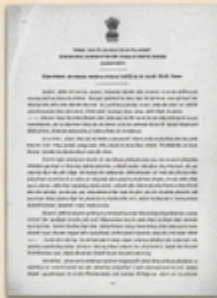
8. एकीकरण: प्रथम से चतुर्थ चरण (त्वरित संदर्भ तालिका)

चरण	नाम	तिथि	राजधानी	राजप्रमुख	प्रधानमंत्री
I	मत्स्य संघ	18 मार्च 1948	अलवर	उदयभान सिंह	शोभाराम कुमावत
II	पूर्व राजस्थान	25 मार्च 1948	कोटा	भीमसिंह	गोकुल लाल असावा
III	संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल 1948	उदयपुर	भूपाल सिंह	माणिक्य लाल वर्मा
IV	वृहद् राजस्थान	30 मार्च 1949	जयपुर	मानसिंह द्वितीय	हीरालाल शास्त्री

अध्याय 24: राजस्थान का एकीकरण: प्रथम से चतुर्थ चरण (मत्स्य संघ से वृहद् राजस्थान) - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र

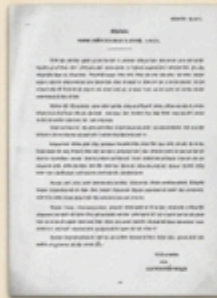
मुख्य सूत्रधार: सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन (रियासती विभाग, 5 जुलाई 1947)।

प्रथम चरण: मत्स्य संघ (18 मार्च, 1948) - राजधानी: अलवर।



उद्घाटन: एन.वी. गाडगिल द्वारा लोहागढ़ दुर्ग में।
राजप्रमुख: उदयभान सिंह, प्रधानमंत्री: शोभाराम कुमावत।

द्वितीय चरण: पूर्व राजस्थान (25 मार्च, 1948) - राजधानी: कोटा।



राजप्रमुख: भीमसिंह (कोटा)।
प्रधानमंत्री: गोकुल लाल असावा (शाहपुरा)।

तृतीय चरण: संयुक्त राजस्थान (18 अप्रैल, 1948) - राजधानी: उदयपुर।



उद्घाटन: जवाहरलाल नेहरू द्वारा।
राजप्रमुख: भूपाल सिंह (मेवाड़), प्रधानमंत्री: माणिक्य लाल वर्मा।

चतुर्थ चरण: वृहद् राजस्थान (30 मार्च, 1949) - राजधानी: जयपुर ('राजस्थान दिवस')।



उद्घाटन: सरदार पटेल द्वारा।
महाराजप्रमुख: भूपाल सिंह, राजप्रमुख: मानसिंह II, प्रधानमंत्री: हीरालाल शाली।

अध्याय 25: राजस्थान का एकीकरण: पंचम से सप्तम चरण (एकीकरण की पूर्णता)

1. पंचम चरण: संयुक्त वृहद् राजस्थान (15 मई, 1949)

चतुर्थ चरण तक 'मत्स्य संघ' (अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली) एक पृथक इकाई के रूप में कार्य कर रहा था। इसे वृहद् राजस्थान में मिलाने के लिए जनमत और राजनैतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी।

- **शंकरराव देव समिति:** धौलपुर और भरतपुर की रियासतें भाषाई समानता के आधार पर उत्तर प्रदेश में मिलना चाहती थीं। इस विवाद को सुलझाने के लिए भारत सरकार ने **डॉ. शंकरराव देव** की अध्यक्षता में एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया।
- **सिफारिश:** समिति ने जनता की राय जानने के बाद सिफारिश की कि मत्स्य संघ को राजस्थान में ही मिलाया जाना चाहिए।
- **विलय:** वृहद् राजस्थान (चतुर्थ चरण) + मत्स्य संघ।
- **प्रधानमंत्री:** इस चरण में प्रधानमंत्री का पद समाप्त कर **मुख्यमंत्री** (हीरालाल शास्त्री) का पद प्रभावी हुआ।
- **राजप्रमुख:** सवाई मानसिंह द्वितीय।

2. षष्ठ चरण: राजस्थान (26 जनवरी, 1950)

भारतीय संविधान के लागू होने के दिन राजस्थान को भारत के 'B' श्रेणी (भाग-ख) राज्य के रूप में मान्यता मिली।

- **सिरोही का विलय और विवाद:** सिरोही रियासत के विलय को लेकर राजस्थान और बम्बई प्रांत (गुजरात) के बीच गहरा विवाद था। सरदार पटेल सिरोही के **आबू और देलवाड़ा** तहसील को बम्बई में मिलाना चाहते थे, जबकि राजस्थान के नेता गोकुलभाई भट्ट के मूल निवास (हाथल गाँव) के कारण पूरे सिरोही को राजस्थान में चाहते थे।
- **समाधान:** एक विवादास्पद निर्णय के तहत आबू और देलवाड़ा को छोड़कर शेष सिरोही को राजस्थान में मिला दिया गया।
- **प्रतिक्रिया:** राजस्थान के नेताओं ने इसका कड़ा विरोध किया। हीरालाल शास्त्री ने सरदार पटेल को पत्र लिखकर कहा था कि—
"राजस्थान का अर्थ गोकुलभाई (भट्ट) के बिना हम नहीं समझ सकते।"

3. सप्तम चरण: पुनर्गठित राजस्थान (1 नवंबर, 1956)

यह एकीकरण का अंतिम चरण था, जिसमें राज्य पुनर्गठन आयोग (State Reorganization Commission) की सिफारिशों को लागू किया गया।

- **फजल अली आयोग (राज्य पुनर्गठन आयोग):** इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर सिरोही के शेष हिस्से (आबू-देलवाड़ा) और केंद्र शासित प्रदेश अजमेर-मेरवाड़ा के भाग्य का फैसला हुआ।
- **अंतिम परिवर्तन:**
 1. **अजमेर-मेरवाड़ा:** इसे राजस्थान में मिला दिया गया। (इससे पूर्व यहाँ 'हरिभाऊ उपाध्याय' के नेतृत्व में 'धारा सभा' नामक पृथक विधानसभा थी)।
 2. **आबू-देलवाड़ा:** बम्बई प्रांत से वापस लेकर इन्हें राजस्थान (सिरोही जिले) में शामिल किया गया।
 3. **सुनेल टप्पा:** मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील का 'सुनेल टप्पा' क्षेत्र राजस्थान के झालावाड़ में मिलाया गया।
 4. **सिरोज क्षेत्र:** राजस्थान के कोटा जिले का 'सिरोज' क्षेत्र मध्य प्रदेश को सौंप दिया गया।
- **प्रशासनिक परिवर्तन: 1 नवंबर, 1956** को 'राजप्रमुख' का पद समाप्त कर दिया गया और '**राज्यपाल**' (Governor) का पद सृजित हुआ। राजस्थान के **प्रथम राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिंह** बने।

4. एकीकरण की पूर्णता और लोकतांत्रिक स्थिरता

राजस्थान का एकीकरण विश्व इतिहास की उन दुर्लभ घटनाओं में से है जहाँ 19 रियासतों ने बिना किसी रक्तपात के एक लोकतंत्रीय इकाई में विलय स्वीकार किया। जहाँ शुरुआती चरणों में 'मत्स्य संघ' और 'मेवाड़' का मुद्दा केंद्र में था, वहीं अंतिम चरणों में 'अजमेर' और 'आबू' सामरिक और भावनात्मक मुद्दे बन गए थे। **शंकरराव देव समिति** ने 'जनमत' को प्राथमिकता दी, तो **फजल अली आयोग** ने 'प्रशासनिक और भौगोलिक तर्क' को। 1 नवंबर 1956 को जो मानचित्र उभरा, वह न केवल भौगोलिक था, बल्कि राजस्थान के सदियों पुराने गौरव और आधुनिक आकांक्षाओं का संगम था।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** अजमेर-मेरवाड़ा के राजस्थान में विलय के समय वहां के मुख्यमंत्री **हरिभाऊ उपाध्याय** थे। उनकी विधानसभा 'धारा सभा' में 30 सदस्य थे।
- **नोट:** राजस्थान के एकीकरण में कुल **8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन** का समय लगा।
- आबू-देल्वाड़ा के मुद्दे पर सरदार पटेल की आलोचना की जाती है, लेकिन प्रशासनिक दृष्टिकोण से वे इसे बम्बई बंदरगाह के निकट होने के कारण वहां मिलाना चाहते थे, जिसे अंततः जनभावना के आगे बदला गया।

6. एकीकरण: पंचम से सप्तम चरण (त्वरित संदर्भ तालिका)

चरण	नाम	तिथि	मुख्य परिवर्तन	प्रमुख व्यक्तित्व
V	संयुक्त वृहद् राजस्थान	15 मई 1949	मत्स्य संघ का विलय	डॉ. शंकरराव देव
VI	राजस्थान (भाग-B)	26 जनवरी 1950	सिरोही का विलय (आबू छोड़कर)	हीरालाल शास्त्री
VII	पुनर्गठित राजस्थान	1 नवंबर 1956	अजमेर, आबू, सुनेल टप्पा का विलय	गुरुमुख निहाल सिंह

wincompete

अध्याय 25: राजस्थान का एकीकरण: पंचम से सप्तम चरण (एकीकरण की पूर्णता) - ऐतिहासिक दस्तावेज व छायाचित्र

पूर्णता का क्षण: लोकतांत्रिक स्थिरता की ओर एकीकरण (1 नवंबर, 1956)।

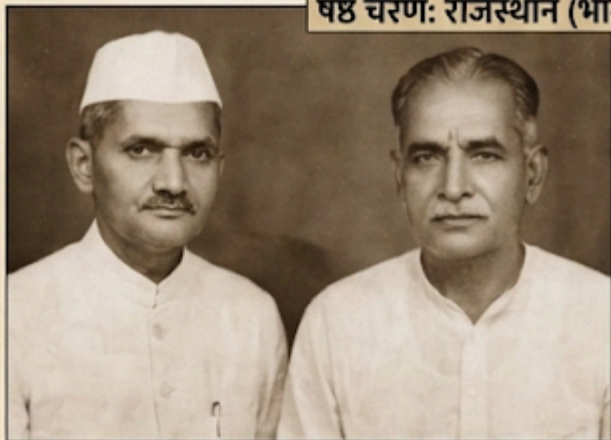


पंचम चरण: संयुक्त वृहद राजस्थान (15 मई, 1949)।



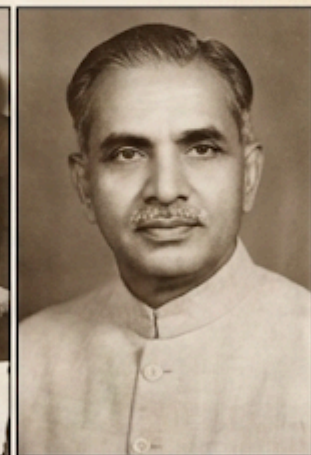
मत्स्य संघ का विलय। शंकरराव देव समिति: 'जनमत' को प्राथमिकता।

षष्ठ चरण: राजस्थान (भाग-B) (26 जनवरी, 1950)।



षष्ठ चरण: राजस्थान (भाग-B) (26 जनवरी, 1950)।

सिरोही विलय विवाद: 'राजस्थान का अर्थ गोकुलभाई के बिना हम नहीं समझ सकते'।



सप्तम चरण: पुनर्गठित राजस्थान (1 नवंबर, 1956)।

अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-देलवाड़ा विलय। राजप्रमुख समाप्त, प्रथम राज्यपाल: गुरुमुख निहाल सिंह।

स्रोत: डॉ. गोपीनाथ बार्मा, हुकुम चंद्र जैन और राजस्थान फ़्रीली ग्रंथ अकादमी के वार्षिक आंकड़े।

संदर्भ सूची:

1. राजस्थान के किसान आंदोलन - डॉ. बृज किशोर शर्मा (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
2. आधुनिक राजस्थान का इतिहास - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
3. राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन - बी.एल. पानगड़िया।
4. आधुनिक राजस्थान का इतिहास - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
5. राजस्थान की स्वतंत्रता सेनानी महिलाएँ - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. राजस्थान अध्ययन - कक्षा 10 (RBSE)।
7. राजस्थानी साहित्य का इतिहास - डॉ. हीरालाल माहेश्वरी (साहित्य अकादमी)।
8. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. आधुनिक राजस्थान का इतिहास - हुकुम चंद जैन।
10. राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी - राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड।
11. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी: विशेष अंक - 1857 की क्रांति।
12. राजस्थान अध्ययन - कक्षा 9 (RBSE)।
13. राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति एवं परंपरा - हुकुम चंद जैन (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी)।

बिंदु 1 से 5 तक की समस्त आधिकारिक अध्ययन सामग्री :

1. सामाजिक जागृति: दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज, शिक्षा और प्रेस की भूमिका (अध्याय 1-5)।
2. 1857 की क्रांति: नसीराबाद, नीमच, आऊवा और कोटा का विद्रोह (अध्याय 6-10)।
3. राजनीतिक जनजागरण: संस्थाएं, समाचार पत्र और साहित्य (अध्याय 11-15)।
4. किसान एवं जनजाति आंदोलन: बिजोलिया, बेगूँ, अलवर, शेखावाटी, भगत और एकी आंदोलन (अध्याय 16-20)।
5. प्रजामंडल एवं एकीकरण: सभी रियासती आंदोलन और एकीकरण के सातों चरण (अध्याय 21-25)।

wincompete